प्रकाशकका निवेदन

गांधी-साहित्यके पाठक श्री मनुबहन गांधीको अुनकी पहले प्रकाशित हो चुकी नीचेकी पुस्तकों द्वारा जानते हैं

१ बापू — मेरी मां (हिन्दी गुजराती मराठी और अंग्रेजीमें)

२ कलकत्तेका चमत्कार (हिन्दी गुजरातीमें)

श्री मनुबहन गांधी श्री जयसुखलाल गांधीकी पुत्री हैं। श्री जयसुखलाल गांधी गांधीजीके काकाके लड़के हैं। कुछ बरस पहले वे कराचीमें अपना धंधा करते थे। बादमें वे सौराष्ट्रमें आकर रहे और आजकल महुवामें रहते हैं। श्री मनुबहन आजकल अुन्हींके पास रहती हैं। वे कराचीसे १९४२ में गांधीजीके पास गयीं तबसे लेकर १९४५ में अपने पिताजीके पास महुवा रहने आयीं तब तककी डायरी अिस पुस्तकमें दी गयी है।

अूपर बताओ हुओ पुस्तकोंसे पाठक जानते होंगे कि श्री मनुबहनने गांधीजीके साथ अपने निवास-कालमें जो डायरी रखी थी अुस परसे ये दो पुस्तकें तैयार की गयी हैं। यह डायरी वे गांधीजीके साथ रहते हुओ रोज लिखती थीं और गांधीजीको बता देती थीं। अिससे यह माना जा सकता है कि अुनमें दी गयी वस्तु स्वयं गांधीजीकी लिखी हुओ तो नहीं है लेकिन अुसे वे आद्योपान्त देख जरूर गये हैं। 'कलकत्तेका चमत्कार' नामक पुस्तकमें अिस बात पर प्रकाश डाला गया है अिसलिये यहां अुस विषयमें ज्यादा कहना जरूरी नहीं है।

यह नयी पुस्तक १९४२ से १९४५ के बीचके अरसेसे संबंध रखती है। और, जैसा कि अिसका नाम सूचित करता है अुन वर्षोंमें

लेखिकाको बा और बापूके साथ रहनेका सौभाग्य मिला। अुस बीच अुन्हें जो तालीम मिली अुसका चित्र अिसमें पेश किया गया है। यह काम अुन्होंने अपनी डायरीके तारीखवार अुद्धरणोंको शृंखलाबद्ध करके किया है। अिसलिअे अिसमें लेखिकाकी कुछ वर्षोंकी आत्मकथाके साथ गांधीजी-के अुन वर्षोंके कार्योंका कुछ अितिहास भी मिलता है। डॉ० सुशीला नय्यरने आगाखां महलमें गांधीजीकी नजरबंदीके अिन वर्षोंका अितिहास अपनी आकर्षक शैलीमें बापूकी कारावास-कहानी नामक पुस्तकमें दिया है। प्रस्तुत पुस्तक थोड़े भिन्न पहलूसे अुसमें अुल्लेखनीय वृद्धि करती है। लेकिन अिसका खास पहलू है गांधीजी द्वारा लेखिकाको दी हुअी तालीम। अिसमें दिलचस्पी रखनेवाले पाठकोंको गांधीजी अेक शिक्षकके रूपमें काम करते दिखाअी देंगे। लेकिन वे किसी स्कूलके शिक्षककी तरह काम नहीं करते बल्कि अपना घर चलानेवाले अेक पिता या पालककी तरह काम करते हैं। और अुस कामके जरिये बालकों और दूसरे सब लोगोंको शिक्षा देते हुअे और खुद सीखते हुअे दिखाअी देते हैं। बालकको स्कूलमें ही नहीं — घरमें माता-पिता और साथमें रहनेवाले भाअी-बंधुओंके सम्पर्कसे तथा अुनके कामोंमें यथाशक्ति सहकार या मदद करनेसे भी शिक्षा और तालीम मिलती है। और जिस तरह मिलनेवाला शिक्षण असरकारक होता है। यह शिक्षण वैसा ही होगा जैसा बालकका घर और अुसमें रहनेवाले मनुष्य होंगे। वे सब जिस तरह कामकाज करते होंगे वैसा ही बालकको सहज शिक्षण मिलेगा। अुससे बालकको अपने-आप ही तालीम और संस्कार मिलेंगे। अुसमें जितना जाग्रत भाव होगा अुतना ही यह शिक्षण अच्छा होगा। और जाग्रत भावकी जितनी कमी होगी अुतनी अुसमें विचार शुद्धिकी कमी रहेगी। फिर भी अुसका स्वाभाविक प्रभाव तो बालक पर पड़ेगा ही। जिस तरह गांधीजीकी शिक्षण-पद्धतिमें व्यवस्थित और विचार-शुद्ध गृहजीवनका मुख्य स्थान है। जिसे स्कूलका शिक्षण कहा जाता है वह अुसका अेक अंग बनता है। अिसलिअे पाठक देखेंगे कि

गांधीजीकी नजरकैदके समयके कुटुम्बीजनोंमें से ही कुछ लोग लेखिकाको पढ़ानेका समय निकालते हैं और अुसका नियमित टाअिम-टेबल भी होता है। गांधीजीने शिक्षाका अर्थ चारित्र्यकी शिक्षा किया है। अिस अर्थका शिक्षण बालकको देना हो तो किस तरह काम करना चाहिये अिसका नमूना अिस पुस्तकमें देखनेको मिलता है। और यही अिसका मुख्य रस है। अिसलिअे यह पुस्तक छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष सबको रसप्रद मालूम होगी।

अिसमें बा और बापूका भी अेक विरल चित्र पाठकोंको मिलता है। अुसका वर्णन करना सम्भव नहीं है। यह अैसा है कि गृहस्थ जीवनका यह दृष्टान्त हमारे देशके लोग हमेशा याद रखेंगे और अुससे हमेशा प्रेरणा पाते रहेंगे।

भी मनुबहनकी अेक और पुस्तक अेकलो जाने रे भी हम यथासंभव जल्दी ही हिन्दी पाठकोंके सामने रखनेकी आशा करते हैं। अिसमें गांधीजीकी नोआखालीकी धर्मयात्रासे सम्बन्ध रखनेवाली डायरी दी गयी है।

२८-११-५४

बा और बापूकी शीतल छायामें

तीक्ष्ण दृष्टि मेरे फ्रॉक पर पड़ी। तुरंत ही मुझसे कहने लगीं — बेटी! जरा फ्रॉक तो दिखा। ये कपड़े नहीं पहनने चाहिये। मालूम होता है तुझे कपड़े धोना नहीं आता। कराचीमें तो नौकर धोते होंगे न? हम लोग जब तेरे बराबर थीं तब तो हमारी शादी हो चुकी थी। मा-बाप नौकर रखकर आजकलकी लड़कियोंको पंगु बना देते हैं। ला मैं सिखा दूं जिसमें बहुत साबुनका काम नहीं। हाथसे खूब मसलना चाहिये। तू रोज कपड़े धोकर मुझे बताया कर। दो तीन दिनमें सब ठीक हो जायगा। ये सब बातें यहां अधिक सीखनी होंगी। पढ़ना भी आना चाहिये और प्रत्येक काम भी आना चाहिये।

बापूजी सुबह बाके पास छोड़ गये थे तबसे मैं उनके पास गयी नहीं थी। शामको खानेकी घंटीके समय (पांच बजे) बापूजीको खानेके लिये बाने जबरदस्ती मुझे भेजा। (बापूजी दोनों समय सामूहिक भोजनालयमें खाने जाते थे।)

बापूजीके पास गयी तो वे बोले — अरे, यह लड़कीसे एकदम स्त्री कब बन गयी? आज यह साड़ी क्यों पहनी है? यह तो भारी मालूम होती है। खुद अपनको सम्हाल सके इतनी भी शक्ति तुझमें नहीं है फिर ऊपरसे इतना भार क्यों लाद रही है? क्या तेरे पास फ्रॉक नहीं है? न हो तो सिलवा दूं।

मैंने कहा — बापूजी, मोटीबाको फ्रॉक पसन्द नहीं है। उन्होंने मुझे साड़ी पहननेके लिये कहा और अपनी साड़ी दी। मैंने सुबहसे ही साड़ी पहनी है। इस तरह बातें करते करते हम बरामदे तक पहुंचे। बा बाहर आयीं तो बापूजीने बात छेड़ी — इस बेचारीको साड़ी किस लिये पहनायी है? भले ही यह १४ वर्षकी हो परन्तु मैं तो इसे ११–१२ वर्षकी ही मानता हूं। इसे आजादीसे दौड़ने खेलनेका मौका मिलना चाहिये। यह अपनी साड़ी भी भी नहीं सम्हली। मुझे पता होता तो सुबह ही निकलवा देता।

बा बापूजी पर नाराज होकर बोलीं — मैं फ्रॉक तो हरगिज नहीं पहनने दूंगी। लड़कियोंके बारेमें मैं अधिक जानती हूं। साड़ी आजके ही लिये है, कलसे धोती दे दूंगी। लड़कीको मेरे पास रखा

है, तो मुझे जैसा पसन्द होगा वही पहनाअूँगी। हाँ, अिसकी अिच्छा फ्रॉक ही पहननेकी हो तो अिस पर मेरी जरा भी जबरदस्ती नहीं है।" अब मैं धर्मसंकटमें पड़ गयी। किसकी मानूँ? बाकी या बापूकी! अन्तमें मैंने कहा: मेरे पास जो भी फ्रॉक हैं अुन्हें पहन डालूँ, बादमें नये नहीं सिलवाअूँगी। और अिस बातको दोनोंने खुशीसे मान लिया। बाने अिस पर जरा भी आपत्ति नहीं की।

अिस प्रकार २४ मअी १९४२ के दिनसे मुझे अिन दोनों महान आत्माओंकी शीतल छायामें स्थायी रूपसे रहनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह दिवस जीवनमें सदाके लिये अंकित हो गया। और आज मानो यह स्वप्नवत् बन गया है। जब यह विचार करती हूँ तो लगता है कि क्या वे सब सपने थे या जीती-जागती महान आत्मायें थीं?

बा मेरी पढ़ाओी, खान-पान वगैरा हरअेक बातका ध्यान रखती थीं। और मेरे दिन भी बाकी सेवा करनेमें, खेलने-पढ़नेमें और आश्रमजीवन जीनेके आनंदमें सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे।

२

पहला पाठ

मेरे आनेके बाद मेरे साथ रहनेवाली बहन बीमार हो गयी। अुसे सख्त बुखार आने लगा। अिसलिये बाकी सारी सेवा मेरे हाथमें आ गयी। बाने अुस बहनकी खाट आग्रहपूर्वक अपने ही कमरेमें रखवायी। अुस बहनका बुखार कम बढ़कर जितना हो जाता है, अुसके खाने पीने, स्पंज, अनिमा, मिट्टीकी पट्टियाँ वगैरा तमाम सेवाशुश्रूषाका ध्यान बा बड़े प्रेमसे रखतीं। अुस बहनको चरखेकी आवाज अच्छी नहीं लगती थी, अिसलिये बा पासवाली छोटीसी कोठरीमें कातती थीं। बीमारीमें दूसरेकी जरूरतोंकी जितनी देखभाल अेक माँकी तरह स्त्री ही किया कर सकती है।

जैसा मैंने पहले लिखा है, बाने मुझे पढ़ानेकी व्यवस्था भणसालीभाओीको सौंप दी। अुनके पास मेरा अपना गुजराती बीज-गणित

भूमिति संस्कृत इतिहास भूगोल वगैराका अध्ययन नियमित रूपसे चलता था। हेडमास्टर साहबने सुझाया कि अभी अभी इसकी परीक्षा भी लेते रहिये। इसलिये अंग्रेजीकी पांचवीं कक्षाकी पढ़ाई करनेवाली हम दो तीन लड़कियोंकी परीक्षा लेनेका मगनलालभाईने निर्णय किया। बाको तो इसकी जानकारी थी ही। परन्तु जिस दिन परीक्षा थी उसी दिन सेवाग्राममें कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक होनेके कारण मेहमान आये हुए थे। और बापूकी रोटी बनानी थी। बहनें कुछ समय थोड़ी थीं। मेरी परीक्षा शामके छ बजे तय थी। इसलिये मैं चार बजे दूसरी बहनोंके साथ रोटियां बनानेके लिये भोजनालयमें गयी। अभी पांच सात रोटियां ही बनी थीं कि बा आयीं। मेरे हाथमें बेलन देख लिया और मुझ तीखा झुकाकर देख कहा — क्या तेरे बजाय मुझे परीक्षामें बिठायेगी? बनारसी पढ़नेमें खूब गयी आप पढ़ती है जो यहां आकर बैठ गयी है। बादमें मगनलाल नाराज होंगे तब बहाना बनाये जायेगी कि मैं तो रोटी बनाने गयी थी। तुझे मुझसे पूछना चाहिये था कि रोटी बनाने जाऊं? मैं शरमके मारे स्तब्ध रह गयी। मैंने कहा — परंतु साढ़े चार बज गये थे और जितने अधिक मेहमानोंके होनेके कारण मुझे बुलाया गया इसलिये मैं आ गयी। मैंने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है। आप यहां रोटी बनायेंगी तो थक जायेंगी। मैं थोड़ी सी बेलकर अभी चली जाऊंगी।

जितना-सा बड़ी हिम्मत करके मैं बोली तो सही परंतु बाका जवाब सुनकर उल्टी पछतायी।

हां, मैं तुम लड़के-लड़कियोंको — पढ़ाईके चोरोंको — खूब जानती हूं। जो हो वह न कि जिस तरह हो पढ़नेसे बच निकलना चाहती है। जा, पढ़ाने और चुपकी पढ़ने बैठ जा। अभी मगनलालभाईसे कह देती हूं कि खूब कठिन सवाल पूछना। और फिर यदि थोड़े नम्बर लायी तो तू मेरी जानती है।

मैं कुछ बोले बिना चुपचाप चली आयी। बा इतनी जिम्मेदारी मेरी पढ़ाईकी संभाल अपने शरीरको हानि पहुंचाकर भी रखती थीं।

मेरी आँखें बिगड़ गयी थीं। चश्मा था परंतु मैं लगाती न थी। बाको मालूम नहीं था कि मेरी आँखें बिगड़ी हुयी हैं।

बाके कमरेमें अेक ताक है। अुसमें कुंकुमका ॐ बनाया हुआ है। आज भी सेवाग्राममें वह मौजूद है। वहां बा सुबह शाम घीका दिया जलाती, माला फेरती, गीता पढ़ती और अेक दो फूल चढ़ाती। वह ॐ मिटने लगा तो बाने मुझे फिरसे बना देनेको कहा। मैंने ॐ बनाया परंतु जरा नीचेकी पांख ठीक नहीं बनी। अुसका मुझे तो कोअी खास पता नहीं चला। परंतु बाकी कला-पारखी आँखोंने तुरंत देख लिया। अुन्होंने मुझसे कहा — मनु, दूरसे देख तो ॐ की नीचेकी पांख जरा टेढ़ी लगती है। मैंने दूरसे देखनेका प्रयत्न किया परंतु दिखाअी दे तब न? कुछ समय कुछ सुधार देना चाहिये अिसलिअे मैं अितना ही बोली कि अभी ठीक कर देती हूँ। बा बाहर बरामदेमें चली गयीं। अिस बीच मैंने चश्मा लगाकर देख लिया। बाके कमरेमें अेक जाली है। बाने अुसमेंसे मुझे चश्मा लगाते देख लिया। अुसी क्षण अन्दर आयीं — क्यों तुझे भी चश्मा लगता है? तो लगाती क्यों नहीं? आँखें जानबूझकर बिगाड़नी हैं क्या? आश्रममें रामदासकी सुमी जैसा हाल होगा। आजसे चश्मा नहीं लगाया तो मैं अपना कुछ भी काम तुझे नहीं करने दूंगी। आज रातको बापूजीसे कह दूंगी। और तुझे भी दोपहरको बरनीमें तीन संतरोंका रस निकालकर पी लेना है। सुमीको अिससे बड़ा लाभ हुआ था। (सुमी अर्थात् सुमित्रा — रामदास काकाकी बड़ी लड़की।)

मुझे कल्पना भी नहीं थी कि बा अिस तरह मेरी चोरी पकड़ लेंगी। परन्तु अुस दिन बाने मुझे चश्मा न लगवा दिया होता तो शायद आज मैं बिलकुल अंधी हो जाती। अथवा आँखें अत्यंत कमजोर तो हो ही जातीं।

मेरी अेक कुटेव थी। खाने बैठती तो कभी पानीका लोटा न भरती थी। अिसका कारण यह भी था कि हम चार पांच लड़कियां साथ खाने बैठतीं और बर्तन मलनेमें स्पर्धा होती कि कौन जल्दी मल लेती है। मुझे बर्तन मलनेका अभ्यास कम था अिसलिअे मैं कमसे कम बर्तनोंका

लेख भी बा पहलेसे नहीं पढ़ती थीं अब वे प्रति सप्ताह छपते अुसके बाद ही नियमित पढ़ती थीं।) पढ़कर कहने लगीं "अभी तक बापूजीने अितनी लड़ाअी नहीं छेड़ी थी। अिसलिअे अब या तो सरकार यह अखबार बन्द कर देगी या कोअी अुथल-पुथल जरूर होगी। अिन दिनों सुरेन्द्र बहन (दादाभाअी नौरोजीकी पोती) भी वहीं थीं। वे रोज बाके कमरेमें बहनोंकी सभा करतीं और अक्सर यह बताती थीं कि यदि बापूजी लड़ाअी छेड़ें तो बहनोंको क्या करना चाहिये।

अन्तमें अगस्तका महीना आया। बापूजीको कांग्रेस महासमितिकी बैठकके लिअे २ तारीखको बम्बअी जाना था। बाका जाना तय नहीं हो रहा था क्योंकि अुनका स्वास्थ्य कमजोर था और बापूजी मानते थे कि सरकार अिस बार अुन्हें हरगिज नहीं पकड़ेगी। बापूजीने बाको समझाया "तुम यहीं रहो। सरकार तुझे नहीं पकड़ेगी। सरकार अितनी पागल थोड़े ही है?"

परन्तु बा अिस तरह माननेवाली नहीं थीं। अुन्होंने बापूजीको अुत्तर दिया "मुझे क्यों नहीं ले जाते? मैं आपकी चालाकी जानती हूँ। अिस बार क्या सरकार आपको पकड़े बिना रहेगी? आप कितना कड़ा लिखते हैं? मैं जरूर चलूँगी। जहाँ आप वहाँ मैं।"

बापू अेक शब्द भी नहीं बोले। "तो फिर हो जाओ तैयार।" और हुआ भी ऐसा ही। बापूजीने स्वयं प्रस्ताव रखे भाषण दिये। फिर भी अुनका अनुमान गलत निकला। और केवल समाचारपत्रों परसे किया हुआ बाका अनुमान बिलकुल सही निकला और सबको जेल जाना पड़ा।

बाने खूब तैयारी करनेको कहा। मानो बाको सारे भविष्यका पता ही अिस तरह वे खुद प्रत्येक छोटी-बड़ी चीज याद करके बनाती थीं और कहतीं या अब सेवाग्राम कहाँ वापस आना है? मैंने पूछा "मोतीबा मैं भी आअू?" वे बोलीं "बेटी तुम आ जाओ तो मुझे अच्छा लगेगा परन्तु तेरे लिअे बापूजीसे पूछो तो मेरा जाना भी तय

जायेगा। फिर वहाँ प्रभा है जिससे मुझे कोअी दिक्कत नहीं होगी।"
(प्रभावतीबहन श्री जयप्रकाशजीकी पत्नी)।

मैंने बाकी पेटी जमाओ। पेटीमें साड़ियाँ रखते रखते वे बोलीं "यह साड़ी मुझे राजकुमारीने खास कर दी है जिसलिये जिसे जरूर रख। वह बेचारी बहुत खुश होगी।" बामें दूसरोंको खुश करनेके जैसे महान् गुण थे। अेक खास किनारकी साड़ी बापूके सूतकी थी वह मेरे हाथमें रखकर गद्गद कंठसे बोलीं "बेटी शायद हम पकड़े जायें और आश्रम भी जब्त कर लिया जाय तो मेरी जिस साड़ीको संभाल कर रखना। जबसे यह साड़ी बुनकर आयी तबसे मैंने अपने मनमें निश्चय कर लिया है कि मरते समय बापूकी यही साड़ी ओढ़ूंगी। यही मेरी अेक अंतिम जिच्छा है। जिसे तू पूरी करना। यह बात तुझे ही कहती हूँ और किसीसे नहीं कही। तुझे जो कुछ ले जाना हो अपने ले जाय परन्तु जिस साड़ीकी रक्षाकी जिम्मेदारी तुझ पर है।"

हुआ भी यही। आश्रम जब्त तो नहीं हुआ परन्तु जब किशोरलालभाओ मशरूवालाको पकड़ने रातमें पुलिस आओ तब जब्तीकी पूरी शंका थी। परन्तु यह साड़ी ज्यों ही बा और बापू पकड़े गये मैंने बजाजवाड़ी वर्धामें भेज दी। और मेरे आगाखां महलमें आनेके बाद वह साड़ी वहाँ मंगवा ली। वहाँ अपने ही हाथों बाको ओढ़ाओ। अनकी जितनी-सी अंतिम जिच्छा मैं पूरी कर सकी यह मेरे पुण्यके बल तो नहीं परन्तु बड़े-बूढ़ोंके पुण्य और आशीर्वादके बल पर ही हुआ। आज जिसका मुझे अपार सन्तोष है। साड़ीकी बात परसे जान पड़ता है कि बाकी पतिभक्ति — बापू-भक्ति कितनी ऊँची कितनी भव्य थी!

९ तारीखको स्टेशन पर जाते जाते मुझे बार बार कओी बातें याद करायीं। घीका दीया नियमित जलाना। हम पकड़े जायें तो कराची चली जाना। शरीरकी अच्छी तरह संभाल रखना। मेरे कमरेमें अकेलापन लगे तो दुर्गाके यहाँ सोने जाना। मुझे अच्छी तरह शान्ति मिलती रहे जिसके लिये आश्रमके व्यवस्थापक श्री कृष्णचन्द्रको सब बातें समझायीं।

अिस बीच अेक बहनने बाके लिअे पपड़ा आमकी नमकीन बानगी बनाकर भेजी। बाको चना मूंग वगराकी बनी नमकीन चीजोंका शौक तो था। लेकिन अुन बहनको लिखवाया "तुम आश्रमके सब नियम जानती हो। फिर यह चीज क्यों भेजी? मुझे खानी हो तो यहां कौन मना करता है? परन्तु अिस प्रकार बाहरकी चीजें मैं खा ही कैसे सकती हूं? बापूके सामने भी कैसी चोर ठहरूंगी?"

बाने अुन पपड़ों के टुकड़े करवाकर अतिथि समय सबकी थालियोंमें रखवा दिये। अुसका अेक टुकड़ा भी नहीं चखा। अिस प्रकार बा बापूके सारे नियम बहुत ही समझ-बूझकर पालती थी। अुनके जीवनमें वे भले आगे-अनजान बापूके पीछे खिंचती रही हों परन्तु अुन नियमोंको समझम आनेके बाद तो अिस हद तक अुनका पालन करती थीं। चाहती तो अुन पपड़ों को अलग कमरेमें रखवाकर दूसरे दिन नाश्तेम खानेके लिअे ले जाती। परन्तु बा कभी पापका पोषण कर सकती थी? तब तो बा बा न बन सकी होतीं।

बा और बापूने आश्रमम बड़ गंभीर वातावरणम विदा ली। बादल खूब घिरे हुअे थे। राजनैतिक बादल तो थे ही साथ ही ये कुदरती बादल भी थे। दिन बड़ा नीरस लग रहा था। या तो पूरा सूर्यप्रकाश आनन्दमय होता है या बरसात ही अच्छी लगती है। परन्तु यह तो न बरसात थी न धूप। मुझे लगता है कि हमने जो शकुन देखा जाता है अुस पर मेरा विश्वास अिस घटनाके बाद अधिक बैठ गया। बाके मुंहसे यही शब्द निकल रहे थे "तब कहां आश्रमम आना है? मुझे नहीं लगता कि अब फिरसे मैं आश्रमको देखूंगी।"

और बाने सेवाग्राम आश्रम छोड़कर फिर कभी देखा ही नहीं। अुनकी आखिरी विदाकी आखिरी ही साबित हुअी।

४

गिरफ्तारी

बापूजी और बा जिस दिन गये उस दिन आश्रममें सूना-सूना लगने लगा। किसीका कहीं जी ही नहीं लगता था। किसीके लिये मानो कोई काम-धंधा ही नहीं रह गया था। दूसरे दिन मैंने बाका कमरा साफ किया। सब सामान पासकी कोठरीमें भरकर वहां ताला लगा दिया और कुंजी आश्रमके व्यवस्थापक चिमनलाल काकाको सौंप दी।

सबकी नजर बम्बईके समाचारों पर लगी हुई थी। मैंने आश्रममें आनेके बाद आश्रमके नियमानुसार अब तक पाखाना-सफाई नहीं की थी क्योंकि पूज्य बाकी सेवामें सवेरेका समय चला जाता था। परन्तु बा और बापूजीके चले जानेके बाद मुझे भी यह आनन्द लूटनेकी इच्छा हुई। पूज्य बापूजीके आश्रममें पाखाना-सफाई करना भी जीवनका एक अमूल्य आनन्द था और आज भी है। इस कामसे जीवनके निर्माणमें कितना अमूल्य लाभ होता है यह तो अनुभव करनेवालेको ही पता चलता है। मुझे मतलीसे बड़ी घिन होती थी। कभी किसीको कै करते देखती तो मुझे तो होते होती परन्तु मुझे तुरन्त कै हो जाती। मैंने यह घिन मिटानेके लिए ही जान-बूझकर पाखाना-सफाईकी मांग की और मेरी सारी घिन उसके बाद ही मिटी। मुझे लगता है कि मैं यदि पहले जितनी ही घिन करनेवाली होती तो बा और बापूजीके साथ टिक ही नहीं सकती थी। परन्तु एक सप्ताह पाखानेकी बाल्टियां उठानेमें मुझे बहुत लाभ हुआ। ८ अगस्त मेरी सफाईका अंतिम दिन था। सबको यह विश्वास था कि बा और बापूजी कल अवश्य आयेंगे। भिन्नभिन्न पाखाना-सफाईसे निपटकर मैंने बापूजीका कमरा साफ किया, बरामदेको लीप भी दिया और पूज्य बाकी सब चीजें ज्योंकी त्यों जमा दीं। परन्तु ईश्वरकी लीलाको कौन समझ सकता है?

९ तारीखको सुबह ८ ॥ बजे सब नेताओंके पकड़ लिये जानेके समाचार आये। हम सेवाग्रामवालोंको टेलीफोन द्वारा सब समाचार सीघ्र मिला करते थे।

यह खबर सेवाग्रामके आसपास वायुवेगसे सब जगह फैल गयी। आसपासके देहातके लोग आये। सब किशोरलाल काकाके यहां मिलजुले हुओ और सबने रोते दिलसे प्रार्थना की। बापूजीका प्यारा गीत 'वन्देमातरम्' गाया गया। सेवाग्रामके मनुष्य तो क्या पेड़ फल फूल भी मानो खिन्न होकर, बिना हिलेडुले खड़े रह गये थे। सूर्य भगवान भी शोक अनुभव करते हों जिस प्रकार बादलोंमें छिप गये थे। किशोरलाल काकाने बम्बओ टेलीफोन करनेकी बड़ी कोशिश की तब बड़ी मुश्किलसे लाअिन मिली। और अुसमें भी जितनी ही खबर मिली कि महादेव काका, श्रीमती सरोजिनी नायडू और मीराबहन बापूके साथ हैं।

और बा? बाने पुलिससे कहा, “बापूजीके साथ जाना हो तो आप बा सकती हैं।” परन्तु बा तो बहादुर थीं। अुन्हें सरकारकी अैसी मेहरबानी कहां बरदाश्त होती? अुन्होंने जिन्कार कर दिया। शामको बहनोंकी सभाका प्रबन्ध करवाया और अुसमें देनेका सन्देश तुरन्त तैयार कराया। वह सन्देश जिस प्रकार था

बहनोंको पूज्य कस्तूरबाका सन्देश

महात्माजी तो आपको बहुत कुछ कह चुके हैं। कल अुन्होंने सारी बंटे तक कांग्रेस महासमितिमें अपना हृदयके अनुसार प्रकट किये। अुससे अधिक और कुछ कहनेका हो ही क्या सकता है?

अब तो अुनके आदेशों पर अमल करना है। अब बहनोंको अपना तेज दिखाना है। सभी जातियोंकी बहनें मिलकर जिस लड़ाओको सुशोभित करें। सत्य और अहिंसाका मार्ग न छोड़ें।

बिड़ला हाअुस, बम्बओ
ता. ९-८-'४२

कस्तूरबा गांधी

अैसी थीं बा। वे कोअी पढ़ी-लिखी नहीं थीं फिर भी छोटा-सा और प्रभावोत्पादक सन्देश अुन्होंने लिखवाया।

परन्तु सरकारको क्या सूझी या वह बासे डर गयी कुछ भी हो लेकिन अितना तो सही है कि अुसने बाको अुस सभामें जानेका कष्ट नहीं दिया। सभामें जानेके बजाय अुन्हें सीधे मोटरमें बिठाकर आर्थर रोड जेलमें ही ले गये। बाके साथ डॉक्टर सुशीलाबहन भी थीं। कुछ समय अुन्हें वहां रखनेके बाद दोनोंको बापूजीके पास ले गये। बा आर्थर रोड जेलमें और वहांसे पूना गयीं अुस समयकी अुनकी मानसिक स्थिति कैसी थी वे बापूजीके पास पहुंचीं तब क्या हुआ यह सब हाल जानने लायक है। डॉ॰ सुशीलाबहन बाके साथ थीं अुस वक्तका अुन्होंने 'हमारी बा'* नामक पुस्तकमें सुन्दर वर्णन किया है यह बहुत लोग जानते होंगे। फिर भी अुपरके संदर्भमें अुसका थोड़ासा भाग यहां दे दूं, तो अनुचित नहीं होगा।

आर्थर रोड जेलमें

ता॰ १–८–'४२

रातके करीब दो बजे कुछ आवाज सुनकर मैं अुठ बैठी। देखा तो बा पाखानेसे आ रही थीं। अुन्हें रातमें पतले दस्त होने लगे थे। मेरे अुठनेसे पहले वे कअी बार पाखाने जा चुकी थीं। मैंने अुठकर बाकी मदद की और अुन्हें बिस्तरमें सुलाया। दूसरे दिन जब डॉक्टर आये तब मैंने बीमारीकी बिना पर बाके लिअे खास खुराककी मांग की।

जिस कमरेमें हमें रखा गया था अुसकी हवा अितनी खराब थी कि अन्दर बैठते ही सिरमें दर्द होने लगता था। मेट्रनको भी अैसा लगा। अिसलिअे अुसने हमसे कहा कि हम अुसके कमरेमें जाकर बैठें। लेकिन बाको जल्दी ही पाखाना जानेके लिअे अुठना पड़ा। बार-बार वहांसे जाना आना बाकी शक्तिके बाहर था अिसलिअे हम वापस अपने कमरेमें आ गयीं। बाने आग्रह करके मुझे बाहर भेजा। लेकिन मैं थोड़ी देर बाद

* नवजीवन प्रकाशन मंदिर, कीमत २– – ।

ही अन्दर चली गयी। अुसी समय अेक और बहन हमारे कमरेमें लायी गयीं। वह तीन-चार छोटे बच्चोंको छोड़कर आयी थीं। बाने खूब प्रसन्न होकर सब हाल पूछा। बाके मन पर व्यक्तिगत दुःख और चिन्ताका बोझ नहीं था। अुन्हें तो बस दूसरी ही चिन्ता खा रही थी — क्या बापूजी हिन्दुस्तानका दुःख दूर करनेमें सफल हो सकेंगे? स्टेशन से बाहर हमें अेक वेटिंग रूममें बैठाया गया। मुझे नींद आ रही थी पर बा अर्ध आंखें जाग रही थी। स्टेशन पर हमेशाकी तरह लोगोंका आना-जाना, भीड़-भड़क्का और शोरगुल जारी था। बा ध्यानपूर्वक सब कुछ देख रही थीं। अचानक वे बोल अुठीं "सुशीला देख यह दुनिया तो वैसे चल रही है जैसे कुछ हुआ ही न हो! बापूजीको स्वराज्य कैसे मिलेगा?" अुनकी आवाजमें जितनी करुणा भरी थी कि सुनकर मेरी आंखें डबडबा आयीं।

आगाखां महलमें प्रवेश

ता० ११-८-'४२

"सुबह करीब आठ बजे गाड़ी अेक छोटेसे स्टेशन पर खड़ी हुआी। अेक पुलिस अफसर हमें लिवाने आया था। बाको सारी रात दस्त आते रहे थे जिससे वे बिलकुल कमजोर हो गयी थीं। स्टेशन पर अुनके लिये कुरसी तैयार रखी गयी थी। मगर अुन्होंने कुरसी पर बैठनेसे अिनकार किया। बाका स्वभाव ही था कि जब तक शरीर चल सके अुसे चलाना, दूसरे पर अुसका बोझ न डालना। वे चलकर ही बाहर आयीं। बाहर मोटर तैयार थी। करीब आधे घंटेमें मोटर आगाखां महलके फाटक पर पहुंची। पहरेदारोंने अेक बड़ा फाटक खोला। कुछ दूर जाने पर अेक तारका दरवाजा खुला। मोटर पोर्चमें जाकर खड़ी हो गयी। बा मेरा सहारा लेकर धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ी। बरामदेमें कुछ कैदी झाड़ू लगा रहे थे। हमने अुनसे पूछा "बापूजीका कमरा कौनसा है?" अेकने जवाब दिया "अखीरका।" बा मेरे सहारे धीरे-धीरे चलकर बापूजीके कमरेमें पहुंचीं। बापू अेक अूंची गद्दी पर बैठे थे। पेंसिल हाथमें लेकर वे ध्यानपूर्वक कोई लेख सुधार रहे थे। महादेवभाओी

पास खड़े थे। कुछ वर्षा चल रही थी। हम जब अुनके बिलकुल नजदीक पहुँच गयीं तब महादेवमामाजीने हमें देखा। वे बहुत खुश हुअे। लेकिन बापूजीकी त्योरियाँ थोड़ी चढ़ गयीं। मुझे लगा कहीं बा दुर्बलताके कारण मेरा वियोग असह्य लगनेका बहाना तो यहाँ मेरे पीछे-पीछे नहीं चली आयी? यह अपना कर्तव्य तो नहीं भूल गयी? बापूजीने तीखे स्वरमें पूछा — तूने यहाँ आनेकी अिच्छा प्रगट की थी या पुलिस लोगोंने तुझे पकड़ा? बा अेक क्षणके लिये चुप रहीं। वे कुछ समझ ही न पायीं कि बापू क्या पूछ रहे हैं। मैंने जवाब दिया — नहीं बापूजी गिरफ्तार होकर आयी हूँ। अब बा समझीं कि बापू क्या पूछ रहे हैं। बोलीं — नहीं नहीं मैंने कोओ माँग नहीं की थी। अुन्होंने हमें पकड़ा है। बाकी बातमें घुमाकर मैंने अुनके लिये दवाका नुस्खा लिखा। मगर बाके दर्द तो बापूजीके दर्शनसे और मनका बोझ हलका हो जानेसे अपने आप बन्द हो गये थे। दवाकी सिर्फ अेक ही खुराक अुन्हें दी गयी। दूसरी खुराक देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी। शायद अेक भी न देते तो भी काम चल जाता।

५

महादेव काकाका अवसान

अभी अेक सप्ताह भी पूरा नहीं हुआ था कि अेक अकल्पित दारुण आघात लगा। यह जितना भयंकर था अुससे सम्बन्धित जनोंको वैसा असह्य दुःख हुआ कि आज ८ बरसके बाद भी वह ताजा ही मालूम होता है। मित्रो वर्गकी भाभी हुओ लड़कियाँ पुत्र और जाने हुअे तथा अनजाने लोगोंके — जिन्होंने अुनका केवल नाम ही सुना होगा और जिनमें तो केवल अुनकी लेखनीको ही जानते होंगे — सबके हृदयों पर कपकपाता यह गहरा घाव पूज्य महादेव काकाके अवसानका था। किसीको स्वप्नमें भी ख्याल नहीं था कि पहाड़ जैसे महादेव काका अिस तरह अेकाअेक चले जायेंगे! बजाजवाड़ीके बंगलेसे फोन आया रेडियो पर समाचार आया है कि महादेवभाओ गुजर

गये। अिस पर कैसे विश्वास किया जाय? अुसी मौसीको कौन समझाय? बादमें दूसरा फोन आया कि कर्नल भण्डारीके साथ बातें करते करते ही अुन्हें चक्कर आ गये और वहीं सदाके लिअे सो गये। पूज्य महादेव काकाकी मृत्युका करुण चित्र सुशीलाबहनने हमारी बा नामक पुस्तकमें खींचा है। अुसमें से थोड़ा-सा भाग यहां देती हूं :

शनिवार, १५-८-'४२

हमेशाकी तरह बापू सुबह ७॥ बजे घूमने निकले। महादेवभाअी भी अुस दिन घूमने आये। आठ बजे सब लोग लौट आये। बापूजी मालिश कराने गये और महादेवभाअी अपने काममें लग गये। बा घूमने नहीं आयी। अुस दिन जेलोंके अिन्स्पेक्टर जनरल कर्नल भंडारी आनेवाले थे। कैदी लोग बरामदेमें बड़ी लगनसे सफाअी कर रहे थे। बा श्रीमती सरोजिनी नायडूके कमरेमें थी। थोड़ी देरमें कर्नल भंडारीकी मोटर आयी। बापूको और मुझे छोड़कर बाकी सब लोग श्रीमती नायडूके कमरेमें अुनसे बातें कर रहे थे। मैं बापूजीकी मालिश कर रही थी। बीच बीचमें महादेवभाअीकी हमेशाकी हंसनेकी आवाज आती रहती थी। अचानक आवाज बन्द हो गयी। किसीने मुझे पुकारा। मैं समझी कर्नल भंडारीसे मिलनेके लिअे बुलाया होगा। अितनेमें बा खुद दौड़ी आयीं और बोलीं : 'सुशीला जल्दी चल, महादेवको फिट आयी है।' मैं दौड़ी गयी। महादेवभाअी महाप्रयाणकी तैयारीमें थे। नाड़ी बन्द थी। हृदयकी गति बन्द थी। श्वास चल रही थी। शरीर बैठा जा रहा था।

मैंने बापूजीको बुलवाया। वे भी समझे कि कर्नल भण्डारीसे मिलनेके लिअे बुलाया जा रहा है। किसीने अुनसे कहा : 'महादेवकी तबीयत ठीक नहीं है।' लेकिन बापूजी यह कल्पना कैसे करते कि महादेवभाअी हमसे जानेकी तैयारी कर रहे हैं? बापू महादेवभाअीकी खटियाके पास आकर खड़े हुअे और 'महादेव, महादेव' पुकारने लगे। बा कहने लगीं : 'महादेव, महादेव! बापूजी आये हैं। महादेव, बापूजी बुलाते हैं।' पर महादेवभाअी तो अुस दिन किसीकी भी आवाज सुननेवाले

नहीं थे। धीरे-धीरे अुनकी सांस भी बन्द हो गयी। बाके लिये अिस वज्राघातको सहना सबसे कठिन था। वे बड़ी हिम्मतके साथ प्रार्थना वगैरामें शामिल हुअीं। मगर आंसुओंकी धारा तो अखंड बहती ही रही। अुनकी आंखोंके सामने सारी दुनिया घूम-सी रही थी।

आखिर जब शवको जलानेके लिये नीचे ले गये तो बा भी आग्रहपूर्वक नीचे आयीं। अभी अुनमें सीढ़ियां चढ़ने अुतरनेकी ताकत नहीं आयी थी। मगर वे अपने महादेवको पहुंचाने भी न जायें यह कैसे हो सकता था? बाकी कमजोर हालतको देखते हम यह चाहते थे कि वे दाहक्रिया न देखें तो अच्छा हो। लेकिन बा रुकनेवाली नहीं थीं। चितासे थोड़ी दूर अुनकी कुरसी रखी गयी। बा सारे समय हाथ जोड़कर यही पुकारती रहीं — महादेव तू जहां जाय वहां सुखी रहना। और बीच बीचमें पूछ अुठतीं — महादेव क्यों गया? मैं क्यों नहीं गयी? अीश्वरका यह कैसा न्याय है? शवको जलाकर हम सब घर लौटे। शामके पांच बज चुके थे। घरमें पूरा सन्नाटा था। कौन किसे सांत्वना देता?

बाको लगा करता कि ब्राह्मणकी मृत्यु तो भारी अपशकुन है। बापू कहते — हां, सरकारके लिये। पर बाके मनसे यह शंका मिटी नहीं। कुछ दिनों बाद वे फिर कहने लगीं — सुशीला, यह ब्रह्महत्याका पाप तो हमारे सिर ही लगा न? बापूजीने लड़ाअी छेड़ी, महादेव जेलमें आया और यहां अुसकी मृत्यु हुअी। यह पाप तो हमारे ही मत्थे चढ़ा न?

आगाखां महलका वह कैसा भयानक दृश्य होगा, जिसकी कल्पना अूपरके वर्णन परसे भी करना शायद कठिन है। मैं चश्मा लगाती जिसलिये महादेव काका मुझे तथा मिनी कहते थे। कोअी भी काम होती तो कहते — यह मेरी पालतू मिनी है। किसी वक्त महादेव काका आराम कर रहे हों और कोअी अच्छी चीज बनायी गयी हो और मैं जा पहुंचूं तो कहते — पालतू मिनी तो मेरी थालीमें से ही खायगी। वह कुछ भी तोड़-फोड़ करके अूधम नहीं मचायेगी। अिसका अर्थ यह कि दूसरी बिल्लियोंकी तरह

झूठा खूबम न बनाया जाय अर्थात् झूठा आग्रह न कराया जाय। परन्तु कोओी पसन्दकी चीज हो तो सीधी तरह खा ली जाय। मैं कहती कि खा तो लूं, परन्तु बापूजीकी अिजाजत चाहिये न? (आश्रममें आश्रमके रसोड़ेके सिवाय जिनके घरोंमें अलग निजी रसोड़ होते वहां आश्रमके रसोड़ेमें खानेवाले कोओी चीज नहीं खा सकते, असा नियम था।) जिससे महादेव काका हंसकर हाथ पकड़कर यह कहते हुअे मुझे जबरदस्ती बिठा लेते — मगर तू तो मिनी है न? तेरे लिये अपवाद है। मैंने बापूसे यह सुना कि कहीं भी मिनी (बिल्ली) के लिये असा नियम नहीं सुना। सिर्फ आपके आश्रममें ही सुना है। जिस तरह झूठ भी नहीं खाना और सच भी नहीं। असा नरो वा कुंजरो वा तो श्रीकृष्ण भगवानने भी सिखाया है और धर्मराज युधिष्ठिर भी तो बोले थे न। जिस तरह मजाक करके कभी कभी मुझमें स्वाद ही रह जाय अितनी भी चीज तो भी खिलाये बिना जाने न देते थे। और फिर बापूसे छिपाते भी नहीं थे। बापूसे भी हंसते हंसते कह देते थे — असी बात कहीं भी नहीं सुनी कि मिनी (बिल्ली) को भी सारे नियम पालने पड़ें। बापू कहते — सब जितना ही है कि यह दो पैरोंवाली है और वह चार पैरोंवाली होती है। लेकिन महादेव काकाका दिमाग क्या कम था? बापूके सामने ही मुझसे कहते — तो तुझे दो हाथों और दो पैरोंसे चलकर आना चाहिये जिससे मैं भी सच्चा और बापू भी सच्चे। बापू मुझसे कहते — देख तो सही महादेव तुझे खिलानेके लिये जानवर बना रहा है। जिस प्रकार कभी बार मजाक चलता। महादेव काका कितने ही काममें क्यों न हों हम बालक यदि अुनके पास कुछ बात करने जाते तो वे कभी हमसे गैरोंकी तरह बात न करते। या तो हमारे बाल पकड़ते या कान पकड़ते। कुछ नहीं तो मीठी चपत तो मारते ही। असे प्रसन्न थे। आखिरी बार सेवाग्रामसे जब अुन्होंने बिदा ली तब मैं अुन्हें प्रणाम करने गयी। मुझे अपने पास बिठाकर कहा — अच्छा मिनी अब तो जाता हूं हम फिर कभी मिलने या नहीं मिलने। भावी कभी कभी मनुष्यके मुंहसे सत्य बात कहलवाती है। मैं रोने रोने कहा — काका जेल जायेंगे न? मैं भी जाऊंगी। — अरे तू तो पंचांगी

लड़की है तुझे कौन ले जायगा? अगर जलमें मिनियां (बिरिम्यां) बहुत होती है। अनमें तू भी अक बन जायगी। अुनके अंतिम शब्द सदाके लिअे अंकित बन गये। अुन्होंने जानसे पहले मुझसे गीतेका भजन गवाया था। अुन्हें यह भजन बहुत ही पसन्द था। मैं कराचीमें सीखा था। मुझसे वे बार बार यह भजन गवाते थे। बापूजीको भी यह बहुत प्रिय था।

थाके न थाके छतांये हो मानवी
न लेजे विसामो
ने झूझजे अेकला बांये
हो मानवी! न लेजे विसामो!
तारे अुल्लंघवानां मारग मुकामनां
तारे अुठारवाना जीवन दमामना
हिम्मत न हारजे तु क्यांये
हो मानवी! न लेजे विसामो!
जीवनने पंथ जता ताप थाक लागशे
जगनी विटम्बना सहता तुं भागशे
सहुना संकट ने बचावे
हो मानवी! न लेजे विसामो!
जाशे चटावी तुम आफतनो टेकरो
आगे आगे तुझे मजलनो छेवटो
जरी तोडे ने चणा जे
हो मानवी! न लेजे विसामो!
आंखा जगतमां अेकलो प्रकाशजे
आवे अंधार तेने अेकलो विदारजे
जोने आ कायनु ह्माये
हो मानवी! न लेजे विसामो!

बैठा था। परंतु जिसे जीवनमंत्र मान लिया हो अुसके स्वरकी क्या परवाह?

मुझसे कहा: "मुझे झटपट अेक कागज पर यह गीत अुतार दे।" मैंने अेक कागज पर लिख दिया। अुन्होंने यह कागज अपने कुरतेके आगेके जेबमें सम्हालकर रख लिया और सदाके लिअे सेवाग्राम आश्रम छोड़ दिया।

अैसा असह्य आघात लगने पर भी बापूजी येरवडा जेलके कारण महादेव काकाके प्रिय पुत्र नारायणभाअीको और अुनकी माता (दुर्गाबहन) को दो शब्द भी आश्वासनके न लिख सकें यह कैसे सहन हो सकता है। अुन्होंने कह दिया: "तो मुझे किसीको भी पत्र नहीं लिखना है। मेरा सच्चा कुटुम्ब केवल गांधी-कुटुम्ब ही नहीं है। अैसे संकुचित पारिवारिक जीवनमें सीमा तो मैंने कभीका छोड़ दिया है।" और सचमुच बापूके साथ रहनेवाले साथियोंने जेलसे अपने किसी भी सगोंको पत्र नहीं लिखा।

हमारे समाजमें अैसे मनोहर पौराणिक किस्से प्रचलित हैं कि किसी भी १२ लक्षणोंवाले मनुष्यका बलिदान दिया जाय तो अमुक काम सफल हो जाता है, खास करके देवियोंके विषयमें तो अैसा कहा ही जाता है। क्या महादेव काकाके विषयमें भी अैसा ही हुआ? भारतकी स्वतंत्रताकी लड़ाअीमें प्रसिद्ध अप्रसिद्ध कितने ही सेवकोंका बलिदान दिया गया है, परन्तु जैसे हाथीके पैरमें सभी समा जाते हैं वैसे ही जिस अेक महान आत्माके बलिदानसे ही तो अन्तमें स्वतंत्रता देवीने प्रसन्न न होना चाहा हो? क्या जिसीलिअे १५ अगस्तको वह हमारी कितने वर्षोंकी गुलामीकी जंजीरें तोड़कर आयी? कहीं अंग्रेजोंने अुसी तारीखको भारत माताको गुलामीसे मुक्त करके अपने पाप तो नहीं धोये? कुछ भी हो बहुत विचार करने पर अैसा महसूस हुअे बिना नहीं रहता कि जिसमें कोअी न कोअी अीश्वरीय संकेत जरूर होगा।

सेवाग्राममें हम सबने अुनका मास-दिवस अुनके निवास-स्थान पर कताअी और प्रार्थना तथा गीता पाठमें बिताया जो अुन्हें बहुत प्रिय था।

६

सेवाग्राममें धरपकड़

सेवाग्राम २२-८-'४२

पू. महादेव काकाकी मृत्युके शोकका सप्ताह अेक वर्ष जितना लम्बा बनकर बड़ी मुश्किलसे बीता और अगस्तका तीसरा सप्ताह आ पहुंचा।

यह भी कड़ी परीक्षाका सप्ताह था। अुस असह्य दुःखमें जो थोड़ा बहुत आश्वासन मिल रहा था वह भी शायद भगवानको अच्छा नहीं लगा होगा अथवा अभी तक परीक्षा बाकी रह गयी होगी। क्योंकि अभी तक आश्रम दुर्गाबहन और नारायणमामी जिनसे आश्वासन प्राप्त कर रहे थे अुन्हें भी सरकारने छीन लिया। अुन्हें जेलमें बिठा दिया।

२ अगस्तको पू. बापूजी, बा और महादेव काकाने बम्बई जानेके लिये आश्रम छोड़ा। ८ तारीखको अनिश्चित अवधिके लिये सबने आश्रम छोड़ा। पू. महादेव काका अपने प्रिय सेवाग्रामको सदाके लिये छोड़कर गये और दुःखमें सान्त्वना देनेवाले किशोरलाल काकाने २२ तारीखकी रातको अनिश्चित समयके लिये सेवाग्राम छोड़ा। अिस प्रकार सारा अगस्त मास ही हम सबके लिये अग्नि-परीक्षाका सिद्ध हुआ।

२२ अगस्तकी रातको कोअी बीस पुलिसवालोंकी हथियारबन्द सेना अचानक सेवाग्राममें आ धमकी। आश्रमके अेक साथी श्री मुन्नालालने अफसरसे पूछा आपको किससे काम है? अफसरने कहा हमें श्री किशोरलाल मशरूवालाके घरकी तलाशी लेनी है। अुनका घर कहां है हमें बतायेंगे? रातके करीब डेढ़-दो बजे होंगे। किशोरलाल काकाके घरके दरवाजे तो खुले ही थे।

तैयार हो जानेको कहा। सवेरेके ३॥ बज गये थे। सबने भग्न हृदयसे प्रार्थना की। सामानमें सिर्फ अेक पूनियोंका बंडल और अेक चरखा था। अितनी अधिक कमजोर तबीयत होने पर भी किशोरलालभाईने अेक घासके सिवाय कुछ भी ओढ़न-बिछानेका न लिया और न कपड़ोंका दूसरा जोड़ा ही साथ लिया! गोमतीबहन तो हिम्मतवाली हैं ही। अुन्होंने प्रणाम करके सबसे पहले विदा दी।

पुराने अितिहासमें हम पढ़ते हैं कि जब राजपूत लड़ने जाते थे तब वीर राजपूतनियाँ हँसते-हँसते कमरमें तलवार बाँधकर और माथे पर तिलक लगाकर अपने पतियोंको वहाँ भेजती थीं कि हार कर लौटनेके बजाय पीठ पर हुअे घावोंका जरा भी विचार किये बिना रणभूमि पर बहादुरीसे लड़ते लड़ते मृत्युके हाथ मर जाना। अुन वीर राजपूतनियोंका वीरतापूर्ण मनोविकार कितना ऊँचा रहा है अिसका कौन कह सकता है? जब गोमतीबहनने [illegible] अनेक लोगोंके बीच सबसे पहले हँसते हुअे किशोरलालभाईको विदाओका प्रणाम किया तब मुझ पर अैसा ही असर हुआ। क्योंकि यह भी तो अेक प्रकारका रणयात्रा ही था। जिसका स्वरूप भले ही दूसरा हो परन्तु सोचा जाय तो वस्तुस्थिति अेक ही थी। बल्कि यह रणयात्रा अधिक विकट था। क्योंकि अिस अहिंसक रणभूमिमें किसीको मारना तो क्या मारनेका विचार तक करनेकी मनाही थी केवल मरनेकी ही बात थी। अिसलिअे अिसमें मन पर काबू रखना बहुत कठिन है।

प्रणाम करनेका मेरा नम्बर सबसे आखिरी था। किशोरलालभाईके मुँह पर भी स्मितहास्य ही था। जिन जिनको हिदायतें देनी थीं अुन्हें विदा लेते समय जल्दी हिदायतें दे रहे थे। अिसी प्रकार मुझे भी समझाया "तुम्हारी शिक्षा करनेकी जरूरत नहीं है और पन्नालालभाओ (मेरे पिताजी)ने तुम जैसा चाहो वैसा करनेकी मंजूरी दी है। अिसलिअे तुम्हें रोकना तो नहीं। परन्तु अब भी विचार कर लो। अभी जितना चाहो सोच लो। मनको अच्छी तरह टटोल लो। परन्तु अेक बार स्वाधीन करनेके बाद पीछे न हटना। तुम्हारी अुम्र अभी छोटी है। अिसलिअे बिना सोच-समझ जोखम उठाकर

लड़ाअीमें न चूक पड़ना। जिसमें कभी लाठी चार्ज हो जाय या गोली चल जाय तो सब कुछ हंसते हंसते सहन करना पड़ेगा। जिन सब बातोंका पूरा विचार करना और पूरी हिम्मत रखना। सुबहके लगभग ४ बजे किशोरलाल काका प्रेममंदिरमें जानेके लिये कारमें बैठकर बिदा हुअे।

अभी भी अगस्तकी मातमाके विषय आश्रमके लिये आने बाकी ही थे। अैसी मान्यता है कि किसी मनुष्यके पीछे अमुक ग्रह पड़ा हो तो अुसका कचूमर निकाल डालता है। अिसी प्रकार हमारे आश्रमके लिये अगस्तमें कौनसा ग्रह अनिष्ट था यह तो अीश्वर जाने परन्तु हर हफ्ते हम कोअी न कोअी नया धड़ाका सुन ही लेते थे। लेकिन मेरे लिये तो यह (अंतिम) सप्ताह आनंदमय साबित हुआ। महिला-आश्रमकी बहिनोंने अेक अैसी योजना बना ली थी कि तारीख १-८-'४२ से बहनोंकी टोलियां रोज वर्धा जाकर १४४वीं धारा तोड़ें। तदनुसार आज कानून-भंग करनेकी बारी आश्रमके महिला दलकी आअी। अिसलिये यों ही खयाल हुआ कि अगस्तका अन्तिम सप्ताह भी शांतिसे कैसे गुजर सकता है? आश्रममें कुछ न कुछ नअी घटना तो होनी ही चाहिये।

मैं आनन्दभरी अपनी तैयारी कर रही थी। हमारे ८ बहनोंके दलमें हम ३ बहनोंकी अुम्रमें दो-दो चार-चार वर्षका अंतर था। हमारे दलमें जोहरा बहन मेरी खास मित्र थी। हम दोनोंने तो अपना बिस्तर भी अेक ही बना लिया था। कपड़े भी दोनोंके अेकसे थे। हम खूब अुत्साहसे तैयार हो रही थी। परन्तु मैं छोटी थी और फ्रॉक पहनती थी। अिसलिये सब हमें चिढ़ाते थे कि मनु-जोहरा जरूर अलग होंगी क्योंकि मनु छोटी है। अुसे कोअी नहीं पकड़ेगा। अिस प्रकार चिढ़ानेवालोंमें आश्रमके अेक बहुत विनोदी भाअी बलवन्तसिंहजी और दूसरे भणसाली काका (प्रोफेसर भणसाली) थे। मैं अिससे बड़ी परेशान हुअी। अिसलिये हम दोनोंने अेक युक्ति निकाली। पहले हम [illegible] पर ही मैंने साड़ी पहन ली जिससे मैं बड़ी और भारी दीखने लगी।

हमारे दलमें ४ बहनें २५ वर्षके भीतरकी और ४ प्रौढ़ थीं।

हमने प्रार्थना की। चिमनलाल काकाने (आश्रमके व्यवस्थापक) बाके न बाके उठावे भजन (देखिये पृष्ठ २४) गानेकी सूचना की थी। उसका बोझ भी बढ़ गया था।

आश्रममें सबको प्रणाम करनेका सौभाग्य मुझे ही प्राप्त था क्योंकि सब मुझसे बड़े थे। अुनमें से अेक दो भाअी (लड़के) मुझसे बहुत बड़े तो नहीं थे २–३ वर्ष ही बड़े होंगे। फिर भी मेरी हंसी अुड़ाते हुअे मुझसे कहते "अरी मनु हम भी तुझसे तो बड़े हैं हमारे पांव पड़।" मैं सोचती यदि अिस मण्डलीमें कोअी मुझसे छोटा होता तो मैं भी अुससे जबरन् पांव पड़वाकर जोरसे पीठमें धप्पे लगाती। परन्तु दुर्भाग्यसे अैसा कोअी भी नहीं था।

जिन जिनके मैंने पांव पड़े थे अुन्होंने मुझे जोरसे धप्पे लगा कर मेरा मजाक अुड़ाया।

अिन लोगोंके लिअे मजाक था और मेरे प्राण निकल रहे थे। अिन दो भाअियोंको प्रणाम करते समय मुझे बड़ा गुस्सा आया परंतु अैसी विदाअीके समय अनमना नहीं होना चाहिये अिस खयालसे अिच्छा न होने पर भी मैंने अुन्हें प्रणाम किया। फिर भी आज तो यह स्पष्ट लगता है कि मुझ पर अुन सबके आशीर्वाद अद्भुत रूपमें फले। बलवन्तसिंहजी और मगनभाअी काकाने सचमुच अन्तमें यहां लड़ाअीमें जानेका जब जानेका बोझ तो मुझ पर खूब लादा हुआ है। परन्तु बापूको साथ लाये बिना लौट आअी तो तेरी खैर नहीं है। सचमुच अिन लोगोंकी वाणी सच्ची और मैंने बापूके बिना आश्रमके बाहर पैर नहीं रखा। अिसमें विदाअीके समय सबके अन्तःकरणसे दिये हुअे आश्रमके बुजुर्गोंके आशीर्वाद ही कारणभूत हुअे।

हम सब बहिन ठीक ४ बजे वर्धाके तिलक चौकमें पहुंची और जिन जिनके साथ आया अुन्होंने भाषण दिया। छोटी बहनोंने राष्ट्रीय गीत और नारे लगाने शुरू कर दिये। अिस प्रकार आधे घंटेमें हमने अपनी मंडलीको जमानेकी शुरुआत की और कुछ भीड़ अिकट्ठी

हुअी जितनेमें तो रास्तेसे मोटर लारी घ र र र करती हमारे सामने आ खड़ी हुअी। अुसमें बैठे हुअे आदमियोंको देखकर हमें अधिक जोश चढ़ा। हमने जोरशोरसे गाना शुरू किया और पुलिसको चिढ़ानेके लिअे "सरकारी नौकरी छोड़ दो" का नारा अधिकाधिक जोरसे लगाने लगीं। पुलिस भी हम पर गुस्सा हो रही थी परन्तु हमारी आवाज सुन कर भीड़ जमा न हो जाय सिर्फ अिसीलिअे बिना कारण पेट्रोल जलाकर भी लारीकी आवाज जारी रखी। अितनेमें कोअी बैंड बाजेवाले निकले (जहां तक मुझे याद है यह बरात थी)। ये बाजेवाले बेचारे किसी अशुभ घड़ीमें निकले होंगे क्योंकि अुन्हें सरकार माअी-बाप का हुक्म हुआ कि अिन लोगोंका दल चुपके अुसके आगे आगे बैंड बजाते हुअे जाय फिर भले ही ये लोग राष्ट्रगीत गाते रहें कुछ समयमें अपने आप थक जायगी। हमारे गलेमें पानी जितना ज्यादा सूख गया कि आवाज ही बंद हो गयी। लेकिन कैसी भी मुश्किल झेलकर बारी बारीसे नारे लगाकर अुन लोगोंको थकाना तो था ही।

बेचारे बाजेवालोंकी तो शामत ही आ गयी। अंतमें अुनके मालिकोंको अुन्हें छोड़कर चुपचाप अपने गन्तव्य स्थान पर जाना पड़ा। बाजे हमारे लिअे रहे।

हमारे दलमें आश्रम-व्यवस्थापककी पत्नी श्रीमती चकरी बहन भी थीं। अुन्हें हम मौसीजी कहती थीं। चकरी मौसी गंभीर होते हुअे भी बहुत विनोदी हैं। अिस कुटुम्बने कितने ही वर्षों तक आश्रममें बापूजीकी अनन्य सेवा की है। ये अत्यन्त मूक सेवक हैं। ये आज भी अुसी श्रद्धा और निष्ठासे आश्रमका सञ्चालन कर रहे हैं। बापूजी मुझे अनेक बार अिस परिवारके बारेमें कहा करते थे "मैं चकरी बहनको आगे कम त्यागी नहीं मानता। ये दोनों पति-पत्नी बस मेरी आज्ञा मिलते ही बिना किसी बहसके अुसे शिरोधार्य कर लेते हैं।" अैसे अैसे परिवारोंकी अनुपम विरासत बापूजी हमारे लिअे छोड़ गये हैं यह हमारे लिअे कोअी कम सौभाग्यकी बात है?

भिन बहनको हिन्दी नहीं आती थी अिसलिये कहने लगी "अरे, आ[1] तो मामा[2]नी जान[3] है। अेटलेज[4] अुसके लिये बाजा दीधा[5] है। मामाके घर रोटलाय[6] नहीं है ने ओटलाय[7] नहीं है।"

अिससे हंसते हंसते हमारा पेट दुखने लगा। हमने मजाकमें पुलिसका नाम मामाका घर रख लिया था।

हमें न तो पुलिस पकड़ती थी और न हमारा कहना किसीको हुक्म देती थी। दो घंटे तक हमारा जोश बना रहा। अन्तमें खूब थक गयी और विश्राम लेनेके लिये अेक चबूतरे पर बैठी। बाजे मोटर वगैरा सब बन्द हो गये। परंतु ज्यों ही हमने बोलना शुरू किया त्यों ही अुन्होंने भी शुरू कर दिया।

अन्तम दिन छिपनेके बाद साढ़े-साढ़े सात बजे पुलिस अफसरने हुक्म दिया कि मोटरमें बैठ जाओ। अुनके मुंहसे शब्द निकला ही था कि मैं सबसे पहले चढ़ गयी। चलो आज रातको खूब सोयेंगी हमारे मुंहसे ये अुद्गार निकले। आवाज बिलकुल बैठ गयी थी। १५–२ मिनटमें हम जेलके दरवाजे पर पहुंची।

दरवाजे पर प्रारंभिक विधि पूरी हुई। सबके नाम-पते लिखे गये। ८ बजे हमें अेक कोठरीमें बन्द किया गया। अुसमें ३ ४ स्त्रियोंकी मंडली पहलेसे ही थी। वे हमें देखकर खुश हुईं। अुन्हें लगा हम कोअी ताजी खबर सुना सकेंगी।

देर भूख लगी थी। मगर सूचना मिली कि अिस समय जेलमें खाना नहीं मिल सकता। अुसका गुस्सा जेलर पर निकाला कि हम अितनी [illegible] छोटीसी कोठरीमें १०–४ स्त्रियां नहीं रह सकतीं। आगेका फाटक भले ही बन्द कर दीजिये। यह कहकर सब स्त्रियां कोठरीके बाहर आकर खड़ी हो गयीं।

वादविवादके बाद अन्तमें हमारी कोठरी खुली रही। फिर भी जेलके बड़े बड़े चूहोंके कारण और [illegible] बैरकमें कुछ ज्यादा

१ आ = यह। २ मामानी = मामाकी। ३ जान = बरात। ४ अेटलेज = अिसीलिये। ५ बाजा दीधा = बाजे दिये। ६ रोटलाय = रोटी भी। ७ ओटलाय = बैठनेका चबूतरा भी।

अशान्तिके कारण रातभर हमारी पलक तक नहीं लगी। जैसे-तैसे सवेरा हुआ।

७

जेलके अनुभव

हम बम्बीकी जेलमें दो दिन रहीं। परन्तु अिन दो दिनोंमें ही अनेक अनुभव हुओ। पहले दिन रातको तो भूखी ही सो रहीं। दूसरे दिन सुबह ज्वारके आटेकी राब (लपसी) आयी। हममें से जिन जिनको जेलका अनुभव था अुन्होंने तो पी ली। परन्तु हम जो नयी थीं अुन्होंने मुहमें रखते ही थू-थू करके निकाल डाली। राब कंकरीसे भरी और कुछ अजीब गन्धवाली मालूम हुआी। अिस आशासे कि दोपहरको कुछ खाने लायक पदार्थ मिलेगा सवेरे हमने कुछ भी नहीं खाया। अिस पर कुछ बड़ी बहनें नाराज होकर कहने लगीं: जेलमें आकर अैसे नखरे करनेसे कैसे काम चलेगा?

नहाने-धोनेके लिये पानी भी नहीं था अिसलिये हमने नहाना ही छोड़ दिया।

ज्यों-त्यों करके ११ बजाये तब कहीं खाना आया — निरा लहसन पड़ा हुआ तुअरकी दालका पानी और कंकरीवाली ज्वारकी मोटी मोटी रोटियां। शाकके नाम तो अक्सर मिरचोंके ही थे। अिस लिये मैंने कुछ नहीं खाया और भूखी ही दोपहरको सो गयी। दूसरी बड़ी बहनें बहुत नाराज हुआीं कि अैसा करोगी तो जरूर बीमार पड़ोगी और कमजोरी आ जायगी। पेटमें भूख तो खूब लगी हुआी थी परन्तु शामकी आशामें दोपहरका समय जैसे तैसे बिताया।

परन्तु बिना खाये कब तक रहा जा सकता था? शामको ६ बजते ही खानेकी थालियां आयीं। मोटी रोटियां और दाल थी। परन्तु भूखी होनेके कारण यह रोटी-दाल अितनी अच्छी लगी कि मैंने यहां

दिन भरमें हमारी डाक या कोअी नये समाचार शामको ४ बजे जब हमारी मेट्रन आतीं तभी मिलते थे। जेलमें अेक सुन्दर पीपलका पेड़ था। मेट्रन अुसके नीचे बैठतीं। ज्यों ही फाटक खुलता हम दौड़ कर आतुरतासे डाककी पूछताछ करतीं। किसी भी बहनकी डाक क्यों न आये हम सब बड़ी जिज्ञासासे अुसे सुनतीं। वहां हम करीब करीब १५ स्त्रियां थीं।

हमें जेलमें अनेक खट्टे-मीठे अनुभव हुअे। पू. बापूजी और भणसाली भाअीके अुपवासके दिनोंमें हमारी स्थिति बड़ी विषम रही। बाहरकी कोअी खबर न मिलती थी। अेक अखबार आता था परंतु अुसमें कोअी खास समाचार न मिलते थे। सेवाग्रामसे हमारी जो डाक आती अुसमें अगर कोअी समाचार होता तो अुस पर अधिकारी डामर पोत देते थे। कभी कभी तो अैसे पत्र आते कि लिफाफेके पतेके ही अक्षर सिर्फ पढ़नेको मिलते बाकीके अक्षरों पर डामर पुता होता।

१९४३ के मार्च मासकी १९ तारीखकी शामको अेकाअेक खबर आयी। हमने अपनी मेट्रनको खाना खिला दिया था। वे जा रही थीं। बेचारी घबराहटमें पड़ गयीं कि किस तरह अचानक साहब के आनेका क्या कारण होगा?

मेरी आंखें बहुत बिगड़ रही थीं और बुखार आता था। वे सीधे मेरे पास आये। पहले जांच करायी कि मनु गांधी कौन है? क्योंकि मेरी भाभी — यद्यपि अुनका नाम मनोरमा बहन है परंतु सब अुन्हें मनुबहन भी कहते थे — का बच्चा बीमार था इसलिये हमने समझा कि शायद अुन्हें पैरोल पर छोड़ रहे होंगे। परंतु जेलरने जांच करके बम्बअी सरकारसे फिर पुछवाया कि दो मनुओंमें से कौनसी मनु? अुसी रातको फिर बम्बअी सरकारका नागपुरके जेल सुपरिन्टेन्डेन्टके नाम तार आया १४ वर्षकी लड़की मनु। अुसी रातको जेलरने दुबारा आकर मुझे तैयार हो जानेको कहा। मेरी बीमारीके कारण मुझे छोड़ रहे होंगे यह समझकर कितनी ही बहनोंने बाहरके अपने आप्तजनोंके लिये मुझे सन्देश कहे। कुछने कता हुआ सूत बुनवानेके लिये दिया तो कुछने बच्चोंके लिये भेंटकी चीजें दीं।

मैंने दो चादरें बिस्तर और अेक पेटी तैयार कर ली। जितनेमें हमारी मैट्रन आयीं और कहने लगीं कुछ जाना है, साथ नहीं। और किसीकी कोओी भेंट नहीं ले जानी है। तुम्हारा तो तबादला कर रहे हैं। तबादलेका नाम सुनते ही मैं चौंक पड़ी। मेरे साथ जो बड़ी स्त्रियां थीं वे भी सब चौंकी कि जिस बेचारीका ही तबादला क्यों कर रहे हैं?

हमारे साथ रेहाना तैयबजी भी थीं। अुन्होंने जरा गुस्सेसे कहा "अकेली लड़कीका तबादला करेंगे तो हम जिसका विरोध करेंगी। जिसलिओ साहबको बुलाओ और बात कराओ।" अुन्होंने जब सुपरिन्टेण्डेण्टको बुलाया। अुन्हें देखते ही रेहाना बहनने गुस्सेसे कहा आप हमें बताअिये कि मनुका तबादला कहां कर रहे हैं। यह लड़की बापूकी सगे रिश्तेकी बेटी है जिसलिओ हम सबकी बेटी है। जिसे हम यों नहीं जाने देंगी। रेहाना बहनने अेक ही सांसमें सारी वेदना अुड़ेल दी। सुपरिन्टेण्डेण्ट भी मुसलमान थे। वे ठंडे दिमागसे सुनते रहे और अन्तमें बोले कहिये अभी और कुछ कहना है? (यों कहकर रेहाना बहनको और चिढ़ाने लगे।) जिस लड़कीके दुःखकी कोओी हद नहीं। आप सब १५०—२ बहनें यहां हैं अुनमें जिसीका भाग्य चमक अुठा है। मैं तो अपना और अपनी जिस बहनका बड़ा भाग्य समझता हूं कि जिसमें से अेक छोटीसी लड़की संसारके महापुरुषके पास अुनकी सेवाके लिओ जा रही है। यह कोओी बुरी जैसी बात है? कस्तूरबाको दिलका दौरा हुआ है अुन्होंने मनुकी मांग की है। मेरे खयालसे आप सबकी अपेक्षा जिसीका भाग्य सफल हुआ है। यह कल आगाखां महलके लिओ रवाना होगी। मेरी ओर देखकर कहने लगे "बोलो अब तो जाना है न?

तब बहनें चुप रह गयीं। जब सुपरिन्टेण्डेण्ट साहब बोल रहे थे तब अैसी शांति थी कि सुअीके गिरनेकी आवाज भी सुनाओी दे जाय।

मैं तो आनन्दसे पागल हो गयी। सुपरिन्टेण्डेण्ट साहब बोले तुम तो मेरी बेटी हो। मेरी तरफसे महात्माजी और माता कस्तूरबाको प्रणाम कहकर तबियतके हाल खबर पूछना। मैं

जितनमें सुपरिन्टेन्डेण्ट साहब आ गय। मुझे देखकर फिर मुस्कराये और समझाया कि समझकर जाना तुम्हें रास्तेमें किसी चीजकी जरूरत हो तो तुम्हारे साथ जो सिपाही हैं उनसे कह देना। और तुरन्त सिपाहियोंकी तरफ देखा और उन्हें बाहर भेजकर मेरे सामने ही जमरको डांटा। मिस लड़कीके साथ असे जवान छोकरोंको भेजा जाता है? अक स्त्री-कदीकी कितनी जिम्मेदारी होती है जिसका आपको जबरके नाते बिलकुल भान नहीं है। जाजिये दशरथ और गोविन्दको तयार कीजिये। (दशरथ और गोविन्द दोनों अधेड़ उमरके ४ के ऊपरके होंगे।) जमा कहकर मुझ तो जीवजानीको मना कर दिया। उन्हींके बिस्तर जिन दो युवा सिपाहियोंको दिखला दिये क्योंकि गाड़ी ५ बजे रवाना होती थी और ३—४५ बहो बज गये थे। अगर सिपाही सामान लेने घर जाते तो देर हो जाती। बेचारा दशरथ कहने लगा साहब मैं घरा घर कह आऊं? घर पर सब मेरी चिन्ता करेंगे। साहबने बौलीको घर में जानेके लिअ अपनी मोटर दी और फौरन लौटनेको कहा। सुपरिन्टेन्डेन्ट बड़े दयालु अफसर थे। वे दशरथसे कह सकते थे तुम नौकरी करनी हो तो कर, घर नहीं जा सकता।" परन्तु उनमें कितनी दया भरी थी यह मैं देखती ही रही। सिपाही दसेक मिनिटमें वापस लौटे। मेरे लिये स्टेशन-वैगन जैसी गाड़ी आयी। उसमें सामान रखवाया। मैट्रन और सुपरिन्टेन्डेन्टको मैंने प्रणाम किया। मैट्रन तो रो पड़ी और सुपरिन्टेन्डेन्ट भी मेरी पीठ थप थपाकर गद्गद हो गये और कहने लगे बेटी! मेरी नौकरीको लगभग १८ वर्ष पूरे हो रहे हैं। जिस बीच कितने ही कैदी आये-गये। बहुतोंको फांसी भी देखनी पड़ी है। अनेक अप्रिय काम करना पड़ा है। लेकिन मेरे जीवनमें यह अक प्रसंग मेरे बालकोंके लिअ बहुत महत्त्वका आया है कि मुझे अपने ही हाथों कैदियोंकी कोठरीमें से महात्मा गांधीके पास अक बालिकाको भजनका सौभाग्य मिला। जिस मैं कोओ कमी नहीं बात नहीं मानता। मुझे विश्वास है कि ये महापुरुष ही हम लोगोंको जिस गुलामीसे मुक्त करनेवाले हैं। दुआ है मेरी यही प्रार्थना है कि उनकी यह लड़ाओ आखिरी लड़ाओ बन जाय। मैंने जिन बरसोंमें

आपके दर्शन भी हुअे। अुस दिन प्रार्थनामें कुरानशरीफकी आयत भी नहीं पढ़ी।

जाते जाते अूपरके कड़वे शब्द कहनेके लिअे अुन्होंने मुझसे माफी मांगी। मैंने कहा "आपको तो मुझे मारनेका भी अधिकार है। अगर आप माफी मांगेंगे तो मैं पापकी भागी बनूंगी। पिता भी कहीं पुत्रीसे माफी मांगता है?" अुन्होंने कहा "मैं अिसलिअे माफी नहीं मांगता लेकिन तू मुझे पहचान क्यों न सकी यह पूछे बिना मैंने तुझे कड़वे शब्द कहे अिसके लिअे माफी मांगता हूं।" मैंने कहा "अिसमें तो आपने मुझे सावधान ही किया है। आप भी मेरे लिअे अीश्वरसे प्रार्थना कीजिये कि मुझमें हमेशा नम्रता बनी रहे। आप जैसे गुरुजनोंसे अैसे ही आशीर्वाद मांगती हूं।"

मैं नागपुर स्टेशन पर पहुंची। लेकिन गाड़ी आध घंटा लेट थी। स्टेशन पर कुछ लोगोंको शायद पहलेसे ही किसी तरह खबर लग गयी थी। अिससे अेक छोटीसी टोली मेरे आसपास जमा हो गयी। सब पूछने लगे कि तुम्हारी बदली कहां हुअी है? मुझे अितना तो मालूम ही था कि असमें जाने पर अुनके नियम तोड़ना बापूजीको अच्छा नहीं लगता। और कभी बापूजी मुझे पूछ बैठें या मैं ही कह दूं तो अुन्हें दुःख लगेगा। अिसलिअे मैंने सबको यही जवाब दिया कि मेरे साथ आने वाले अिन सिपाहियोंसे पूछो। मैं अिसका जवाब नहीं दे सकती। मैं कैदी हूं। मेरे अिस जवाबसे कुछ लोग मेरा ही मजाक अुड़ाने लगे। कुछ युवकोंने कहा यदि यह बोली तो हमारे बजाय तुम्हें फायदा होगा। हम अपने सगे-सम्बन्धियों और जान-पहचानवालोंको तार कर देंगे तो स्टेशनों पर तुम्हें सुविधा हो जायगी। दो चार भाअियोंने कहा अरे, अैसी मूर्ख लड़कीको यहां महात्मा गांधीके पास ले जा रहे हैं। कहनेका कितना अच्छा मौका है तो भी नहीं कहती। यदि हममें से कोअी अिसकी जगह होता और अैसे कमजोर बूढ़े सिपाही साथ होते तब तो हम दगा ही कर डालते। अिस तरह आपसमें बातें करके मेरी खिल्ली अुड़ाते रहे। मुझे यह जरा भी अच्छा नहीं लगता था। लेकिन मैं चुपचाप सब सुनती रही। क्योंकि मुझे ज्यादा जवाब नहीं देने थे। ५॥ बजे

गाड़ी चली। यह आधा घंटा मुझे अेक दिन जितना लम्बा लगा और गाड़ी चली तभी अिस झंझटसे मुक्ति मिली।

मुझे दूसरे दर्जेमें ले जाया गया। लेकिन वहां भी लगभग स्टेशन जैसा ही अनुभव हुआ। दूसरे दर्जेके डिब्बेमें मुसाफिर तो थे ही। मेरे लिअे सीट रिजर्व करवा ली थी। लेकिन किसीको मालूम न हो अिसलिअे मेरा नाम नहीं लिखा था। स्टेशन मास्टर आकर मुझे अच्छी तरहसे गाड़ीमें बैठा गये। नागपुरमें गाड़ी बीसेक मिनिट ठहरी। अिस बीच स्टेशनवाली कुछ टोलीकी संख्या बढ़ी और डिब्बेके पास करीब सौ आदमी अिकट्ठे होकर "महात्मा गांधीकी जय" बोलने लगे। मुझे बहुत बुरा लग रहा था लेकिन मैं निरुपाय थी।

गाड़ी चल दी। अंदर बैठे सज्जनोंमें से अेक तो पोरबंदरके ही थे और मेरे सारे कुटुम्बको पहचानते थे। अुन्होंने भी बातें जाननेकी अिच्छा प्रगट की। दफ्तरकी तरफ देखकर मैंने कहा आप अिस भाअीसे पूछिये। अुन्होंने सिपाहीको फुसलाकर पूछा। दफ्तरने सारी बात कह दी। मेरे नामका हुक्म तक निकालकर दिखा दिया।

अैसा होते होते कल्याण स्टेशन आया। अिस तरफके रास्तेकी मेरी यह पहली ही यात्रा थी। मुझे मालूम नहीं था कि कल्याणमें गाड़ी बदलनी होती है। वे दोनों बूढ़े तो बहुत ही भोले थे। अिसलिअे सुबह पांच बजे हम सीधे बम्बअीके बोरीबंदर स्टेशन पर पहुंच गये। मैं खूब चिढ़ गअी। मेरे साथके वे परिचित सज्जन तो बीचमें ही अुतर गये थे। अखबारमें पढ़ा था कि बापूजीको हृदयका सख्त हमला हुआ है। अिससे बहुत चिन्ता थी। अिसके सिवा तो दिनसे बिलकुल भूखी थी। गाड़ीमें कुछ खाया भी नहीं था। अैसा निश्चय किया था कि बापूजीके पास पहुंचकर ही खाअूंगी। लेकिन मुझसे भी ज्यादा चिन्ता तो अिस बातकी थी कि मोतीबासे कब मिलूंगी। बोरीबंदर पर सारी बातोंकी पूछताछ की। पूनाके लिअे दूसरी गाड़ी मुझे ४ बजे मिलनेवाली थी। तीन घंटे किस तरह बीतेंगे यह सोचकर मैं तो कांप अुठी।

अब दूसरी तरफ पूना स्टेशन पर स्थानीय पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट, कान्स्टेबल वगैरा मुझे लेने आये। जब अुन्होंने मुझे न देखा तो तार-टेली

फोन किये। मैं स्त्रियोंके वेटिंग रूममें बैठ नहीं सकती थी क्योंकि सिपाही मुझे छोड़ नहीं सकते थे और स्त्री होनेकी वजहसे पुरुषोंके वेटिंग रूममें भी नहीं बैठ सकती थी। अिसलिये बाहर बेंच पर बैठी। थोरी बंदरके स्टेशन मास्टरके पास पूनासे पैगाम आया था। अिसलिये वे मेरी तलाश कर रहे थे। वे मेरे पास आये और मेरा नाम-पता पूछा। फिर बोले — बहन! तुम्हारी तो बड़ी खोज हो रही है। तुम यहां कैसे आ पहुंची? मैंने सब बात कही। मुझे अपने आफिसमें बैठाकर कुछ खानेका आग्रह किया। मैंने मना किया। केवल नींबूका शरबत लिया। अखबार पढ़नेको दिया वह पढ़ा। ये दो घंटे तो युग जैसे बीते। मैंने बातें करते समय स्टेशन मास्टरसे कहा था कि मेरी बहन बम्बअीमें ही रहती है और बुआ विलेपार्लेमें रहती है। अिसलिये अुन्होंने मुझसे बहुत आग्रह किया कि अगर अुनसे तुम्हारी मिलनेकी अिच्छा हो तो मेरी मोटर अुन्हें जाकर ले आये। लेकिन अिस हालतमें मैं नहीं चाह सकती। यहां तो बापूजीको कितना कष्ट हो? यह सोचकर मैंने अुनकी अिस शिष्टताके लिअे अुनका आभार मानकर अिनकार कर दिया।

शामको ३॥ बजेकी गाड़ीसे मैं पूना जानेके लिअे रवाना हुअी। ६॥ बजे स्टेशन पर पहुंची। लेकिन कमिश्नरको और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टके न होनेसे मुझे आगाखान महल कौन ले जाता? वहां भी काफी देर स्टेशनके आफिसमें बैठना पड़ा। करीब ७ बजे वे लोग आये। आगाखान में ही मनु ? मिलनी। लानेकी बातके लिये मुझसे खूब जिरह की और अनेक प्रश्न पूछे। नागपुरमें मैंने जो हस्ताक्षर किये थे अुनसे मेरे अक्षर। गुजराती और हिन्दी दोनों भाषाओंके हस्ताक्षर लिखाये। लेकिन मेरी यह जांच करना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। क्योंकि जल्दी भी मुझे जल्दी था पहुंचनेकी थी क्योंकि मैं खूब थकी हुअी थी। फिर भी कानूनका पालन करनेके लिअे यह विधि करनी पड़ती है, अतः बाहर बैठ बैठकर वे लोग जांच करना आदि करना चाहते थे।

वहांसे अेक मोटर लारीमें मेरे साथ दशरथ और गोविंद नामके दो सिपाही, दो अंग्रेज सार्जन्ट और कान्स्टेबल और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट बैठे और आगाखां महलकी तरफ रवाना हुअे।

करीब १५ मिनिटमें हम आगाखां महलके सदर दरवाजे पर पहुंचे।

१
आगाखां महलमें

ता० २०–३–'४३ की शामको मैं आगाखां महलमें पहुंची। अिस महलके चारों ओर पुलिसका पहरा लगा हुआ था। जाते ही सदर दरवाजे पर दो गोरे सार्जन्ट भरी बन्दूक लिये खड़े दिखाअी दिये। अुन्होंने हमारी मोटर रोक दी। यहां हमारी पहली तलाशी हुअी। (जेलमें मनुष्यके शरीर पर कोअी निशान हो तो वह भी नाम-पते और गुन्हेके साथ लिखना पड़ता है, ताकि कभी अपराधी भाग जाय तो अुस निशानसे ढूंढ़ा जा सके।) अिस प्रकार मेरे दायें पैरके तलवेके बीचका तिल दिखानेको सार्जन्टने मुझसे कहा। मैंने अुसे दिखानेमें आनाकानी की। मैंने कहा, यदि अितना अधिक अविश्वास हो तो आप नागपुर जेलके अफसरोंको बुलवा लीजिये। मैं यहां दरवाजे पर दो दिन पड़ी रहूंगी। परन्तु अभी तक किसीने मेरी अैसी जांच नहीं की। अिन कान्स्टेबल साहबने भी अैसी जांच नहीं की। अुस कान्स्टेबलने कहा, ये लोग अंग्रेज हैं। हम तो अेक ही हैं। आपको देखते ही पता लग जाता है कि आप गांधी परिवारकी हैं। फिर भी कानूनको मानकर हमने आपके हस्ताक्षर लिवाये। अब आपको भी देर होती है, आप बता दीजिये। अितनेमें आगाखां महलके सुपरिन्टेन्डेन्ट कटेली साहब आ गये। अुन्होंने गोरे सार्जन्टको समझाया, अिसमें अिनका अपमान है। और देखो न, स्टेशन पर ही अिनके हस्ताक्षर लिवाये

गये हैं। दूसरी तरह भी नागपुर सेंट्रल जेलकी तरफसे जो यह रिपोर्ट है अुसके आधार पर भी यह मन मानी ही है। और कोअी नहीं।

अिस पर सार्जेन्ट कुछ शांत हुआ और पहला दरवाजा बड़ी मुश्किलसे खोलनेके बाद पार किया। अुसके बाद आया दूसरा छोटा-सा कांटोंकी बाड़वाला दरवाजा। वहां मेरी पेटी बिस्तर वगैरा रखवाकर कटेली साहबने दिखानेको कहा। अुन्होंने तो अूपर अूपरसे ही देखा। मेरे भत्तेका रुपया सारा ही बच गया था। अुसका हिसाब मेरे साथ आये हुअे सिपाहियोंने दिया। मैंने सारा रुपया अुन सिपाहियोंको दे दिया। वे बड़े खुश हुअे। अन्होंने दूरसे बापूजीके दर्शन भी कर लिये।

यह विधि पांचेक मिनटमें पूरी करके मैं बरामदेकी सीढ़ियों पर चढ़ी। कितने अधिक कमरे थे कि बा और बापूजीका पता लगानेके लिये मैं अेक अेक कमरा पार करती ही चली गयी।

अुस दिन श्रीमती सरोजिनी नायडूके बीमार होनेके कारण डॉक्टरोंकी कुछ धूम-सी मची हुअी थी। अुस कमरेके पीछे वाले या तीसरे कमरेमें अेक लकड़ीके तख्ते पर स्वच्छ गद्दी और तकिया था जिस पर खेसकी चादर बिछी हुअी थी। अुसमें लकड़ीका चम्मच और जलका लोहेका कटोरा लिये बापूजी बैठे थे। साफ दिखाअी देता था कि अभी तक अपवासकी कमजोरी दूर नहीं हुअी है। अुनके सामने ही अेक पलंग था जिस पर बा बैठी थीं। मैंने जाते ही बापूको प्रणाम किया। बड़ी जोरका धप्पा लगाकर हमेशाकी आदतके अनुसार मेरा कान खींचकर बापूजीने कहा "क्यों कहां भाग गयी थी? मैंने साड़ी पहन रखी थी अिसलिअे अन्हें पुरानी बात याद आ गयी। अब भी मनुबहन बन गयी हो न? मगर मुझे न तो साड़ी सजाना है और न मुझे छोटीसी मनुड़ी बनाना है।

बाको प्रणाम करने जाअूं अितनेमें बा ही बापूके पलंग तक पहुंचकर अुस पर बैठ गयी थीं। अिसलिअे अुपरोक्त बातोंके बीचमें मैंने अुनके पैर छुअे। बा बहुत कमजोर और फीकी लगती थीं। बोलीं "क्यों बेटी तू बहुत दूर गयी? जयसुखलाल यहां आये तभी मुझे

१०
अम्माजानकी रिहाई

आगाखा महल पूना
२१-३-'४३

श्रीमती सरोजिनी नायडूकी आज रिहाई होनेवाली थी। हम अुन्हें अम्माजान कहते थे। मेरे लिये तो अुनके नजदीक आनेका यह पहला ही दिन था। और वो घंटेमें ही यह अंतिम बन गया। अुन्होंने अपने प्रेमपूर्ण स्वभावके असरमें अपनी सेवा करनेवाले सिपाहियों कैदियों और जेलके साथियों सभीको परिप्लावित कर दिया था जिसलिये सभीको अुनका वियोग खलने लगा। अम्माजानको बिगड़े हुअे स्वास्थ्यके कारण जेलसे मुक्त किया गया जिसलिये अुन्हें भी क्या आनन्द होता? अुलटे अुनके चेहरे पर दुःख झलक रहा था। मानो अुनके चेहरेसे यह भाव टपक रहा था कि जब आत्मा धीरजपूर्वक सब कुछ सहन करती है तो फिर शरीर क्यों बरदास्त नहीं करता? परन्तु देशके लिये कहनेवाली जिस महान धीरजमाने शरीरसे आज हार मान ली। यह कल्पना की जा सकती है कि जब तमाम साथी जेलोंमें पड़े हों तब अुन्हें स्वास्थ्यके कारण विवश होकर बाहर आना बुरा लगा होगा। मेरे लोभका मामा पार ही नहीं था। मुझे लगा कि भारतके रत्नोंमें से अेक व्यक्तिके जितने ज्यादा नजदीक आनेका सौभाग्य जरा जल्दी प्राप्त हुआ होता तो मुझे कितना अधिक ज्ञान मिलता?

३॥ बजे मोटर अुन्हें लेने आयी। अधिकारी आये। अम्माजानने तैयार होकर बाको नमस्कार किया। बाको जैसा ही दुःख हुआ जैसा कुटुम्बके किसी व्यक्तिके लम्बे समयके लिये सफर पर जाते समय घरके लोगोंको होता है। बाने हाथ जोड़कर अम्माजानसे कहा अब हम दुबारा मिलें या न मिलें जिसलिये यह आखिरी राम राम कर लें। अम्माजानने बाका आलिंगन करके कहा "बा हाथ तो अब

अस्पतालसे जल्दी बाहर आने ही वाली है। परन्तु यह केवल आश्वासन ही था।

मैं प्रणाम करने लगी तो मुझे भुजबन्धन किया — यह सब तेरा ही कसूर है। तुम मेरी बीमारी जो हो गयी। यों कहकर चपत लगानेको हाथ भुठानेकी शक्ति तो नहीं थी फिर भी मीठी चपत मार दी। बाने मेरा पक्ष लिया "मैं कहती थी कि यह अच्छा हुआ जो आयी जिससे आपको आज ही जेलसे छुट्टी मिल गयी। बाहर आकर आप अधिक काम कर सकेंगी अधिक शरीर-सेवा भी कर सकेंगी।"

परन्तु अम्मासाहबको जिस तरह आना कहां अच्छा लगता था? उन्होंने निराशाभरे स्वरमें कहा "नहीं जो बापू जेलमें हैं, सब साथी पिंजड़ेमें बन्द हैं। तब मेरे स्वास्थ्यके कारण मुझे छोड़ा गया जिसमें मेरी क्या बहादुरी है? जिसमें तो उलटी मेरी हेठी है।"

यह अंतिम बात कहकर अम्मासाहबने बापू और दूसरे सब लोगोंसे हाथ जोड़कर जेलसे आज्ञा विदा मांगी। बापूजीने उनके कान मलकर कहा देखना बाहर जाकर तन्दुरुस्ती जल्दी सुधार लेना। नहीं सुधारी तो तुम्हारी खैर नहीं है।

अम्मासाहबकी मोटर चली गयी और हम सब लौट आये। घरमें सब ओर सुनसान लगने लगा। थोड़ी देर सब बैठे फिर जिस कमरेमें अम्मासाहब रहती थीं उसकी पूरी सफाई करायी। जिसमें समय निकल गया।

अम्मासाहब उनके भाग्यमाताकी सेवा करती थीं क्योंकि उन्हें गाना और सिखानेका बहुत शौक था। उनकी जगह अब सुशीला बहनने दिलरुबा बजाना शुरू की। मैं उनकी सहायक बनी।

हमारा साधारण कार्यक्रम जिस प्रकार था सबेरे ५॥ बजे नहाना, दातुन वगैराके निपटकर लगभग ६ बजे तक प्रार्थना। बापूजी २ चम्मच शहद और ८ औंस गरम पानी और १ नींबूका रस मिलाकर प्रातःकाल नाश्ता लेते थे। बादमें अभी तक १ दिनके उपवासकी कमजोरी हालके कारण थोड़ी देर आराम करते थे। बा ६॥ बजे

अुठती। बापूके लिअे दातुन वगैरा तैयार करके और तुलसीका काढ़ा बनाकर मैं अुन्हें देती और बापूके लिअे मोसंबीका रस निकालती। बादमें बापूजीके सुबहके बर्तन और पीकदान वगैरा सबको मांज डालती। जिनमें से बापूजी जलमें डालनेके लिअे बेलका लोहेका जो कटोरा रखते थे अुसे तो अैसा मांजना पड़ता था कि मुंह दिखाअी दे। बापू कहते कि दक्षिण अफ्रीकामें अपना कटोरा मैं अितना बढ़िया मांजते थे कि जेलर और जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट खुश हो जाते थे। और अफ्रीकाकी जेलमें तो नींबूके छिलके या वैसी कोअी चीज देखनेको भी नहीं मिलती थी। रेत और हाथकी ताकतसे ही मांजना पड़ता था। यहां मुझे जितनी दिक्कत नहीं थी जिसलिअे किसी दिन कम अुजला निकलता तो बापू मुझे क्षमा नहीं करते थे। फिर, आगाखां महलमें काम करनेके लिअे २५ कैदी यरवडा जेलसे रोज सुबह ८ बजे लाये जाते और शामको ६ बजे वापस ले जाये जाते थे। परंतु अपना काम आप ही करनेका हमारा नियम था जिसलिअे कैदियोंका विशेष अुपयोग नहीं किया जाता था। बापू कहते — यह कटोरा अैसा अुजला होना चाहिये कि जिसमें मुंह देखकर मैं हजामत बना सकूं।

यह सारा कामकाज करते करते सहज ही ८ बज जाते। अुसके बाद हम लोग ८ से ८॥ तक बापूजीके साथ सैरको जाते महादेव काकाकी समाधि पर फूल चढ़ाते और वहां नित्य गीताके १२ वें अध्यायका पाठ करते।

९ से १ सैरसे आकर मोटीबाके सिरमें कंघी करना अुनको मालिश करके स्नान कराना अुनका तथा बापूजीका भोजन तैयार करना कपड़े धोना खानेके बर्तन धोना और भोजन करना। हमारा बापूजीका और बाका भोजन अलग अलग ढंगसे पकता था।

बापूजीके लिअे अुबला हुआ साग बकरीका दूध बकरीके दूधसे रोज मक्खन निकालना और अुससे सागको घी और सुधारकर रखना होता था। बापू १ ॥ बजे भोजन करते और बा ११ बजे। बाकी जिच्छा होती तो अुनके लिअे थोड़ासा साग घीमें भी छौंक देती थी। कभी कभी मैं पूरीके बराबर रोटी बनाती और वह भी ठेमक बेलती ही।

सायका दूध; दूधमें कभी कभी अंजीर, बाद या खजूर अुबालकर रखती। और हमारे लिये साधारण भोजन। परन्तु यह सब काम सुशीलाबहन प्यारेलालजी और मैं अेक-दूसरेकी मददसे कर लेते। मोटाबहन अपना भोजन — रोटी और साग खुद ही बना लेती।

जब मैं बाकी मालिश वगैरा करती तब सुशीलाबहन और डॉ. गिल्डर बापूजीकी मालिश करते और अुनका रक्तचाप देखनेका काम करते। अिस प्रकार बाका काम मुख्यतः मुझ पर और बापूका काम सुशीलाबहन पर रहता था।

१ से २ के आरामके समय बापूजी और बाके पैरोंमें घी मलती थी। अिस बीच सुशीलाबहन बापूजीके साथ संस्कृत रामायणका अनुवाद करती और अपना संस्कृतका ज्ञान ताजा करतीं। अिस १ घंटेके बीच सबको अनिवार्य रूपसे सोना पड़ता था। कभी मैं या सुशीलाबहन न सोती तो बापू दोनों पर नाराज भी हो जाते और कहते „अभी हाल ही में अैसी खोज हुअी है कि बाकायदा युवा और वृद्ध यदि नित्य दोपहरको आध घंटेके लिये सो जायं तो दुगना काम कर सकते हैं। और मेरा अनुभव भी यही कहता है।"

२ से ३ मुझे सुशीलाबहन पढ़ातीं। बा व बापूजी फिर गरम पानी और शहद लेते, अखबार पढ़ते और खास खास अुपयोगी समाचारों पर नजर डाल लेते।

३ से ४ मैं बाके पास अखबार पढ़ती, डाक लिखती, डाक बाकी हो तो अुसे पढ़ती वगैरा।

४ से ४॥ बापूजी मुझे गीता, भूमिति और गुजराती पढ़ाते। जिसमें अेक दिन गीता, अेक दिन भूमिति और अेक दिन गुजराती अिस तरह बारी बारीसे चलता था।

४॥ से ५ फिर बाको भागवत या रामायण या अुनकी अिच्छाके अनुसार और कुछ पढ़कर सुनाती।

५॥ से ६॥ बापूजीका व हमारा भोजन। बा तो शामको सिर्फ तुलसीका काढ़ा लेतीं और अुसमें अेक बैंगन सिका हुआ कोअी और मसाला डलवातीं।

११
जेलमें पढ़ाअी

आगाखाँ महल पूना
१०-४-४३

जैसा पहले लिखा जा चुका है, पूज्य बापूजी और दूसरे बड़े साथी मेरी पढ़ाअी पर खूब ध्यान देते थे। अिसलिअे आजसे बापूजीने अपने अध्ययनके लिअे अुन पुस्तकोंको पढ़ना शुरू किया जो कराचीमें मेरी पाठशालामें पाठ्य-पुस्तकोंके रूपमें थीं। अिस प्रकार भूमिति और अितिहास-भूगोल तथा गुजराती व्याकरणकी पुस्तकें वे पढ़ने लगे। अपना पढ़ना छोड़कर मेरी पाठ्य-पुस्तकोंके आधार पर मुझे कैसे पढ़ायें, अिस विचारसे बहुत ही ध्यानके साथ जहां भी नोट करना अुचित था वहां पेंसिलसे नोट लगा दिये और दोपहरको मुझे भूमिति और त्रैराशिकके दो तीन सवाल लिखवाये। वे सवाल दूसरे दिन करके लाने थे। मेरे पास भूमितिकी नोटबुक नहीं थी, अिसलिअे मैंने हमारे सुपरिन्टेन्डेन्ट साहबसे मंगवा ली। वह अेक रुपयेकी आयी। वह नोटबुक लेकर मैं सीधी बापूजीके पास गयी और अुन्हें बताअी। अुन्होंने मुझे पहला ही सवाल पूछा, कितनेमें आयी?

मैंने कहा, मुझे मालूम नहीं।

बापू बोले, जा, पूछकर मुझे खबर दे कि कितनेमें मिली।

कटेली साहब तो बापूके स्वभावको जानते थे, अिसलिअे मुझसे बोले, बापूजीको कुछ भी कहनेकी जरूरत नहीं है।

मैंने कहा, मंगा तो मैंने अुनसे पूछे बिना मंगा ली और अब न बताअूं और अुसमें लेसन बिना जाअूं तो बापू मुझे खूब डाटेंगे।” अिसलिअे अुन्होंने बिल मुझे सौंप दिया।

अेक रुपयेका बिल देखकर बापू मुझसे कहने लगे, “तू यह समझती होगी कि हमारा पैसा नहीं खर्च हो रहा है, अथवा सरकारका

हो रहा है। और हमें जितनी सुविधा मिली है, जिसलिये चाहे जो चीज मंगवानेमें हर्ज नहीं है। परन्तु यह तेरी बड़ी भूल है। यह पैसा क्या सरकार कहींसे लाती? असलमें ये हमारे ही पैसे खर्च होते हैं। जिस तरह तो हमीं अपनेको बेवकूफ बनाते हैं। जिसके अलावा अेक बड़ी बुरी आदत तो यह पड़ती है कि जो सुविधा मिले अुसका अपव्यय या दुरुपयोग किया जाय। अच्छा हुआ कि तूने नोटबुक मुझे बताये बिना काममें नहीं ली। मेरा जितना डर तो लगा। तुझे आज कल पाठशालाके नियम जहाँ पालने पड़ते हैं जो बड़ी पक्की पुट्ठेकी भूमितिकी नोटबुक चाहिये? हमारे पास तारीखके पन्ने बहुत पड़े हैं जिनके पीछेके हिस्से बिलकुल कोरे हैं। तू अुन पर सवाल किया कर। यह नोटबुक लौटा दे।

यह नोटबुक मैंने लौटा देनेके लिअ कटेली साहबको दी। वे कहने लगे — बापूजी भी खूब करते हैं। मैं अपने पास रख लूंगा। तुम्हें चाहिये तब ले जाना। परंतु दो बजते ही कटेली साहब डाक और अखबार लेकर बापूजीके पास आये। अुस समय बापूजीने अुनसे पूछा — क्यों अुसने नोटबुक आपको लौटा दी?

अुन्होंने कहा — हाँ लौटा दी। मगर बेचारीको अिस्तेमाल करने दीजिये न? सम्हालकर रखेगी तो वापस काम आयगी।

बापूजी बोले — मालूम होता है आप मुझे बिगाड़ना चाहते हैं। मगर अुसे सम्हालकर रखनेकी परवाह होगी तो क्या आप मानते हैं कि ये तारीखके पन्ने नहीं रखे जा सकते? अुसे तो वापस ही कर देना चाहिये। अुसका नकद अेक रुपया लौटा जाय या नहीं जिसकी मुझे खबर दीजिये यद्यपि शामको मैं जमादारसे तो पूछूंगा ही।

शाम हुअी। बापू और हम सब बाहर घूमने निकले। फिर नोटबुकका प्रकरण शुरू हुआ — तू समझ गयी न तुझे जिससे कितना बड़ा सबक मिला? (१) यह अेक रुपया कौन देता है? किसे चूसकर यह सारा खर्च पूरा किया जाता है? जिस बारेमें खर्चका रुपया कौड़ी दिखायनेमें नहीं आता। जिस प्रकार जिसमें मैंने तुझे

मितिहास सिखाया। (२) और जितनी चाहिये अुससे अधिक किसी भी तरहकी सुविधा मिले तो भी अुसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। अिस प्रकार मानवताके अनेक लक्षणोंमें से सुने अेक गुण सीखा। (३) और बेकार पड़ी हुआी चीजका सुन्दर अुपयोग होगा। ये कैलेण्डरके पन्ने यों ही फेंक दिये जाते लेकिन अगर काममें आ सकेंगे तो जब वे बचाकर रखे जायेंगे। और फेंके भी जायेंगे तो अुपयोगमें आनेके बाद जिसमें कोअी हर्ज नहीं। (४) और कभी तेरा बाहर जाना हो जाय और तू बाजारमें पढ़ने जाय तो पक्के पुट्ठेकी जितनी सुन्दर नोटबुक जिसमें सवाल किये हुए हों कोअी चुरा भी सकता है (हमारे समयमें बहुत बड़ा डैसा होता था)। लेकिन जिन कैलेण्डरके पन्नोंको चुरानेका किसीका भी मन न होगा। बोल यह सबसे बड़ा काम हुआ कि नहीं?

यह बात हो ही रही थी कि जमादार साहब आये और मकर डंड रुपया वापस लानेकी खुशखबर सुना गये। तो भी यह नोटबुकका प्रकरण पूरा नहीं हुआ। बापूने विनोदमें कहा

अगर तुझे शर्म आये कि जिन तारीख बतानेवाले पन्नोंमें भी नहीं अंग्रेजी हाअीस्कूलमें जानेवाला सवाल कर सकता है तो मैं भी कितने वर्षोंसे आज तुझे अुमिति पढ़ा रहा हूं? जिस प्रकार मैं भी अब सीखनेवाला माना जाअूंगा और तू भी सीखनेवाली मानी जायगी। जिसलिये मेरा नाम लेकर कहना कि बूढ़ोंका तो कैसी भी चीजसे काम चल जाता है।

अब तो मैं जिन तारीखवाले पन्नोंको जिस तरह सवाल कर रखती हूं जैसे कोअी रुपयों या जवाहरातका खजाना संभाल कर रखता है। जिन पन्नोंमें जितने ही सवाल और बातचीतया पू॰ बापूके हाथकी चीजें हुअी हैं। जिसलिये बापूने जो आखिरी बात कही थी कि आकर्षित करनेवाली अच्छी पक्के पुट्ठेकी नोटबुक हो तो किसीका चुरानेका मन हो सकता है यह बिलकुल सही है। किसीको चोरी करनेका प्रोत्साहन नहीं मिलता और यह अमूल्य वस्तु सुरक्षित भी रहती है।

आगाखां महल, पूना,
११–४–'४३

हमारी रोजकी डायरीमें मैंने भूमितिकी नोटबुक संबंधी बात नहीं लिखी थी। बापूजीने मुझे लिखनेके लिये कहा और यह डायरी रोज शामको अपने पास रख देनेकी हिदायत दी।

डायरीका अेक नमूना

ता० ११–८–४२

४ बजे बापूजीको अुठाया।

५ से ५॥ दातुन वगैरा और प्रार्थना।

५॥ से ६॥ पढ़ना था लेकिन आंखोंमें नींद आ गयी और सो गयी।

७ से ८ बापूजीके लिये रस निकाला, मीराबहनके लिये दवा डालकर चाय बनायी, सब बरतन मांजे।

८ से ८॥ आज ११वीं अगस्त होनेसे बापूजीने झंडावंदन करवाया। झंडा अूंचा रहे हमारा गीत गाया और बापूजीके साथ घूमे।

८॥ से पूज्य बाके सिरमें तेल मला और बालोंमें कंघी की।

९ से १०॥ पूज्य बाकी मालिश की तथा स्नान कराया और अपने तथा बाके कपड़े धोये।

१०॥ से ११ बापूजीके लिये खाखरा रोटियां बनायीं, साग और दूध तैयार किया और छाछ बिलोकर मक्खन निकाला।

११ से ११॥ गीताजीका पाठ किया।

११॥ से १२॥ बापूजीको खिलाकर बाके साथ हम सबने खाना खाया।

१२॥ से १ पूज्य बापूजी और बाके पैरोंमें घी मला। कल रातको भी बाके सारे शरीरमें बहुत जोरका दर्द था, बुखार जैसा लगता था और अभी भी था, जिसलिये अुनका शरीर दबाया।

१ से १॥ बाको अखबार पढ़कर सुनाया और बापूजीसे १५ मिनिट बाद अुठा देनेका कहकर सो गयी। १५ मिनटमें बापूजीने अुठा लिया।

१॥ से २॥ बा और बापूजीको शहदका गरम पानी पिलाकर काता। बापूजीका और मेरा सूत अटेरन पर अुतारा। बापूजीके २२ तार निकले। लालटेनकी सफाई वगैरा की।

२॥ से ३॥ कल गुजराती व्याकरणकी बापूजी लिखित परीक्षा लेंगे अिसलिये यह घंटा पढ़नेके लिये मुझे दिया गया। अतः गुजराती व्याकरण पढ़ा।

३॥ से ४ सुशीलाबहनसे अंग्रेजी पढ़ी।

४ से ५ बकरी आओ और अुसका दूध आते ही अुसे गरम करके अुसकी अलग व्यवस्था की। शाक सुधारा और शामकी रसोई बनाओ। सब खाना खाकर निपट गये। (सब कैदियोंको खिलाया।)

५ से ५॥ ग्रामोफोन पर भजनोंके रिकार्ड बजाये। बाने लेटे लेटे सुने।

५॥ से ७ शामके बर्तन मांजे बा और बापूजीके लिये दातुनकी कूंची तैयार की कपड़ोंकी तह की बाके लिये अेक साड़ीकी किनारी काढ़नी शुरू की।

७॥ से ८ बैडमिंटन खेलकर बादमें दस मिनिट बापूजीके साथ घूमे।

८ से ८॥ प्रार्थना। प्रार्थनाके बाद बिस्तर लगाये। बाकी मालिश की। पूज्य बापूजीके सिरमें तेल मलकर पैर दबाये। मैंने बापूजीसे कहा रोज रातको मुझे अेक कहानी सुनाया करिये। अिस पर बापूजीने मेरी बात रखनेके लिये चिड़ा-चिड़ीकी कहानी सुनाओ। अिस तरह थोड़ी देर मजाक करके ९ बजे बापूजी सोये। बाकी तबीयत आज अच्छी नहीं रही। पसलीमें बहुत दर्द रहा। अिसलिये आध घंटे तक दबाया। अिससे कुछ शांति मिलने पर वे सो गयी। अुन्हें खांसी थी।

१२
सेवाके नियम

आगाखां महल, पूना
१-५-'४१

मुझे पिछले चार दिनसे बुखार आता था। आज रातको अधिक था। बापूजी रातको मेरे पास आये। मेरा सिर दबाया। मैंने बापूजीको सो जानेके लिअे बहुत आग्रह किया। वे बोले "तू मेरी दुगनी सेवा कर लेना जिससे पापसे मुक्त हो जायगी। सुबह अरंडीका तेल पी ले तो तबीयत अच्छी हो जायगी। अच्छी हो जायगी तो किसीको तेरी सेवा नहीं करनी पड़ेगी। तू सबकी सेवा कर सकेगी, जिसलिअे पुण्योंका ढेर हो जायगा।"

मैं अरंडीका तेल पीनेमें आनाकानी कर रही थी जिसलिअे सिर दबाते-दबाते बापूजीने अूपरवाली बात कही और सुबह अरंडीका तेल पी लेना मंजूर करवा लिया। सुबह ५। बजे अरंडीका प्याला पानीका लोटा और नींबू लेकर बापूजी मेरे बिस्तरके पास आये। और सोमवारका मौन होनेसे बोल न सकनेके कारण मुझे खूब हिलाया। जागता चोर भला क्यों अुठने लगा। मैं तो जैसे गहरी नींदमें सोजी होअूं जिस तरह — यद्यपि थोड़ी देर बाद तो अरंडीका तेल पीना ही था — ढोंग करके पड़ी रही। पर बापूजी जिस तरह छोड़नेवाले नहीं थे। मेरी नाक पकड़ी कि आसानीसे मुंह खुल गया और मुझे हंसी आ गयी। अतः अरंडीका तेल पिलाकर ही छोड़ा। आज पहली ही बार बापूजीके हाथसे अरंडीका तेल पीना पड़ा। बापूजीने मौन होनेके कारण पर्चे पर लिख दिया "बच्चे तो बूढ़ोंको बनाना ही चाहते हैं लेकिन बच्चे और बूढ़े बराबर जिस कहावतके अनुसार बराबरी वालोंमें भिड़न्त होती ही है। अुस पर मैं ठहरा तेरा बापू जिसलिअे मेरे सामने तो तेरा ढोंग कैसे चल सकता था? जैसे बच्चोंका

आगाखां महल, पूना
७–५–४३

मेरी आंख खूब लाल रहती थी और चश्मेसे अुल्टा सिर दर्द होता था। चश्मा न लगाती तो दूरका देखनेमें कठिनाओ होती और आंखोंसे पानी झरने लगता था। अिसलिओ बापूजीने नया प्रयोग शुरू किया — आंखों पर बारबार पानी छींटना और जब जब समय मिले तब आंखों पर मिट्टीकी पट्टी रखकर आंखें बंद करना। घूमते समय मेरी आंखें बंद रखवाते मेरे कंधे पर अुनका हाथ होनेसे कहीं पत्थर गिरने या ठोकर खानेका डर तो रहता ही नहीं था। परंतु आंखोंको बचाकर अभ्यास बन्द रखना मेरे लिअे ठीक होगा या नहीं अिसके बारेमें मैं खूब प्रश्न करती। पूज्य बापूजीको यह पसंद नहीं था। अिसलिअे अुनके पास पढ़ने बैठती तब वे संस्कृतके कुछ श्लोक संधि संधि-नियम सब मुझे अपने मुंहसे कहते। पढ़कर सुनाते। और आंख पर मिट्टी रखवाते।

मैंने कहा: लेकिन पढ़े बिना याद ही कैसे रहेगा?

बापूजी बोले: यदि ऐसा हो तो मेरी गलती है। मैं पढ़ानेमें कितना कच्चा माना जाऊंगा।

मैंने कहा: लेकिन सबसे अलग अलग विषय पढ़ूं और सभी मुझे किसी तरह पढ़ायें और याद न रहे, तो क्या वे सब बेकार नहीं जायंगे?

हां। लेकिन अुस वक्त तेरा मन जो पढ़कर सुनाया जाय अुसमें लगना चाहिये। फिर भी अगर तुझे याद न रहे तो मैं शिक्षकका पहला दोष मानूंगा। शिक्षक पढ़ानेमें ऐसा कुशल होना चाहिये कि विद्यार्थीको पढ़ाया हुआ विषय अपने आप याद रह जाय। विद्यार्थी खेलते-कूदते सीख ले और अुसे किसी भी प्रकारकी रटाओ न करनी पड़े। मैंने फिनिक्समें जिस तरह कितने ही बच्चोंको पढ़ाया है। अुस अनुभवके बाद ही मैं कहता हूं कि विद्यार्थी कमजोर हो तो अुसमें शिक्षक और शिक्षाका अुत्तरदायित्व तीन चौथाओ है और चतुर्थांश

शरीरको मजबूत बनाना चाहिये। यदि शरीर मजबूत न हो तो हमें अपनी कमजोरियां नम्रतासे कबूल करके शरीरकी आवश्यकतायें पूरी करके शरीर टूट न जाय जिसका ध्यान रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। मैं जानता हूं कि तुझे रातमें जागना पड़ता है। बुखार आ गया। तेरा वजन ९५ से ९१ पौंड हो गया। आंखें ठीक ठीक काम नहीं देती। मेरा प्रयत्न शुरू न होता तो आखिर जाने क्या होता। लेकिन मुझे डॉ. गिल्डर और सुशीलाने चेतावनी दी। अभी भी कुनैनकी खुराक पर तू जी रही है वहाँ मलेरिया कब तक चल सकता है? जिसलिये मैंने तुझे १२ से १ बजे तक सोनेकी आज्ञा दी। पर तू दूसरा काम करने लगी। अपनी शर्त तुझे याद है न कि मैं कहूंगा वैसा ही तू किया करेगी? परन्तु तूने नियम बदल दिया जिसलिये मैंने भी बदल दिया। जिसे सेवा करनी है उसे कोअी वैसा मजबूत शरीर बनाना ही पड़ता है। यदि तेरा शरीर वैसा मजबूत और तन्दुरुस्त बन जाय कि चाहे जैसा खानेको मिले चाहे जितना कम खानेको मिले तो भी कमजोर न हो तो मुझे कोअी अेतराज नहीं है। फिर मैं तेरे लिये कोअी नियम नहीं बनाअूंगा। नींद न आवे तो भी आंखें बंद करके चाहे यहां मेरे पास ही सोना मंजूर करे तो भी सोनेका हक तेरा बना रहेगा। नहीं तो मेरी कोअी सेवा तू नहीं कर सकती। सोनेके लिये कही हुई मेरी बातोंका गलत अुपयोग करके सो जाना। मैं तुझे क्षमा दूंगा। तेरे आजके जिस अपराधको क्षमा करनेकी मेरी जरा भी अिच्छा नहीं थी परन्तु तेरा करुणाभरा मुंह देखकर दया आ गयी। जिसलिये जिस अपराधके होते हुअे भी तुझे मेरी शर्त मंजूर हो तो तू भी मस्त। अेक पैर तो सुशीलाने पूरा कर दिया दूसरे पैरसे तू मस्त और आजके पैरोंमें भी मजबूत नहीं हो जा। नियम पालन करनेके लिये बनाया जाता है।

मुझे स्वप्नमें भी खयाल न था कि मेरे न सोनेकी बात जितना बड़ा रूप धारण कर लेगी। मैं अपना काम नहीं कर रही थी बल्कि ग्मोसीबहनकी अलमारियां साफ कर रही थी। मेरे मनमें यही भाव था कि कोअी दूसरा समय नहीं मिलता जिसलिये अगर अेक दिन न सोअूं

१२
शिक्षिका बा

आगाखां महल पूना
११-९-'४३

आज रातको पूज्य बाकी तबीयत बिगड़ गयी थी। रातको १ बजे अुन्होंने मुझे जगाया। अुनकी पीठ और सिरमें दर्द था। १ से ५॥ तक मैं अुनके पास बैठी रही। ५॥ से ६ प्रार्थना और प्रार्थनाके बादका जो काम मुझे करना था अुसे सुशीलाबहनने पूरा करनेको कहा। मुझे अुन्होंने सोनेका हुक्म दिया। पर अुनकी बात पर कोअी ध्यान न देकर मैं काममें लग गयी। अुन्होंने बासे कहा। बाने कहा — हां बेचारी अब मेरी सेवा करके थक गयी होगी और जेलसे छूटनेका मन हो रहा होगा। अिसीलिये सोती नहीं और काममें जुट गयी है जिससे बीमार पड़े तो सरकार छोड़ दे। अिसमें अुसका क्या दोष? अुसका अपनी बहनोंसे मिलनेका मन होना स्वाभाविक ही है। मुझे सुलानेका बाने यह अुत्तम अुपाय ढूंढ निकाला। मेरे मनमें यह डर था कि बा डांटेंगी। अुसके बदले अुन्होंने अुलटी बातें सुनाअीं और अैसी सुनाअीं कि मुझे लगे कि जिस तरह अगर बा अुलटा ही समझती हैं तो मैं क्यों न सो जाअूं। मेरे मनमें छूटनेकी जरा भी अुत्सुकता नहीं थी फिर बाने अैसी बात कैसे कह दी? मैं चिढ़कर सो तो गयी लेकिन यह बात मैंने बापूजीसे कह दी। बापूजीने कहा — बाकी यही तो खूबी है कि सीधे चिढ़नेके बजाय परोक्ष रूपसे दूसरे पर अैसा प्रहार करना कि वह सीधा पड़े। हमारे यहां अेक पुरानी कहावत है — लड़कीको कहकर बहूको सुनाना। सयानी सास आजकलकी तरह तुरन्त नहीं डांटती थी। जो कुछ कहना होता वह अिस तरह लड़कीको कहती कि बहू सुन ले। और बहू भी अैसी सयानी होती थी कि तुरन्त समझ जाती। अुसी तरह बाका कहनेमें सारा मतलब था। अगर तुझे डांटतीं तो तू रो पड़ती। और

करते। अिसलिअे चाय डालनेके रिवाजसे अुबाले हुअे पानीका अन्दाज आ जाता है। अैसी अैसी बातें बापूजी अफ्रीकामें बच्चोंको सिखाते थे अिसलिअे मैं भी जानती हूं। लेकिन अैसे पाठ बापूजी कहानीके रूपमें लड़कोंको सिखाते थे जिससे लड़के खेल-खेलमें सीख जाते थे। अिसी तरह किसीको भी पढ़-रट कर दिमाग खाली नहीं करना पड़ता था।

अिस तरह बाने मुझे भूगोलका पाठ तबीयत खराब होते हुअे भी बिस्तर पर लेटे-लेटे और खांसते-खांसते पढ़ा दिया।

शामको बापूजीने दिनभरमें मैंने जो कुछ पढ़ा अुसके बारेमें पूछा। मैंने कहा, "आज तो बाने बड़े प्रेमसे मुझे अेक पाठ पढ़ाया।" और अुबाले हुअे पानीकी सारी बात मैंने कह दी।

बापूजीने कहा, "न जाने कितने साल पहले मैंने यह पाठ फिनिक्समें सिखाया होगा, पर बा बूढ़ी हो गयी तो भी अुसे नहीं भूली।"

मैंने हंसते-हंसते कहा, "अिसमें होशियार कौन? आप या बा? जिसने जितना याद रखा वही होशियार है न?"

"हां, अैसा कहकर बाको प्रिय बनना हो तो बन जा।" कहकर बापूजी हंसने लगे। "लेकिन मैंने तुझे कहा न कि मेरा तरीका अुलटा है। विद्यार्थियोंको कोअी विषय न आये तो मैं शिक्षकोंको ही अधिक दोष देता हूं। अिसलिअे अपने तरीकेसे मैं ज्यादा होशियार हुआ न?" बाकी तबीयतके समाचार जाननेके लिअे बापूजी बाके पास आये। (बाकी खाट भी बापूजीके कमरेमें ही थी। परन्तु हम घूमने गये अुस बीच कुछ नया काम तो नहीं हुआ यह जाननेके लिअे बाकी खाटके पास आये।)

कहा, "आज तो तुमने अिस लड़कीको पढ़ाया है। अब कौन कह सकता है कि तुम बीमार हो? और पढ़ानेमें भी मैंने फिनिक्समें कुछ बात कही होगी अुसको याद रखकर सिखाया न? पर यह लड़की तुम्हारा [illegible] तर्क कर रही है कि बा कितनी होशियार है जो कितना सब याद रखती है। तब मैंने अुससे अुलटा तर्क करके कहा कि मैं कितना होशियार हूं [illegible] पढ़ाया कि [illegible] पढ़ाया कि आज बोली [illegible] [illegible] अब मन [illegible] और बाकी [illegible] अभी तक सब याद रखकर

अितने मुझे आदर्शवाली हो सकती है, अिसकी कल्पना भी मुझ जैसी लड़कीको कैसे हो सकती थी?

आगाखां महल पूना
१९–५–'४४

मैंने बापूजीसे रोज अेक कहानी सुनानेके लिअे कहा। पहले तो अुन्होंने मेरी बात हंसीमें अुड़ा दी — अेक था चिड़ा और अेक थी चिड़ी। अितनेमें सुशीलाबहन आयीं। बापूजीसे बोलीं यह कैसी कहानी? अिसके बजाय तो आप अपनी ही बातें सुनाअिये। बापूजी भी बहुत खुश थे। अुन्होंने अेक मजेदार बात कही "मैं विलायत जानेवाली स्टीमरमें बैठा। मैट्रिक पास करके गया था लेकिन अंग्रेजी अितनी अच्छी नहीं थी कि सबके साथ खुलकर बात कर सकूं। और शरम भी आती थी कि कहीं बोलनेमें भूल हो जाय तो लोग हंसेंगे। अिसलिअे अधिकतर मैं अपने केबिनमें ही बैठा रहता। परन्तु ज्यों ज्यों मैं गोरे लोगोंको देखता त्यों त्यों मैं अपने आपको काला समझने लगा। फिर मैं स्नानागारमें गया। वहां गोरा बननेके लिअे खूब साबुन लगाया ताकि कुछ तो खूबसूरत मालूम होअूं! परन्तु अेक तो समुद्रकी हवा और मुंह पर साबुन फिर क्या पूछना? अेकदम दाह हो गया और अितना हो गया कि मैं तंग आ गया। लन्दन पहुंचकर डॉ० प्राणजीवन मेहतासे बात करनेमें भी शरमाया क्योंकि स्टीमर पर पराक्रम ही अैसा किया था। अन्तमें मैंने अुनसे सारी बात कही। अुन्होंने दवा तो दी परन्तु खूब फटकारा भी।

हम तो यह बात सुनकर अितनी हंसीं कि पेटमें बल पड़ गये।

आगाखां महल पूना
२०–५–'४४

बापूजीने मैक्सवेलको जो पत्र लिखा अुसकी बात कही "अभी वे कुछ भी करें, परन्तु अब तो अिन लोगोंको भारत छोड़ना ही पड़ेगा। मुझे विश्वास है कि भारतको अब ये लोग अधिक समय तक गुलामीमें नहीं

लोगोंके लिये बड़ा आराम कर दिया है। (जेलमें बा और बापूके सिवाय सब शामिल थे — ये दोनों देखते थे।) बचपनके खेल ताजा कर रहे हैं। आप पर सरकारकी कितनी कृपा है!"

डॉ. गिल्डर बोले — बा, मनु मुझे आज आनन्दी लोगोंकी कहानी पढ़नेको दे गयी थी। बालवार्ताओंकी जिस पुस्तकमें मुझे यह कहानी बहुत ही पसन्द आयी। (डॉ. गिल्डर पारसी होनेके कारण गुजराती जानते अवश्य थे, परन्तु गुजराती लिखने-पढ़नेकी आदत कम थी। मेरे हाथमें यह पुस्तक आते ही मैं उन्हें मनोरंजनके लिए पढ़नेको दे आयी थी।)

बाने कहा — आप बच्चोंको मजा आये जैसी चीजें तो कहीं पढ़ न रहे हो? जो अब आप कहानी पढ़ने बैठे हैं। लेकिन आप ये पुस्तकें और कब पढ़ते? कि जिससे पुस्तकका भी सौभाग्य है कि आप जैसे बड़े डॉक्टर इसे इतने शौकसे पढ़ रहे हैं।

डॉक्टर — परन्तु मेरा सौभाग्य और अंग्रेज सरकारकी मेहरबानी है कि बचपनके अधूरे रहे शौक अब बुढ़ापेमें ताजा हो रहे हैं। बाहर रहने पर जिन्दगीकी झंझटें और दौड़धूप पीछे लगी रहती हैं?

इस प्रकार हमारा परिवार आनन्दसे दिन बिता रहा था। भले ही मैं सबसे छोटी थी, परन्तु ये सब इतने छोटे छोटे मित्र बन जाते कि उस समय मैं यह भूल जाती कि बापू, बा, डॉक्टर गिल्डर, कटेली साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन कितने बड़े हैं, विद्वान हैं, नेता हैं और राष्ट्रके निर्माता हैं।

मय बननेकी कोशिश करनेका सुन्दर अवसर है। प्रार्थना आत्माका भोजन है। मैं तुझे यह भोजन देना चाहता हूं। परन्तु जैसे शरीर रक्षाके लिअे दो दिन भोजन करें और चार दिन न करें तो शरीर कमजोर हो जाता है, वैसे ही प्रार्थना भी दो दिन करें और चार दिन न करें तो आत्माको अुसका पोषक तत्त्व नहीं मिलेगा और आत्मा भी शरीरकी तरह दुर्बल हो जायगी। हमेशा रातको सोते समय मनमें यह संकल्प करना चाहिये कि कुछ भी हो जाय प्रार्थनाके समय तो अुठना ही है। जिससे तू अपने आप अुठ जाया करेगी। यह बात मैं तुझे सुबह अुठते ही कहनेवाला था परन्तु कामसें भूल गया। अब सोचा कि मेरी और बाकी मालिशके समयमें से पांच मिनट कम करके भी यह बात तुझे समझा दूं। जिसलिअे समझा दी।

जिसके बाद मैं रातको सोनेसे पहले हमेशा निश्चय करके सोती कि प्रार्थनाके समय अुठना ही है और जिस संकल्पके आधार पर अक्सर अपने आप जग जाती। कभी न जागती तो बापूजी जगाने आते ही थे। अुनके आते ही अुठनेकी आदत पड़ गयी। जिससे प्रार्थनामें मैं क्वचित् ही अनुपस्थित रहती।

पूज्य बाने अपने हस्ताक्षरोंवाला सबसे पहला पत्र आश्रममें रहनेवाली कांतिबहन गांधीके नाम लिखवाया था। परन्तु अुसका कोअी अुत्तर नहीं आया। आश्रममें रहनेवाले लोगोंको ही बा अपने कुटुम्बीजन मानती थीं। परन्तु जेलके नियमानुसार सगे-सम्बन्धियोंको ही पत्र लिखा जा सकता था। यह शर्त किसीने मंजूर नहीं की थी। परन्तु मेरे आगाखां महलमें आनेके बाद पू० बाने अपवादके तौर पर यह नियम बदल दिया था। और मैं तो नागपुर जेलमें भी सभीके सम्बन्धियोंको पत्र लिखती थी। जिस प्रकार मेरे लिअे तो आगाखां महलके नियम पालनेकी बात ही नहीं थी। जिसलिअे मैं और बा पत्र लिखती थीं। बा सारा पत्र मुझसे लिखवाती और नीचे अपना और बापूजीका नाम खुद ही लिख देती। जिससे आश्रमवासियोंके लिअे पू० बापूजीके पत्रकी कमी पूरी हो जाती थी। आज जिसी प्रकार हम सब कांतिबहन गांधीके नाम पत्र लिखवाया। असमें आश्रम

आश्रमवासियोंके लिये कितनी सावधानीसे याद कर करके समाचार लिखवाये जिसका नमूना नीचेके पत्रसे मिलता है (मैंने उसकी नकल रख ली थी)

चि० काशी

तुम्हारे दोनों पोस्टकार्ड मिले। पढ़कर आनन्द हुआ। सबकी अपेक्षा तुम्हारा ही पत्र नियमित आता है। पढ़कर बहुत ही खुशी होती है। ता० १४-५-४३ का पत्र आज मिला। इस प्रकार पत्र बड़ी देरसे मिलते हैं। वहां सब अच्छे हैं यह जानकर आनन्द हुआ। किशोरलालभाईका स्वास्थ्य अच्छा है यह आनन्दकी बात है। उससे पहलेका मेरे हस्ताक्षरोंवाला पत्र तुम्हें मिला या नहीं?

आर्यनायकम्‌जी नागपुरसे आ गये हैं इसलिये तुम्हें और आशादेवीको मेरे आशीर्वाद। पत्र लिखो तो प्रभु तथा बबाको मेरे आशीर्वाद लिख देना। कल लक्ष्मीका पत्र आया था। लिखती है कि कभी कभी बबाके पत्र आते हैं। मैं यहां सब मजेमें हूं। मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी है। मेरी चिन्ता न करना। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। बन्नू मजेमें होगा। यहां प्रार्थनाके समय तुम सबको खूब ही याद करती हूं। चि० कहाना (कनु गांधी) क्या लिखता रहता है? सूत तो सभी थोड़ा थोड़ा कातते हैं। कहना कि थोड़ा तू भी कात। अमतुस्सलाम-भाभीसे पढ़ता है या नहीं? लक्ष्मीका काम करने जाता है या नहीं? वैसे मेरे लिये तो यह तरसना ही होगा परन्तु मैं कैसे आऊं? चि० कनुसे कहना कि तू सबसे हिलमिलकर रहा कर। लीलावतीसे कहना कि तुम्हें उसका सन्देश मिल गया है। उससे कहना कि तुझे पसन्द हो सो करे। वैसे मेरा तो खयाल है कि वह कालेजमें भरती हो जाय। वह तो लम्बा रास्ता है। मदनलालको आशीर्वाद। लीलावती चीमनीबहन पारवा आनन्द, बन्नू वगैरा सभी आश्रमवासियोंको मेरा आशीर्वाद। हस्तपत्रजी जैसे भी हो सके वैसे कहानाको अच्छी तरह रखें फिर पसन्द न हो तो भेज दें। नागपुरमें सब बहनोंको आशीर्वाद लिखना।

बाके आशीर्वाद तथा
बापूजीके शुभ आशीर्वाद

अिससे मैं छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जाअूँ तो भी क्या हुआ? अैसा लगे कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी तो काम भले कितना ही हलका हो तो भी अुसे करना सबका फर्ज है। हम (महादेवभाओीकी) समाधि पर बारहवें अध्यायका रोज पाठ करते हैं अुसमें भगवान्ने क्या कहा है? —

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः॥

जिसे हर्ष-शोक राग-द्वेष नहीं और जो अिसकी चिन्ता नहीं करता कि कोअी भी काम सफल होगा या नहीं और कार्यसिद्धिके लिअे किसी भी तरहकी आशा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह काम करूँगा तो मुझे बड़ा पद मिलेगा या रुपया मिलेगा अथवा मेरी वाहवाही होगी अिस प्रकार कर्तव्यके पीछे जिसकी किसी भी प्रकारकी आशा नहीं — जिसकी दृष्टिमें शत्रु-मित्र सभी समान हैं और मान-अपमान सब अेकसा है। भक्त तो सब कुछ भगवान्के भरोसे ही छोड़ दे। तभी हम भगवान्के सच्चे भक्त बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह भजन गाते हैं

साधो मनका मान त्यागो।
काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अहनिशि भागो।
सुख दुःख दोनों सम करि जानै और मान अपमाना
हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जगतत्त्व पिछाना।
अस्तुति निन्दा दोअू त्यागै खोजै पद निरबाना
जन नानक यह खेल कठिन है कोअू गुरमुख जाना।

(यह सारा भजन बापूजी बोल गये) यह भजन बड़ा महत्त्वपूर्ण है परन्तु यह बालके लिअे नहीं है। अिसका अर्थ और मैंने तुझे गीताके

बारहवें अध्यायके श्लोकोंका जो अर्थ बताया वह ठीक ही है। परन्तु अिसे जो ठीक आचरणमें ले आते हैं अुन्हें मनोवांछा आनन्द आता है। अिसके भीतर जो पड़ता है वह महासुखका अनुभव करता है। लेकिन देखनेवालेको अुस पर दया आती है। मैं तो अिसके भीतर पड़कर अिसे आचरणमें अुतारनेके प्रयत्नमें लगा हूं अिसलिये आज जब यह खबर आओ कि सरदार जिनाहसाहबका पत्र अुनके पास नहीं पहुंचायगी तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन तू देखनेवाली है, अिसलिये तुझे अुस पर दया आती है कि बापूका कितना अपमान हुआ। और मुझे सीख देन आयी कि आप पत्र न लिखते तो अच्छा होता। परन्तु हरिका मार्ग वीरोंका मार्ग है अिसमें कायरोंका काम नहीं। अिसलिये अीश्वरको जो करना होगा करेगा हम क्यों चिन्ता करके अुसके प्रति अपनी श्रद्धा कम करें और अपने दिमागको अैसी झंझटमें फंसायें ?

यह सारी बात मुझे बापूजीने बहुत ही रसपूर्वक और ज्ञान पूर्वक समझाओ। अन्तमें बापूजीने मुझसे कहा यदि तू अैसे प्रश्न करती रहेगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। अिससे तुझे ज्ञान तो प्राप्त होगा ही साथ ही अीश्वरकी पहचान भी होगी और जिस ढंगसे मैं तुझे तैयार करना चाहता हूं अुस ढंगसे तैयार कर सकूंगा। यह बात अिसीलिये कहता हूं कि तुझे लगता होगा कि बापूजीको अैसी बात मैंने क्यों कही ? मेरे मनमें शायद यह विचार हो कि मैंने तो हंसते-हंसते यह बात कही थी फिर बापूजीने मुझे अिस तरह अुलहना क्यों दिया ? अिसलिये तुझे निःसंकोच बनानेको अितना कह देता हूं।

सचमुच मुझे अैसा ही लगा था कि मैंने पहलेको तो यह दिया कि जिनासाहबको आपने पत्र क्यों लिखा ? अिसमें थोड़ी हद तक मजाक भी था। लेकिन मजाकमें यह गाम्भीर्य आ गया और मनमें बापूजीसे प्रश्न पूछनेका पश्चात्ताप होने लगा। बापूजी मानो मुझे जान गये। अुन्होंने मुझे निश्चिन्त कर दिया जिससे मेरे आनन्दका पार नहीं रहा।

अिस प्रकार पू॰ बाका यह एक ही पत्र बताता है कि अुनके लिये आश्रमवासी क्या थे?

[अिस पत्रमें जिनका जिक्र आता है वे सब परिचित हैं। परन्तु बहुत लोग बार-बार अुनका परिचय पूछते हैं अिसलिये यहाँ दे देती हूँ।

काशीबहन गांधी ये बापूजीके भतीजे छगनलालभाओीकी पत्नी हैं। बापूजी और बाके साथ अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें रही हैं। काशीबा बहुत मीठे स्वभावकी हैं मेरी बड़ी ताओी होती हैं। मैं तो कौटुम्बिक दृष्टिसे अुन्हें ताओीजी कहती थी। परन्तु आश्रमकी दूसरी लड़कियाँ काशीबा कहती और बा तो अुन्हें काशी बहू कहकर मीठे लहजेसे बुलाती थीं।

आर्यनायकम्‌जी ये नागपुर जेलमें थे और छूटकर सेवाग्राम आये थे। आशादेवी अुनकी पत्नी हैं। दोनों सेवाग्राममें तालीमी संघकी सुन्दर संस्था चला रहे हैं।

प्रभुदासभाओी और अंबाबहन ये काशीबहनके पुत्र और पुत्रवधू हैं। प्रभुदासभाओी जेलमें थे। जेलमें अुन्होंने बहुत कष्ट सहन किया। अंबाबहन बाहर थीं। अुनके दुःखद समाचार कभी कभी बाको मिलते रहते थे। अिसलिये बाने अुनका अुल्लेख किया है। प्रभुदासभाओी गांधीकी हाल ही में 'जीवनका प्रभात' नामक बड़ी दिलचस्प पुस्तक (गुजरातीमें) प्रकाशित हुओी है। अिसलिये अुनका विशेष परिचय देनेकी जरूरत नहीं है।

कहाना यह रामदासभाओीका पुत्र है। पू॰ बाका लाड़ला लड़का है। जैसा नाम है वैसे गुण हैं। तूफानी भी खूब और अूपरसे बापूजीका लाड। फिर पूज्य कस्तूरबा जैसी दादीमाकी तालीम अिसलिये चपल होनेके साथ होशियार भी खूब। अुसने बाको शिकायत की थी कि बापू नहीं हैं अिसलिये आश्रमके व्यवस्थापक कृष्णचन्द्रजी मुझे घास काटनेको कहते हैं। यद्यपि बा आश्रममें थीं तब भी अुसे काम तो करना ही पड़ता था परन्तु बैठे बैठे करनेका काम अुसे बिलकुल पसन्द नहीं था। अिसलिये अुन्होंने पत्रमें कहानाका अुल्लेख किया है।

जिससे मैं छोटा नहीं बन जाता। और छोटा बन जाऊं तो भी क्या हुआ? ऐसा लगे कि परिणाममें कुछ न कुछ सेवा होगी तो काम भले कितना ही हलका हो तो भी उसे करना सबका फर्ज है। हम (महादेवभाईकी) समाधि पर बारहवें अध्यायका रोज पाठ करते हैं उसमें भगवान्ने क्या कहा है? —

> यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
> शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः॥
> समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
> शीतोष्णसुखदुःखेषु समः संगविवर्जितः॥
> तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येनकेनचित्।
> अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियो नरः॥

जिसे हर्ष-शोक राग द्वेष नहीं और जो इसकी चिन्ता नहीं करता कि कोई भी काम सफल होगा या नहीं और कार्यसिद्धिके लिये किसी भी तरहकी आशा नहीं रखता — जैसे कि मैं यह काम करूंगा तो मुझे बड़ा पद मिलेगा या रुपया मिलेगा अथवा मेरी वाहवाही होगी इस प्रकार कर्तव्यके पीछे जिसकी किसी भी प्रकारकी आशा नहीं — जिसकी दृष्टिमें शत्रु-मित्र सभी समान हैं और मान-अपमान सब एकसा है। अन्त तो सब कुछ भगवान्के भरोसे ही छोड़ दे। तभी हम भगवान्के सच्चे भक्त बन सकते हैं। फिर हम प्रार्थनामें बहुत बार यह भजन गाते हैं

> साधो मनका मान त्यागो।
> काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अहनिस भागो।
> सुख दुख दोनों सम करि जानै और मान अपमाना
> हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जगतत्त्व पिछाना।
> अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागे खोजै पद निरबाना
> जन नानक यह खेल कठिन है कोऊ गुरमुख जाना।

(यह सारा भजन बापूजी बोल गये) यह भजन बड़ा महत्त्वपूर्ण है परन्तु यह बालकोंके लिये नहीं है। जिसका अर्थ और जैसे तुम्हें गीताके

बारहवें अध्यायके श्लोकोंका जो अर्थ बताया वह अेक ही है। परन्तु अिसे जो लोग आचरणमें ले आते हैं अुन्हें अनोखा आनन्द आता है। अिसके भीतर जो पड़ता है वह महासुखका अनुभव करता है। लेकिन देखनेवालेको दुःख पर दया आती है। मैं तो अिसके भीतर पड़कर अिसे आचरणमें अुतारनेके प्रयत्नमें लगा हूं अिसलिअे आज जब यह खबर आयी कि सरकार जिनासाहबका पत्र अुनके पास नहीं पहुंचायेगी तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन तू देखनेवाली है अिसलिअे तुझे मुझ पर दया आती है कि बापूका कितना अपमान हुआ। और मुझे सीख देने आयी कि आप पत्र न लिखते तो अच्छा होता। परन्तु हरिका मार्ग वीरोंका मार्ग है अिसमें कायरोंका काम नहीं। अिसलिअे अीश्वरको जो करना होगा करेगा हम क्यों चिन्ता करके अुसके प्रति अपनी श्रद्धा कम करें और अपने दिमागको अैसी झंझटमें फंसायें?

यह सारी बात मुझे बापूजीने बहुत ही रसपूर्वक और प्रेमपूर्वक समझायी। अन्तमें बापूजीने मुझसे कहा यदि तू अैसे प्रश्न करती रहेगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। अिससे तुझे ज्ञान तो प्राप्त होगा ही साथ ही अीश्वरकी पहचान भी होगी और जिस ढंगसे मैं तुझे तैयार करना चाहता हूं अुस ढंगसे तैयार कर सकूंगा। यह बात अिसीलिअे कहता हूं कि तुझे लगता होगा कि बापूजीको अैसी बात मने क्यों कही? तेरे मनमें शायद यह विचार हो कि मैंने तो हंसते-हंसते यह बात कही थी फिर बापूजीने मुझे अिस तरह अुलहना क्यों दिया? अिसलिअे तुझे निःसंकोच बनानेको अितना कह रहा हूं।

सचमुच मुझे अैसा ही लगा था कि मैंने कहनेको तो कह दिया कि जिनासाहबको आपने पत्र क्यों लिखा? अिसमें थोड़ी हद तक मजाक भी था। लेकिन मजाकमें यह गाम्भीर्य आ गया और मनमें बापूजीसे प्रश्न पूछनेका पश्चात्ताप होने लगा। बापूजी मानो भांप गये। अुन्होंने मुझे निश्चिन्त कर दिया अिसलिअे मेरे आनन्दका पार नहीं रहा।

१५

बा और बापूका खेल

आगाखाँ महल पूना
४-६-'४३

डॉ॰ सुशीलाबहन और डॉ॰ गिल्डरने मेरी आंखें किसी अच्छे डॉक्टरको बतानेके लिअे हमारी जेलके सरकारी डॉक्टर कर्नल शाहसे कहा। अिसलिअे वे डॉ॰ पटवर्धनको लाये थे। डॉ॰ पटवर्धनने दो दिन तक आंखोंकी परीक्षा की। नम्बर बढ़ जानेके कारण नये चश्मेकी आवश्यकता बताओ और आंखोंमें डालनेकी दवा लिख दी। अिस पर बापूजीके पास कर्नल भण्डारीकी तरफसे यह सूचना आयी कि मेरे लिअे नया चश्मा लेना हो तो वह मेरे खर्चसे लिया जाय।

अिस समाचारसे बापूजीने कहा "कैदीकी सम्हाल रखना तो सरकारका काम है। यदि आपको चश्मा दिलाना हो तो दिलाअिये। नहीं तो आंखें खराब होनेकी जिम्मेदारी अपने सिर अुठाअिये। यह ठीक है कि मनुके पिता अुसके लिअे चश्मा खरीद सकते हैं। वे अितने गरीब नहीं हैं कि चश्मा न खरीद सकें। परन्तु अिस लड़कीकी सारी जिम्मेदारी अिसके पिताने मुझे सौंपी है। और यदि बीमार कैदीको जेलमें न होकर बाहर हो और मान लीजिये वह गरीब स्थितिका हो तो बगैर लागतके भी चश्मा ले सकता है। कैदीकी सम्हाल रखनेका काम सरकारका है। अुन्हें खुराक कपड़े वगैरा दिये जाते हैं। बीमार पड़े तब अुसकी सार-सम्हाल भी की जाती है। सरकार अैसा न करे और मनुष्य मर जाय अथवा अुसके शरीरमें कोअी दोष पैदा हो जाय तो अिसकी जिम्मेदारी सरकारकी ही मानी जायगी। और अैसा हो तो सरकार लोगोंकी निगाहमें अवश्य गिर जायगी।

अिसलिअे कर्नल भण्डारी और बापूजीके बीच थोड़ीसी लिखा-पढ़ीके बाद सरकारने यह तय किया कि चश्मा दिया जाय।

आगाखाँ महल पूना
११–६–'४३

अभी अभी बरसात हो रही थी। जिस वजह बाहर कुछ खेला नहीं जा सकता था। जिस कारण अेक बड़ी मेज पर जाल लगवाकर पिंग पॉंग खेलनेका कटेली साहबने सुझाव रखा। जिसके लिअे कोअी खास खर्च करनेकी जरूरत नहीं थी। जिसलिअे शामको अुसका अुद्घाटन विधि हुआ। अुद्घाटन बापूजीके हाथसे हुआ। अेक तरफ बापूजी थे और दूसरी तरफ बा। डॉ. गिल्डर साहब, मीराबहन और हम सब तो हाजिर थे ही। बापूजीने बल्ला हाथमें लेकर छोटीसी गेन्दको — जो खास तौर पर पिंगपॉंग खेलनेमें ही काममें ली जाती है — मारा। सामनेसे बाको मारना था। पता नहीं बापूजी कब यह खेल सीखे होंगे? न तो बापूजी ठीकसे मार सके और न बा गेंदको लौटा सकीं। हमारा तो हँस हँसकर दम निकल रहा था। ७४–७५ वर्षके बापूजी मानो कोअी खिलाड़ी खेल रहा हो जिस तरह पीछे देखता हो। मैं अभी मजाक करता हूं। हम सबको खूब आनन्द आया। और शामको हम लोग जितने हँसे कि घूमनेकी भी सुध न रही। आजकल अनेक बार अकल्पित आनन्द लेनेके अनुभवोंमें पूज्य बापूजी और पूज्य बाको पिंगपॉंग खेलते देखनेका दृश्य तो अनोखा ही था।

बापूजी हालमें ही सरकार द्वारा प्रकाशित 'कांग्रेसकी जिम्मेदारी' नामक पुस्तिकाका जोरदार जवाब देनेके काममें जुट रहे हैं। जिसके लिअे अुन्हें गंभीर चिन्तन करनेमें दिमागकी बहुत शक्ति खर्च करनी पड़ती है। साथियोंसे सलाह-मशविरा करना पड़ता है। अुन्हें अपनी सत्य और अहिंसाकी सूक्ष्मता समझानेके लिअे चर्चा करनी पड़ती है। अैसे गंभीर वातावरणको भी बापूजी जिस तरह विनोदी वातावरणमें बदल डालते हैं।

आगाखाँ महल पूना
१–७–'४३

आजकल मैं पूज्य बाके लिअे अेक साड़ी पर कसीदा काढ़ रही हूं। यह साड़ी असलमें तो मदालसाबहन (जमनालालजी बजाजकी पुत्री और

किसी भी तरह अठारहों अध्यायोंका अुच्चारण प्यारेलाल और सुशीलाके साथ मिल सके अिस तरह तैयार कर ले। अभी चार पांच दिन बाकी हैं। अिसलिअे जब जब मुझे या प्यारेलालजी या सुशीलाबहनको वक्त मिले तब तब तू सब काम छोड़कर अुच्चारण सीखने बैठ जा।" अिसलिअे सारा दिन लगभग अिसीमें बीता।

दोपहरको पू॰ बापूके पास अखबार पढ़ने नहीं बैठी थी। परन्तु बरसातसे मारवाड़के अुपलेटा प्रदेशमें जो भारी हानि हुअी थी, अुसका जो ब्यौरा अखबारमें आया था अुसे अूपर अूपरसे बांचने पड़ा। फिर मुझसे कहने लगे "ब्यौरा पढ़कर सुना। बादमें अपना काम करना।" ब्यौरेमें था कि मारवाड़में बीस-पच्चीस हजार आदमी बाढ़में बह गये बेघरबार हो गये और पशुओंकी हानिका तो कोअी हिसाब ही नहीं है। अुपलेटा गांव बहनेसे बाल बाल बचा।

अैसी दर्दनाक बातें सुननेके बाद बा बोलीं: "अेक ओर बंगालमें मुसलमान, दूसरी तरफ हमारी अिस लड़ाअीमें कितने ही अनाथ निराधार बलिदान हुआ होगा, कितने ही बच्चे मर गये होंगे और तीसरी बार यह प्रकृतिकी अतिवृष्टि! क्या भारतका भाग्य अैसा ही है?" बाकी तबीयत अच्छी नहीं थी। बिस्तर पर तकियेके सहारे बैठे और सांस भरते हुअे दुःखी हृदयसे कहने लगीं: "अीश्वर बापूजीके सत्य और अहिंसाकी कब तक कड़ी परीक्षा करता रहेगा?

वे सब चर्चायें सुनकर बहुत दुःखित हो जाती हैं। मुझको लगता है कि बापूजीने जैसा न तो कहा था और न किया था फिर भी सरकार क्यों झूठे आरोप लगाती है? कहते हैं कि सत्यकी सदा जीत होती है। अमुक बात सत्य है यह प्रत्यक्ष देखकर भी सरकार अैसे आरोप लगाये तो अिसे क्या कहा जाय? बापूजीकी सत्यतामें बाको बड़ा दृढ़ विश्वास था कि साथियोंमें होनेवाली अिस सारी चर्चाके जितने शब्द बाके कानों पर पड़ते और समझमें आते अुन पर मन ही मन वे दुःखी होतीं और मेरे सामने प्रगट करतीं। अलबत्ता किसीको अिसका जरा भी खयाल होना कठिन था कि पू० बा यह सब सुनकर अपने मनमें गंभीर विचार या भारी चिन्ता करती होंगी। मैं अिन चर्चाओंमें अितनी गहरी दिलचस्पी नहीं लेती थी। बहुतसी बातें तो मेरी समझनेकी शक्तिसे बाहर भी होती थीं। फिर भी मेरा काम करते करते अथवा पू० बा कुछ कहें तब या अुनके पलंग पर बैठकर अुनकी सेवा करते करते कुछ सुननेको मिल जाता था। अिसके सिवा खास कुछ नहीं। मैं पू० बा और बापूजीकी सेवा करने खाने-पीने और पढ़नेके सिवा तेरह-चौदह वर्षकी अुमरमें गहरी राजनैतिक बातोंमें क्या समझूं? अिसलिअे अुनकी चर्चामें कोअी रस नहीं लेती थी। अिसका आज दुःख और पश्चात्ताप भी है कि १९४२–४३ के दंगोंके लिअे कांग्रेसकी जिम्मेदारीके आरोपका अुत्तर देनेमें पू० बापूजीको लगभग दो महीने लग गये होंगे। अुस पर भी अन्तमें साथियोंके साथ जो ऐतिहासिक चर्चायें होतीं अुनमें बापूजी की मनोव्यथा अकसर अुसमें जान लेनेका मुझे सौभाग्य नहीं मिला। फिर भी पू० बाके ये करुण अुद्गार अपनी डायरीमें सहज ही मैंने लिख लिये थे और अब अुन्हीं परसे बापूजीकी अुस समयकी मनोव्यथाकी कल्पना करके आश्वासन प्राप्त करना होगा।

१६
महादेव काकाकी बरसी

आगाखां महल, पूना
१५-८-'४३

आज महादेव काकाको अिस संसारसे विदा हुअे पूरा अेक वर्ष हो गया।

कल बाको दिलका दौरा हुआ था। साथ ही सांस लेनेमें भी बड़ी कठिनाओ होती थी। खांसी भी थी। अिसलिअे रातको अच्छी नींद नहीं ले सकी थीं। मैं और सुशीलाबहन बारी बारीसे अुनके पास बैठी थीं। परन्तु बापूजी कांग्रेस पर लगाये गये अिलजामोंका सरकारको जवाब लिख रहे हैं, अिस कारण सुशीलाबहनको दिनमें काफी काम रहनेसे बाने सुशीलाबहनसे कहा, "मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ेगी तब अवश्य बुला लूंगी। मनु मेरे पास है।" बा सीधी तो सो ही नहीं सकती थीं। छातीमें सख्त घबराहट रहती थी। अिसलिअे जब कभी थोड़ा आराम होता मेरे सहारे गोदमें सिर रखकर थोड़ी देरके लिअे नींद ले लेती थीं। सुशीलाबहन बीच बीचमें आकर देख जातीं। अेक बार दवा भी पिला गयीं। डॉ. गिल्डर भी रातको दो बार आ गये। बाको अिन लोगोंकी चिन्ता थी। बोलीं, "आप मेरे लिअे क्यों जागकर आते हैं? मेरे लिअे आपरव क्यों करते हैं? आपको दिनमें भी काम करना पड़ता है।" बापूजी अेकाध बार आये यह भी बाको पसन्द नहीं आता। अुन्हें अिसका बड़ा दुःख था कि अुनकी बीमारीके कारण दूसरे लोग परेशान होते हैं।

अिस प्रकार मैंने जागते रात बिताओ। प्रार्थनाका समय हो गया। मैं बाके पलंग पर ही बैठी थी। मुझसे कहने लगीं, "तू अब प्रार्थनामें जा। सारी रात मैंने तुझे परेशान किया है। आज

तो महादेवकी पुण्यतिथि है न? अरे ! अपनेको जाते क्या देर लगी? आज शायद मैं भी और चला गया होता। मेरा दुनियामें अब क्या काम है? बेचारी दुर्गा और बाबलाकी भगवान कैसी परीक्षा ले रहा है! बापूजी बाहर होते तो मुझे बड़ा आश्वासन मिलता। और, जैसी भगवानकी मरजी। आज महादेवकी बरसी है। अिसलिअे प्रार्थनामें बैठ। मैंने कहा मैं यहां बैठी रहूंगी। बापूजीने भी कहा मनु यहीं बैठी बैठी बोलेगी तुम चिन्ता मत करो। बाकी सांस फूलती थी अिसलिअे मेरे सहारे बैठी थी। मैं अुनकी छाती पर हाथ फेरती थी। बेचैनी बहुत थी तो भी वे प्रार्थनामें भाग लेनेका प्रयत्न कर रही थी।

यह बात तो सर्वविदित है कि बा और बापूजीके लिअे महादेव काका पुत्रवत् थे। प्रार्थनाके बाद बाको थोड़ा आराम मालूम हुआ अिसलिअे सो गयीं। मैंने धीरेसे अुनका सिर तकिये पर रख दिया और मच्छरदानी डालकर अपने काममें लग गयी।

लगभग अेक घंटे तक अुन्हें अच्छी नींद आयी। अुठते ही बोलीं आज कैदियोंको भोजन करायगी न? मैंने कहा हां सुशीला बहन कैदियोंके लिअे भोजनका सामान निकाल रही है।

हम लोगोंमें स्वजनकी मृत्युतिथिके दिन ब्राह्मण-भोजन होता है। लेकिन बा अिन बेचारे अभागी कैदियोंको ब्राह्मणोंसे भी अूंचा मानती थी अिसलिअे सुबह ही सुबह मुझसे पूछा कैदियोंको खिलायेगी न? पुराने जमानेकी पुराने शास्त्रोंको माननेवाली रूढ़िग्रस्त बाके विचार कितने अूंचे थे यह अिन प्रसंगोंसे मालूम हो जाता है।

आज हम सबका अुपवास था। बापूजीने सिर्फ गरम पानी अुसमें थोड़ा शहद और जरा सा सोडा डालकर प्रार्थनाके बाद पीया था। फलका रस आज छोड़ दिया। अिसलिअे मुझे कोअी खास काम न था। सुशीलाबहन और मीराबहन समाधिको फूलोंसे सजानेके लिअे पहले ही चली गयी थी। मैं बाको दातुन करवाने और नाश्ता देनेके लिअे ठहर गयी थी।

मे समाधियोंसे दोनों बाके पास आओ। बापूजीके साथ सुशीला बहन लौटी। जिस कमरेमें महादेव काकाके शबको नहलानेके बाद गीतापाठ और प्रार्थनाके लिये रखा गया था अुसमें गीतापारायण करना था। जिसलिये मीराबहन मुझे बुलाने आओं। अुस कमरेका सारा फर्नीचर निकलवा दिया। कमरा साफ किया और अेककी अेक चादर बिछा दी। जिस तरह अेक वर्ष पहले महादेव काकाका मृत शरीर सुलाया गया था और जिस ओर अुनका सिर था अुस ओर फूलोंसे बड़े कलात्मक ढंगसे ॐ बनाया पैरोंकी तरफ ✝ (क्रॉस) बनाया अगरबत्ती सुलगाओ और सारा वातावरण पवित्र कर दिया। जिस बीच बापूजी और हम सब नहा-धोकर निपट गये जिसलिये अेक थाली और कम्मल लेकर ठीक दस बजे घंटी बजाओ। पू० बाने गीतापारायण हो तब तक घीका दिया जलानेको कहा था जिसलिये अेक घीका दिया जलाया। जिस प्रकार सब प्रार्थनामें बैठे। कटली साहब (हमारे सुपरिन्टेण्डेन्ट साहब) भी मौजूद थे। सबके बैठ जाने पर सदाकी भांति प्रार्थनाके रोज बोले जानेवाले श्लोक शुरू हुओ।

सबसे पहले जापानी श्लोक 'नम्यो हो रेंगे क्यो' बोला गया। (जिस श्लोकका अर्थ होता है बुद्ध भगवानको मेरा आदरसहित नमस्कार।)

जिसके बादका श्लोक था

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

जिन श्लोकोंके बाद कुरान शरीफकी आयत बोली गयी। बादमें जरथोस्त गाथा डॉ० गिल्डर साहब बोले।

(नम्यो रेंगे क्यो कुरान शरीफकी आयत तथा जरथोस्त गाथा बापूजीकी आगाखां-महलकी दैनिक प्रार्थनामें सदा बोले जाते थे। अुनका अर्थ आश्रम-भजनावलिके नये संस्करणमें दिया गया है।)

अुपरोक्त श्लोक बोले जानेके बाद 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' भजन सुशीलाबहनने और मैंने शुरू किया। परन्तु जिस भजनकी पहली ही कड़ी गाने पर गला भर आया। प्यारेलालजीने भजनका अनु-संधान लिया और अुन्होंने भजन पूरा किया।

भजनके बाद मीराबहन कमरेके अेक कोनेमें तानपूरा लेकर बैठ गअीं। अुन्होंने तानपूरेकी मोठी झनकारके साथ अपनी पहाड़ी भाषामें रामधुन गाअी।

बापूजी और बा अपनी कमजोर तबीयतके बावजूद आंखें बन्द करके बैठे थे। अेक तरफ दिया जल रहा था, फूलोंका ॐ और † (क्रॉस) का पवित्र चिह्न थे तथा अगरबत्तीका सुगंधित धुआं सारे वातावरणकी पवित्रताके साथीके रूपमें फैल रहा था। बा और बापू पालथी मारकर आंखें बन्द किये सीधे दोनों हाथोंकी अुंगलियां स्वाभाविक रूपमें ही जोड़कर ध्यानमग्न बैठे थे। बड़ा हृदयद्रावक दृश्य था। रामधुनके बाद मीराबहनने महादेव काकाका प्रिय अंग्रेजी भजन गाया

When I survey the wondrous Cross,
On which the Prince of Glory died,
My richest gain I count but loss,
And pour contempt on all my pride.
See from His head, His hands, His feet,
Sorrow and love flow mingling down
Did e'er such love and sorrow meet,
Or thorns compose so rich a crown?

अिस भजनके बाद गीतापारायण शुरू हुआ। सारे गीतापाठमें अेक घंटा दस मिनट लगे। गीतापाठके बाद —

विपदो नैव विपदः सम्पदो नैव सम्पदः ।
विपद्विस्मरणं विष्णोस्सम्पन्नारायणस्मृतिः ॥

अिस श्लोकके बाद सब काम पूरा हुआ। बा निश्वास लेकर जागीं पिछले साल अिस समय तो महादेवकी चिता जल रही थी और दुनियामें केवल अनका नाम रह गया था।

प्रार्थनाके बाद सुशीलाबहनने बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। मैंने बाको पानी दिया। बादमें हम दोनों कैदियोंके लिये बन रहे भोजनको देखने गअीं। हम तीनोंने भोजन बनानेमें सहायता की।

कल्पनातीत महान जीवनका मैं प्रयत्न कर रही हूँ। अिसलिअे स्वभावतः ही मेरी आंखोंके सामने यह दृश्य खड़ा हो जाता है और मुझे लगता है कि आज जब ये दोनों विभूतियां देहरूपमें संसारसे अदृश्य हो गअी हैं, तब जितने कैदियोंने जिस प्रकार बा और बापूजीके हाथोंसे परोसी हुअी प्रसादी खाअी होगी, जिनकी पीठ पर अुनके प्रेमपूर्ण हाथ मातापिताके रूपमें फिरे होंगे अुन भाग्यशाली कैदियोंके मनमें कितना आत्मसंतोष होगा? क्योंकि हत्या करके सजा पाये हुअे कैदियोंके भाग्यमें महात्माओंके अितने समीप रहना आम तौर पर दुर्लभ हो जाता है। परन्तु जिस दृश्यकी कल्पना करनेवालोंके मनमें यह श्रद्धा सहज हो जाये बिना नहीं रहेगी कि दुनियामें दुर्लभ भी सुलभ हो सकता है।

कैदियोंको खिलानेके बाद बा और बापूजीने थोड़ा आराम किया। मैंने दोनोंके पैरोंमें घी मला। दोपहरको १॥ बज गये। ठीक १॥ से ४॥ बजे तक ? घण्टा सामूहिक कताअी-यज्ञ रखा था। जिसमें सबने अेक मनसे भावनाकी तरह जिस ? घंटेमें मौन लेकर काता।

ठीक ५॥ बजे बापूजीने अुपवास छोड़ा। (अुनने २४ घंटेका अुपवास किया था।) बापूजीके भोजन कर लेनेके बाद हम सबने खाया। फिर अुदासी शांति सायंकालकी प्रार्थना हुअी और प्रार्थनाके बाद रविवार होनेके कारण बापूका सोमवारका २४ घंटेका मौन-व्रत शुरू हुआ।

मौन भी सामान्यतः बहुतसे लोगोंके लिअे अेक तप है और यह मौनदिन भी कुदरती तौर पर आज ही पड़ा, जिससे सारे दिनमें सबके स्मरण किये गये पवित्र श्राद्धको कुदरतने अन्तमें ऐसे समय पूरा कर दिया।

आगाखां महल पूना
१६-९-५१

आज दोपहरको जब मैं बापूजीके पैरोंमें घी मल रही थी तब कटेली साहब आये। मुझसे कहने लगे — अिस बार तो सचमुच तुम्हें छोड़नेका हुक्म आया है।

मैंने कहा — आप सबको अिसके सिवाय और कोअी काम ही नहीं है। मुझको चिढ़ाना आता है? आप भले ही मजाक करें, अब मैं पहलेकी तरह रोनेवाली नहीं हूं।

जिस प्रकार बात चली अिसमेंसे तो मुझे चिढ़ानेवाली मंडली जमा हो गयी। कटेली साहबने बापूजीके हाथमें कागज रखा अिसलिअे मैंने सोचा कि मजाक ही होता तो बापूके हाथमें झूठा कागज हरगिज न रखते। क्या मुझे सचमुच छोड़ दिया जायगा? मैं बोल उठी और छूटनेकी घबराहट फिर पैदा हो गयी।

सब कहने लगे — चलो अब मनुको विदाअी देनी पड़ेगी।

पू॰ बा भी पलंग परसे यहां आ गयीं जहां बापूजी बैठे हुए थे। बा बोलीं — तो मनुड़ी चली जायगी? मुझे फिर अकेली रहना। अब सीधी कराची जाकर पढ़ना। सबसे अेक बार मिल आना। बेचारी तेरी बहन तुमसे मिलनेको कितनी तरस रही होगी? वे खुश हो जायगी। तूने हमारी बहुत सेवा की है। परन्तु सरकारके आगे हमारा क्या चले?

यह पिछला वाक्य बा बोलीं कि बापूने कहा — परंतु अिसमें तो अैसा है कि तुझे भी यह सरकार छोड़ रही है। तू भी तो सरकारकी कैदी है। नागपुरमें तुम्हारी बहनोंको छोड़ रहे होंगे अिसलिअे तेरा हुक्म यहां भेजा है। परन्तु यदि तुझे यहां रहना हो तो तुझ पर जो हुकुम है वह आगे ही रखूं। और छूटना हो तो किसी भी समय छूट सकती है।

मैंने कहा — मुझे नहीं जाना। मेरे आनन्दका तो पार नहीं था। अैसा हुक्म होगा यह कल्पना कैसे हो सकती थी? मनमें मैं

अिस डरसे कांप रही थी कि बा बापूकी पवित्र सेवाका अैसा अलभ्य अवसर हाथसे छिन जायगा। मैंने बादमें साहस करके कहा आप सब मेरे ही मजाक कीजिये। पहली बात तो यह है कि मुझे स्वप्नमें भी खयाल नहीं था कि मुझे आगाखां महलमें रहनेको मिलेगा। पूर्वजन्मके पुण्यबलसे और पू बा तथा बापूजीके प्रेमके आकर्षणसे यहां आ गयी। अीश्वर कोअी अैसा अनुदार नहीं है कि असी अमूल्य सेवाका अवसर देकर तुरंत ही वापस ले ले। तब तो अीश्वर पर मेरी जरा भी श्रद्धा न रहती। परन्तु हुक्म भी कितना बढ़िया है? कोअी किसीका भाग्य थोड़े ही छीन सकता है?"

बा तो बहुत ही प्रसन्न हुअीं। कटेली साहब कहने लगे यह तो तू बहुत रोयेगी अिसीलिअ अितनी राहत मांगी थी।" (मजाकमें ही कहा।) सब हंस पड़े।

फिर थोड़ी देरमें बा बोलीं तू अितनी छोटी मुन्नम क्यों हमारे पीछे परेशान होती है? बाहर जायगी तो ज्यादा पढ़-लिख सकेगी।"

मैंने आखिरी जवाब दे दिया मुझे यहां जो शिक्षा मिलती है असी संसारमें कहीं भी नहीं मिलेगी। मुझे अिस तरह नहीं जाना है।

बा बोलीं तेरे जीमें क्या है यह जाननेको मैं तुझसे जिरह कर रही थी। अिसमें रोनेकी क्या बात है?

कटेली साहबने बापूजीसे कहा मनुके पिताजीसे पुछवाना पड़ेगा न?

बापूजी बोले अिस लड़कीका पिता मानो मेरा भतीजा या बेटा। दोनों अेक ही बात है। अुसका मुझ पर अपार विश्वास है। अिस लड़कीके लिअे जो मेरी अिच्छा है वही अुसकी अिच्छा है। अुसे मैं अच्छी तरह जानता हूं। लड़कियोंको अितनी स्वतंत्रता देनेवाले बहुतसे पिताओंमें वह अेक है। अितनी छोटीसी मनको यहां आनेसे जो असने नहीं रोका। यहां तक मैं जानता हूं मनु और अिसकी बहनोंको अिसके मा-बापने कभी किसी बातकी कमी नहीं रहने दी। अिसलिअे अिसके विवाहके बारेमें मनु और मैं दोनों निश्चिन्त हैं।

चल सकती। अेक पहियेमें जरासी खामी हो, कहीं टूट-फूट हो गयी हो, तो भी वह अच्छी तरह नहीं चल सकती। यही बात सांसारिक जीवनकी भी है। भले बा बहुत पढ़ी हुआी नहीं है, परन्तु हिन्दू स्त्री जिस पतिव्रता-धर्मको सब धर्मोंसे श्रेष्ठ मानती है अुसे बाने अपनाया है। मैंने जब कभी भूलें की हैं तब बाने मुझे कितनी ही बार समय पर सचेत किया है। जिस प्रकार मैं तुझे यह समझा रहा हूं कि बाने पतिव्रता-धर्मको पोथीधर्म नहीं बना डाला। जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें था तब हमारे यहां अेक पंचम जातिके मां-बापका औसाओी लड़का क्लर्कका काम करता था। वहांके मकानोंमें हमारे मकानोंकी तरह टट्टी और पेशाबघर नहीं होते। वहां पॉट (बरतन) रखा जाता है। मेहमानोंके पॉट या तो मैं अुठाता था या बा अुठाती थी। यह औसाओी लड़का अभी तक मेहमान जैसा ही था। परन्तु बाने हंसते हुअे चेहरेसे नहीं बल्कि मुंह बनाकर वह पॉट अुठाया। यह मुझसे सहन नहीं हुआ। मैं चिढ़ा। बा भी नाराज हुआी। मैं हाथ पकड़कर ज्यों ही अुसे बाहर ले जाने लगा, बाने रोते रोते मुझे अुलहना दिया कि तुम्हें लाज-शरम नहीं है, परन्तु मुझे तो है। कोअी सुन या देख लेगा तो क्या कहेगा? दोनोंमें से अेकको भी शोभा नहीं देगी। यह प्रसंग मैंने 'आत्मकथा' में भी दिया है। जिस प्रकार बामें पातिव्रत धर्मके पालनके साथ साथ अैसी निर्भयता भी थी। ये मैंने तुझे बाकी कहानी भी कह दी। अब बाकी नहीं कहूंगा।"

मैंने पहले लिखा है कि बापूजी अपने जीवनकी घटनायें हमें सुनाया करते थे। अुसी सिलसिलेमें अुपरोक्त प्रसंग कह सुनाया।

तीसरी घटना भी अैसी ही आज हो गयी। सुशीलाबहन स्नानघरमें रपटकर गिर पड़ीं। अुन्हें सख्त चोट आयी थी। जिससे अुन्हें बुखार आने लगा। जिसलिये शामको बापूजीको दूध देनेमें पांच मिनट देर हो गयी। बापूजीका खाना-पीना सदा सुशीलाबहन सम्हालती थीं। (सवेरे वे दूसरे काममें होतीं और बाको खिलाने-पिलानेकी जिम्मेदारी मेरी होती, जिसलिये बापूजीका सुबहका खाना-पीना मैं ही सम्हाल लेती। परन्तु शामको पांच बजे मेरा बाके पास रामायण पढ़नेका समय होनेके कारण यह काम सुशीलाबहन करती थीं।)

बाकी तन्दुरुस्तीमें भी सुधार होता रहता था। मैं दूध गरम कर रही थी। सुबह बा रहा था जितनेमें बा धीमी चालसे खांसती-खांसती मोजनालयमें आ पहुंची। "क्या अभी तक बापूजीको दूध नहीं मिला ?

मैंने कहा — बस दे ही रही हूं। आप यहां क्यों आयीं ? बापूजी और सुशीलाबहन नाराज होंगे न ?

बा बोलीं — "तुझे मालूम तो था कि सुशीलाकी तबीयत अच्छी नहीं है। जिसलिए तुझे अपने मनमें चिन्ता रखनी चाहिये न कि मुझे अमुक काम अमुक समय करना है ? अन्य कार्य बादमें। मेरे पास रामायण पांच मिनिट कम पढ़ी होती तो ?

बापूजीको दूध देते हुअे मैंने कहा — बापूजी पांच मिनिट देर हो गयी।"

बापूजी — कोओ हर्ज नहीं।

मैंने कहा — परन्तु बा मुझ पर नाराज हो गयीं।

जितनेमें बा भी आ गयीं। बापूजीसे कहने लगीं — जिस लड़कीने पांच मिनिट देर कर दी। पता तो था ही कि आज दूध-खजूर तुम्हें देना है अभी हालतमें मेरे पास रहकर ही रामायण पढ़ने बैठना था।

बापूजी — जिसमें कोओ हर्ज नहीं। यहां कहां बाहरकी तरह किसीको मुलाकातका समय दिया हुआ है ?

बा — मगर मुझे मालूम है न कि समयकी पाबन्दी आपको बहुत पसन्द है। आप यहां भी अपने सब काम समय पर करते हैं तो फिर देर क्यों की जाय ?

बापूजी और मैं निरुत्तर रहे। क्योंकि मन भूल की थी जिसलिए अब बचाव करनेका था और बापूजी कोओ भी बाकी दलीलके सामने टिक नहीं सकते थे। परन्तु बापूजी अपने स्वभावके मुताबिक दूसरा घूंट लेते हुअे अेक ही वाक्य बोले — बा अैसी है !

१६

मक्खन निकाला!

आगाखां महल, पूना
१८-९-'४३

हमारे यहां श्रावण मासका पहला रविवार विशेष महत्व रखता है। अुसे बीरपसली का दिन कहा जाता है। अुस दिन भाओ बहनको कुछ न कुछ भेंट देता है। अिस निमित्तसे बाने बापूजीकी बड़ी बहन पू. गोकी बुआजीको और अुनकी लड़की फूली बुआको अेक अेक साड़ी और चोलीका कपड़ा (अपनी ओरसे) भेजनेको आश्रममें लिखवाया था। अुनका जवाब आज आया। अुसमें यह पुछवाया था कि साड़ी किस पेटीमें किस जगह रखी है। श्रावण महीनेके पहले रविवारको बीते अेक मास हो चुका था और अभी तक अुपरोक्त प्रश्न पूछनेवाला पत्र ही मेरे नाम अेक सम्बन्धीका लिखा हुआ आया। यह मैंने बाको पढ़ सुनाया।

बा कहने लगीं, "कैसे लोग हैं? बीरपसली कभीकी बीत गयी और अभी तक उनको पहुंचानेवालों को साड़ियां ही किसीको नहीं मिलीं। मानो मेरी कोठरीमें तिजोरी हो और अुसमें कहीं कुछ छिपाकर रखा हो जो किसीको भी नहीं मिलता! अरे, अुस दिन साफ-सुथराकर पलंग अुपर ही तो रखी है। जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक बुआजीको अुनी आशम बापूजी तो क्या देंगे? कह देंगे कि मेरे पास देनेको कुछ भी नहीं है। मैंने वे दो साड़ियां खास तौर पर बुआजी और फूलीके लिअे रखी थीं। जरा मोटी हैं और जाड़ेमें पहनी जा सकेंगी। परन्तु समयकी बात समय पर ही शोभा देती है। बुआजीको भी अिस बार कैसा बुरा लगा? बारह महीनेमें बेचारीको अेक साड़ीकी तो आशा होगी ही न? अब अच्छी तरह समझाकर आश्रमवालोंको लिख दे।" फिर मन पर जरा नाराज हुईं। मुझे तो

(बापूको और बाको) रस परन्तु औरोंको छोड़" तब वे निस्वार्थताके शिखर पर पहुंच गयी थीं।

बा कोच पर लेटे लेटे जिस प्रकार प्रार्थना कर रही थीं और मैं बापूजीके लिए मक्खन निकालनेको छाछ बिलोती बिलोती थक गयी थी। सबकी प्रार्थना पूरी हो गयी मगर मेरा छाछ बिलोना अभी तक पूरा नहीं हुआ था। जिससे बा बोलीं — "अेकसी रवी घूमनी चाहिये तभी मक्खन अच्छी तरह निकल सकता है।" मैंने कहा — "मक्खन तो मैं अभी निकाल देती हूं।" यों कहकर मैंने उस छाछको अेक कपड़ेमें छान लिया। पानी नहीं डाला था जिससे अभी तक वही वैसा घोल ही था। जिससे पानी निचोड़कर निकाल दिया और जो वहीका माखा रह गया था उससे छोटी कटोरी भर गयी। मैं खुशी खुशीसे बाके पास गयी और बोली — "देखिये बा, मैंने आज मक्खन कितना जल्दी निकाल लिया? अच्छा निकला है न?" मैं तो उस सचमुच ही मक्खन समझ रही थी और जिस नयी खोजसे जरा फूल भी गयी थी कि कपड़ेमें छान लेनेसे कितना बढ़िया और ज्यादा मक्खन निकल सकता है।

परन्तु बा जिस तरह मेरे पराक्रमके गुणगानमें थोड़े ही बहनेवाली थीं? उन्हें आश्चर्य हुआ कि बकरीके दो (कच्चे) सेर दूधमें से कटोरी भर मक्खन निकल ही कैसे सकता है। मुझसे कहने लगीं — "यह मैं मान ही नहीं सकती। तूने अैसा ही कुछ किया होगा।" यों कहकर बाहरके बरामदेमें आयीं और कपड़ा पानी वगैरा देखकर मेरी मक्खन निकालनेकी नयी खोज पर — कहिये बा मेरी मूर्खता पर — हंसने लगीं। जितनी हंसी कि दस मिनिट तक लगातार जोरकी खांसी रही और मुश्किलसे सांस बैठी। फिर भी मैं समझ न सकी कि बा जिस प्रकार जितना ज्यादा हंसी क्यों। मुझसे बोलीं — "तूने मक्खन नहीं निकाला परन्तु श्रीखंड बना दिया। यह बापूजीसे कह देना मूर्ख! मनके मन भरभर छाछ बिलोनेके लिए हम अपने बचपनमें कितनी जल्दी उठती और बिलोते बिलोते हाथ थक जाती थी। तेरी तरह यों कपड़ेसे

दहीको छानकर मक्खनके नामसे बेची तो हमारा कैसा बेहाल हुआ होता? चल अब भी मैं तुझे जिसमें से मक्खन निकालकर बताऊं।"

ऐसा कहकर बाने दुबारा मुझे और मुझ दहीमें पानीको मिलवाया और छाछ बिलोनेमें जिसकी जाति ही आधा आध घंटा लगा गया। मैं मक्खन तो रोज निकालती ही थी। मगर मुझे बिलोते बिलोते ही देर ही लगी और बाने प्रार्थनाके बाद तुरन्त टोक दिया कि ओकसी रस्सी घूमनी चाहिये। तब मुझे यह नया रास्ता सूझा जिस पर तुरन्त अमल किया और कहा कि रोज आधा घंटा लगता जाता है जिसके बजाय जिस तरह पांच-सात मिनिटमें ही कितनी अच्छी तरह काम निपट जाता है। जिसलिये आज यह नया पराक्रम किया था। परन्तु बाने अन्तमें दुबारा घर पर खड़ी रहकर जैसा रोज करती थी वैसा ही करवाया और मक्खन निकलवाया। बापूजीसे कहने लगी "आज तो मनुको बाप पर कुछ भ्रम सूझ आया था जिसलिये बीलोने निकालनेवाली थी।" और मुझ द्वारा किस्सा कह सुनाया। मैं बापूजीको खाना देकर अपनी मूर्खतासे शर्मिन्दा होकर वहांसे चल दी। परन्तु सारा कमरा जिस नयी खोजके पराक्रमके कारण हंसीसे गूंज रहा था। जिससे मेरे स्वाभिमानको चोट पहुंची। मुझे लगा कि मैंने तो अपनी अक्ल दौड़ायी और ये लोग हंस रहे हैं कि मेरा मजाक उड़ा रहे हैं! जिस प्रसंगका गुस्सा कुछ समय तक नहीं मिटा था जिसलिये मुझे दिनकी डायरीमें तो गुस्सेमें मने यहां लिखा है कि मेरे स्वाभिमान पर आज जिस तरह आघात हुआ।

परन्तु आज जब मैं सोचती हूं तब अपने बचपनकी जिस हास्य जनक घटना पर हंसी तो आती ही है लेकिन पूज्य बाने जिस प्रेमसे मुझे दुबारा स्वयं सब कुछ सिखाया उसका पूज्यभावसे स्मरण भी करती हूं। और विचार करने पर आज ऐसा भी लगता है कि शायद उस समय मेरे काम करनेमें कुछ आलस्य भी रहा होगा। क्योंकि बहुत बार बचपनमें जब मुझे काम करनेमें आलस्य आ जाता तो मैं ऐसी किसी खोजमें लग जाती। परन्तु मैं पूर्ण सुमन पैदा

होनेके साथ ही बा और बापूजीके सान्निध्यमें रहनेसे और अुनकी मुझ पर तीव्र देखरेख होनेसे मिट जाते थे।

जिस प्रकार कुम्हार आवेमें अिस ढंगसे सुन्दर बरतनोंका निर्माण करता है और अुसके बाद ही अुन बरतनोंकी कीमत आंकी जाती है अुसी तरह आगाखां महलमें मेरे अिस प्रकारके प्रारंभिक निर्माणका मेरे लिये आज कितना मूल्य है अिसका वर्णन शब्दों द्वारा करना मेरे लिये संभव नहीं है।

२०
सच्चा स्वदेशी

आगाखां महल पूना
१९-९-'४२

मैंने पिछले प्रकरणमें लिखा है कि बापूजीके कामकी (खास तौर पर खाने-पीनेके मामलेमें) बा स्वयं देखरेख रखती थीं। बीमार होतीं तो भी सोते सोते या कुर्सी पर बैठकर सब जगह नजर डाले बिना न रहतीं।

रोज तो बकरीका शामका दूध मीराबहन ही छानती थीं। आज मीराबहनकी तबीयत अच्छी नहीं थी अिसलिये मुझे छानना था। मीराबहन जिस कपड़ेसे दूध छानतीं वह कपड़ा मुझे न मिला। वे सो गओ थीं अिसलिये अुन्हें जगाकर नहीं पूछा जा सकता था। परन्तु अेक बारीक कपड़ा मेरे हाथ लग गया। अिस कपड़ेमें बाहरसे भेजा सब कुछ आया था। वह साफ और बारीक था अिसलिये मुझे मैंने सहज रख छोड़ा था। अुसे आज दूध छाननेके लिये निकाला। मैं बैठकर दूध छान रही थी कि बा आ पहुंचीं। दूध लगभग ३॥ बजे (तीसरे पहरको) दुहकर आता था। अुसी समय डॉ. गिल्डर और कटेली साहब तीसरे पहरकी चाय लेने मेज पर आते थे। बा गरम पानी और शहद पीती थीं और अिन लोगोंको चाय पिलाती और कुछ नाश्ता कराती थीं।

प्रतिज्ञा ले रही हूँ। और बापूजी कितनी दृढ़तासे प्रतिज्ञाका पालन करनेवाले हैं? मुझे अिस बातका कोअी पता न होगा। मुझे साफ और बारीक टुकड़ा देखकर काममें ले लिया। परंतु मुझे आश्रमवालोंके लिअे सावधान करने और सिखानेके लिअे कह रही हूँ। प्रतिज्ञाका पालन करनेवाला होता है या पालन करानेवाला होता है। (तू अिस समय मेरी या बापूजीकी प्रतिज्ञा पालन करानेवाली है।) तू कदाचित बकरीके दूधके बजाय भैंसका दूध बापूजीको दे दे। अिससे बापूजी तो दोषमें नहीं पड़ते परंतु तू पड़ती है। अिसलिअे दोनोंको सूक्ष्म रूपमें प्रतिज्ञाका पालन करना चाहिये। तभी तो हमारी प्रतिज्ञा सच्ची कही जायगी। बाकी तो सब सुविधा-धर्मकी तरह निरा दंभ ही कहलायगा। अब दुबारा खादीके कपड़ेसे दूध छान ले। और अिस घटना परसे आगेके लिअे पूरी सावधानी रखना।

मैंने बाकी दूध फिरसे खादीके टुकड़ेसे छान लिया। परंतु यह समझमें आ गया कि प्रतिज्ञाका सूक्ष्मतम रूपमें कैसे पालन किया जाय और मिलके कपड़ेसे छना हुआ दूध बाने फिरसे खादीके टुकड़ेसे छनवाया अिसमें बाने समझपूर्वक खादीका जो आग्रह बताया अुसकी बात मैंने बापूजीसे कही।

बापूजी कहने लगे: भले ही बा अपढ़ है, परंतु मेरी दृष्टिसे अितना अमल ग्रहण किया है अितना अुसने समझ लिया है, अुसका यह सूक्ष्मसे सूक्ष्म पृथक्करण कर सकती है। और मैं मानता हूँ कि जैसे कालेजमें कोअी खास विषयोंके प्रोफेसर लड़कोंको खास विषय पर पूर्ण शुद्ध और भावनामय व्याख्यान दे सकते हैं वैसे ही बाने भी समझकर अितना ग्रहण कर लिया है अुससे श्रद्धाके साथ ज्ञानको मिलाकर आज तुझे खादीका अितना माहात्म्य सुनाया। जैसे अेकादशीका माहात्म्य तुलसी या प्रत्येक अेकादशीके दिन पढ़वाती है, वैसे ही यह भी अेक पवित्र खादी-माहात्म्य है। यदि घरमें माताओं बालकोंको अैसी शिक्षा देने लग जायं तो अुससे मुझे पूरा संतोष होगा। अिसमें न कोअी अंग्रेजी भूमितिके सीखनेकी जरूरत है और न बीजगणित। केवल

अपना पेट भर सकते हैं। राजासे लेकर रंक तक खाद सकते हैं। जिसमें कितना पुण्य भरा है?

सामाजिक और राजनैतिक पाठोंमें पतिने जो भी पवित्र प्रतिज्ञा ली अुसका सुगमतासे पालन करानेमें पत्नीका साथ सामाजिक दृष्टिसे मेरे खयालमें बड़ी भारी बात है। और राजनैतिक पाठमें तो खादी पहनना ही जिस समय अंग्रेजोंके राजमें अपराध है। मुझमें वागेस मत ही स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है जिसमें मेरे मनमें जरा भी शक नहीं — बशर्ते ४ करोड़ लोगोंके हाथमें चरखा आ सकतो चले। जिस प्रकार आज तो पूने मेरी दृष्टिसे बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

बापूजीने पूब पीछे-पीछे मेरी पढ़ाओीके समय दूसरा नया पाठ देनेके बजाय पू बाकी आजकी बातका अधिक खूब स्पष्टीकरण करके मुझे अेक अनोखा पाठ पढ़ाया।

२१
बाकी राजनैतिक भाषा

आगाखां महल, पूना
२०-१-'४३

पू बा रोज अेक बार पूजा मेंसे अजीर, खरजूर, मुनक्का काली द्राक्ष वगैरा जो भी हो अुसे दूधमें अुबालकर लेती थीं। यही अुनका निज दवा और खुराक दोनोंका काम करती थी। (अुनसे दूसरी खुराक नहीं ली जाती थी।) जिसी प्रकार बापूजीके लिये खजूर खुराक और दवाका काम देती थी। बापूजी अक्सर रोज शामको दूधमें अुबालकर खजूर लेते थे। ये सब चीजें करांचीके मेरे साथ सबध रखनेवाले कुछ भाभी-बहन भेजती थे और करांचीका पूजा मेवा तो प्रख्यात हुआ। जब बापूजी बाहर थे तब तो जब चाहिये तभी मंगवा लेती थी। परन्तु अब जेलके नियमानुसार पत्र लिखकर तो मंगवा ही नहीं सकती। जिसलिये यह समझकर कि बापूजी

और बापूके लिए भेजा नहीं होता। आज लोगोंकी तरफसे भी शान्ति-कुमार भाई द्वारा भेजा हुआ पार्सल आज मिला। साथ ही बापूजीकी प्रत्येक जयंती पर बहुतसे स्त्री-पुरुष अपने अपने हाथके सूतकी खादी धोतियां रुमाल वगैरा बनाकर पू० बापूजीको अर्पण करते थे। परंतु जिस समय उन सबको पता नहीं होता कि ये चीजें बापूजीके पास कैसे पहुंचेंगी। फिर भी कुछ परिचितों और आश्रमवासियोंको मालूम था कि शान्तिकुमार भाईके द्वारा ऐसी चीज बापूको मिलती हैं जिस-लिये प्रभाबहन कंटक अमतुस्सलाम बहन तथा विजया दीवानजीकी ओरसे पू० बापूजीकी आगामी जयंती पर भेंट करनेके लिये इस पार्सलके साथ खादीका थान धोतियां और रुमाल इत्यादि मिले।

पार्सल खोलते ही पहले खजूर देखी। खजूर स्वच्छ और सुन्दर थी। मैं तुरन्त बापूजीको दिखाने ले गयी। ऐसी खजूर मैंने कभी नहीं देखी थी। और उसके बाद भी अभी तक मैंने ऐसी खजूर नहीं देखी। वह कुछ और ही किस्मकी थी। बड़े दानेकी बिलकुल बारीक गुठलीवाली स्वच्छ और प्रत्येक दाना अलग अलग और रसदार था। ऊपर बटर पेपर लिपटा हुआ था।

बापूजी और बाको दिखाने गयी। बा अपने पलंग पर बैठी थीं। इतनी बढ़िया खजूर देखकर कहने लगीं "देख ये शान्ति-कुमार कितनी सावधानीसे सब कुछ इकट्ठा करके भेजता है। लेकिन मैं बूढ़ी और सुमतिको आशीर्वादके लिये नाम तक नहीं लिख सकती क्योंकि मुझसे पीछे गांधी नामका पुछल्ला नहीं है। सरकारका ऐसा काम है।"

यह बात देखनेके बाद कि और क्या क्या किसकी तरफसे आया है बापूजीने बासे कहा "तुम जानती हो न कि शान्तिकुमार सिंधियाके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं और अब हमारे अेजण्ट बन गये दीखते हैं। उनमें यह कुशलता है। हमारे लिये खरीद करके सब चीजें भिजवाना उन्हें बुरा नहीं लगता बल्कि आनन्ददायक मालूम होता है। ये रामदास और देवदास जैसे ही हमारे लिये सब कुछ करनेको तैयार रहते हैं। सुमति और शान्तिकुमार तो मानो न्यौछावर

करनेवाले पति-पत्नी हैं। परन्तु सिन्धियासे अुन्हें आमदनी होती है जब कि हमारे वे अवैतनिक मेजेंट हैं। जिस प्रकार जैसे सबको अपनी पसन्दका काम मिल जाता है वैसे ही शायद शान्तिकुमारके लिये भी हुआ। (शान्तिकुमार भाओी नरोत्तम मोरारजी तो बापूजीके पुत्रोंमें से अेक हैं। पू० बापूजी जब जेलसे महलसे निकले तब कुछके लिये जिन्हींके मेहमान बने थे। अिसलिये अुनका परिचय अनावश्यक है।)

जिस पर बाने मुझसे अपने पिताजीको पार्सलकी पहुंच लिख देनेको कहा। मैंने तो पहुचमें साफ नामसहित लिखा कि शान्ति कुमार भाओीके द्वारा जितनी चीजें मिली हैं वगैरा।

बाको मैंने पत्र पढ़कर सुनाया। बा भी जबरदस्त थीं! राजनैतिक भाषा किस तरह काममें ली जाती है यह जानती थीं! मेरा पत्र नापास कर दिया। कहा — जिस तरह साफ लिखेगी तो तेरा पत्र कौन जाने देगा? पत्र कभी जयसुखलालको मिले भी नहीं तो काटकूट किया हुआ मिलेगा। जिससे तुम सबको चिन्ता हो जायगी कि कोओी बीमार तो नहीं है। ला, यहां बैठ। मैं नये सिरेसे पत्र लिखवाती हूं। फिर अुन्होंने छोटा परन्तु सचोट नया पत्र लिखवाया।

चि० जयसुखलाल

तुम्हें चि० मनु समय समय पर पत्र लिखती रहती है जिसमें से बाकी ठीक पर नहीं लिखती। तुम सबके पत्र मिलते हैं पढ़कर आनन्द होता है। चि० मनुका पढ़ाओीका क्रम अच्छी तरह जम गया है। मेरी सेवा भी खूब करती है। बापूजी डॉ० मिस्टर प्यारेलाल और सुशीलाके पास बारी-बारीसे नियमित पढ़ती है। स्वास्थ्य हम सबका अच्छा है। चि० संयुक्ता चि० अुर्मिला और चि० विनोदको हमारा आशीर्वाद।

तुम्हारे अजावस्के कुशल-समाचार जाने। बहुत जरूरी भी था। मौकेका था और बढ़िया था। सबको मेरा खास तौर पर आशीर्वाद लिखना। तुम्हें मेरा आशीर्वाद।

२-९-४३ बा तथा बापूके
आशीर्वाद

२२
मेरी परीक्षा

आगाखां महल पूना
२१-९-'४३

दोपहरको सुशीलाबहन मेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लेनेवाली थीं। मैं अुसकी तैयारीमें लगी थी। कुछ शब्द रट रही थी। मेरी यह रटन्त जब तक सुशीलाबहनने प्रश्नपत्र मेरे हाथमें नहीं दिया तब तक अर्थात् अन्तिम क्षण तक जारी रही। प्रश्न भी पाठशालाके ढंग पर ही बाकायदा ४ पन्नोंकी नोटबुक बनाकर स्याहीसे लिखने थे। समय बंधा हुआ था। परंतु सुशीलाबहन खुद अेम. डी. थीं अिस लिये अुन्हें विद्यार्थियों-संबंधी अनुभवोंका विश्वास तो होना ही चाहिये। मुझे भी पूरा विश्वास था कि जो पांचवीं रीडर मैं पढ़ रही हूं अुसे मैंने अितना रट लिया है कि अुसमें से शब्दोंका आशय या किसी पाठको जबानी बोलनेके लिये मुझसे कहा जायगा तो बराबर बोल जाअूंगी। अिसलिये पास होनेके सिवाय १०० में से कमसे कम ८० नंबर तो मुझे मिल ही जायंगे। परंतु यह कल्पना मुझे कहांसे होती कि वे पाठशालाके आशय पूछेंगी तथा जो चौथी रीडर मैं पढ़ चुकी हूं अुसके शब्द पूछेंगी अथवा अनुवाद करायंगी? मुझसे तो अितना ही कहा था : कल तेरी अंग्रेजीकी परीक्षा लूंगी। मैं मनमें गर्व कर रही थी कि [illegible]। पांचवीं रीडरके सिवाय चौथेकी (४थी कक्षाकी) पढ़ाअीमें से थोड़े ही पूछेंगी? पर अुन्होंने मुझे अिससे बेखबर नहीं रखा था। अुन्होंने कहा था : पाठशाला चौथी रीडर और पांचवीं रीडरमें से प्रश्न पूछेगी। मेरा खयाल था कि चौथी कक्षाके कोअी सवाल नहीं पूछेंगी। परन्तु मेरी धारणा बिलकुल गलत निकली और सभी प्रश्न लगभग चौथी कक्षाकी पढ़ाअीमें से ही पूछे गये। अैसा अकल्पित प्रश्नपत्र देखकर मैं घबरा गयी।

वा फोन पर पैर फैलाये बैठे थीं। मुझसे बोलीं खूब पढ़ रही थी। कल परीक्षाके मारे बोलने भी नहीं लगी। बिसलिये बेक घंटेमें जवाब शायद जल्दी ही पूरा कर लेगी। परंतु रैल अच्छी तरह विचार कर लिखना। वो लिखे मुझे दुबारा पढ़ लेना। भूलें न हों और पास हो जाना।

प्रश्नपत्र देखकर मेरे मुहसे निकला निकल गया सुधीला बहन! यह तो आपने चौथी रीडर और पाठमाला — भाग १ में प्रश्न दे दिये। परंतु बिस लड़की पाचवी रीडरके जो बीस पाठ हो गये हैं बुनमें से या पाठमाला — भाग २ में से कुछ भी नहीं पूछा!

सुशीलाबहन हसे बोलीं देखिये वा मैं कितनी दयालु हूं! मनुको पूरे नंबर लेनेका कैसा बढ़िया अवसर मैंने दिया है? वह पढ़ती है पाचवी अंग्रेजी और सवाल मैंने चौथी अंग्रेजीके पूछे हैं। बिसलिये मनु शायद सौ में सौ ही नम्बर ले जायगी।

बाको क्या पता कि मेरी बिस समय कैसी दयाजनक स्थिति है?

वे बोलीं "परंतु सुशीला तूने भूल की। मुझे तो बिससे पांचवीमें से भी सवाल पूछने चाहिये थे। चौथीके (अर्थात् पिछली बातोंके) सवालोंके जवाब तो मेरे जैसी भी दे सकती है बिसमें क्या है?

मझे थोड़ी आशा हुबी कि बाके कहनेसे अगर बेक दो सवाल मेरी की हुबी रटाबीमें से आ जायं तो मजा आ जायगा।

सुशीलाबहन मेरी विषम स्थिति फलमरम समझ गयी। बिसलिये कहने लगीं "अब बा आज तो हो गया सो हो गया। दूसरी दफा देखूंगी।

मैंने जितना आता था बुतना मुश्किलसे लिखा। घंटा पूरा हो गया। मेरा पर्चा सुशीलाबहन बुसी समय देखने लगीं। सही गलत मिलाकर कुल १ में से ४५ नंबर मुश्किलसे मिल सकी। मैंने कहा "सुशीलाबहन मैंने पहलेका पढ़ा ही नहीं था। आपने पिछला पढ़ लेनेको कहा था परंतु मैंने बुतना कष्ट नहीं किया। अब चौथी

कक्षाकी अन्तिम परीक्षा मनसाली काकाकी ली थी तब तो मुझे १
में से ७ नम्बर मिले थे और तीन लड़कियोंमें मेरा पहला नंबर
आया था। (जब मैं सन् '४२ में सेवाग्राम गयी तभी मनसाली
काकाने मेरी परीक्षा ली थी। यह बाको अच्छी तरह याद था।)

मैंने अुपरोक्त शब्द अपनी कुछ बहादुरी बतलानेको सुशीला
बहनसे कहे।

पर बा नाराज हो गयीं — पढ़ लिया सो तो भूल जानेके
लिये ही न? तभी तो तूने अपने सवाल पढ़ते ही फौरन सुशीलासे
कहा कि चौथी रीडरमें से क्यों प्रश्न दिये पांचवीं रीडरमें से क्यों
नहीं? आता नहीं था जिसीलिये तो अैसा पूछा। सुशीलासे पूछ कि
तुमसे युनिवर्सिटीमें कभी जिस तरह पूछा गया था? स्टन्ट करनेसे सब
मना करते हैं तो भी करती ही रहना चाहिये? समझकर अेक बार
भी पढ़ लिया जाय तो कैसा अच्छा याद रहता है?

फिर सुशीलाबहनसे कहने लगीं। "अब जिसे चौथी ही पुस्तक
पढ़ाना। भले ही अेक वर्ष लग जाय। परंतु जो पढ़े सो पक्का होना
चाहिये।

मेरी आंखोंसे टप टप आंसू गिरने लगे। चौथी कक्षाके प्रश्न
पूछनेके कारण सुशीलाबहन पर मुझे गुस्सा आ गया और दिन भर
उनसे बोली नहीं। बाके साथ भी नहीं बोली। मुझे दुबारा चौथी
कक्षामें अुतार देना कितनी मानहानिकी बात थी? यदि पाठशालामें
पढ़ती होती और जिस तरह अुतार देते तो पढ़ना छोड़ देती।
परन्तु [illegible] सेवाग्राम [illegible] जाना कैसे हो सकता है? जिससे
आजका मेरा सारा दिन [illegible] हो गया। शामको घूमने नहीं जा रही
थी [illegible] बापूजीने [illegible] हाथ पकड़कर मुझे साथ ले लिया।
[illegible] साथ [illegible] थी और दूसरे लाठी समान रहे थे।

[illegible] और बापूजी [illegible] थे। [illegible] मैंने
सुना [illegible] और [illegible] और लगने भी
[illegible]

घमड़ होता है। मैंने जब तेरे गुस्सेकी बात सुनी तभी मुझे तुमसे कहना चाहिये था। परन्तु बादमें सोचा कि दूसरे समय तुझे समझाअूंगा। मैं मानता हूं कि सुशीलाने तुझे डॉक्टरी ढंगसे यह अिन्जेक्शन दिया है। वह तुझे बार-बार समझाती थी कि रटा न कर। परन्तु तू अिसके लिये प्रयत्न ही नहीं करती थी। अिसलिये तुझे पड़ी हुई रटनेकी कुटेव अब अिस पाठशालामें अपने आप मिट जायगी।"

रटनेसे मैं कितनी ज्यादा बदनाम हो गयी, अिससे मैं खूब शर्मायी। परंतु अिसका चमत्कारी लाभ तो तभी अनुभव किया जब मैं आगाखां महलसे छूटी और फिरसे कराचीके शारदा मंदिरमें पढ़ने लगी। अिस बीच अेक सावधानी रखी कि किसीके देखते हुअे चाहे जब रटना बिलकुल बन्द कर दिया। लेकिन कोअी न देखता तब रट भी लेती थी।

२१

चरखा-द्वादशीका अुत्सव

आगाखां महल, पूना
२५-९-'४३

आज दोपहरको तीन बजे बाद कलके कार्यक्रमका विचार करनेके लिअे डॉक्टर साहब, मीराबहन, प्यारेलालजी और सुशीलाबहन बैठे। मैं अिस कमरेमें नहीं रखी गयी थी क्योंकि बात परसे बात निकल जाय और मैं अनजानमें कुछ कह दूं तो सारे विनोदका मजा किरकिरा हो जाय। परन्तु जब अनजानी तौर पर कोअी बात होती है तब कुछ ज्यादा अुत्कण्ठा जागृत हो जाती है। क्योंकि मुझे अितना तो पता था कि ये लोग कलके लिअे कोअी कार्यक्रम सोच रहे हैं। मन बड़ा ललचा। मैं जब क्या करती तब जाने और देखनेसे अिनकार कर देना था और मन मन पकड़ रखा था। और अिन

जैसे दीवालीके बाद नव वर्षके दिन जल्दी उठ कर हम तैयार होते हैं, वैसे ही पू॰ बापूजी और बाके सिवाय हम सब अपने आप ही जाग गये और चार बजे बापूजीके उठनेसे पहले नहा-धोकर तैयार हो गये।

चरखा-द्वादशी
२१-९-'४३

सवेरे तड़के ही सबसे पहले बाने बापूजीको प्रणाम करते हुये कहा: "लीजिये, यह मेरा अन्तिम जयन्तीका प्रणाम है। अगली द्वादशीको मैं रहनेवाली नहीं हूं।"

इसके बाद हम सबने बारी बारीसे बापूजीको प्रणाम किया। रातभर किये गये शृंगारमें — सारे बरामदेमें अलग-अलग रंगोंसे सुन्दर अक्षरोंमें लिखे गये संस्कृतके पवित्र सूत्र और श्लोक, आकर्षक कलामय चौक और फूलोंकी महक — ये सब तो बाह्य आकर्षण थे, परंतु बाकी मौजूदगीमें उत्सवका कुछ अनोखा ही रूप हो जाना स्वाभाविक था। प्रार्थनामें आजका भजन था:

और नहीं कछु कामके
मैं भरोसे अपने रामके।
दोउ अक्षर सब कुल तारे,
वारी जाऊं उस नाम पे।
तुलसीदास प्रभु राम दयाघन
और देव सब दामके।

यह भजन बापूजीके इक्कीस दिनके उपवासके समय गंगा बहनने खास तौर पर तारसे भेजा था और बापूजीको बहुत प्रिय था।

प्रार्थनाके बाद नित्यका क्रम चला। बा उठीं। उनके दातुन-पानीका इन्तजाम कर और चाय देकर नियत स्थान पर मुझे सुशीलाबहनने डॉ॰ साहबके कमरेमें न जानेको कहा था। इसलिये मैं

मैंने बापूजी और बाके पैर घसती घसती मुझे जितनेमें २॥ से ३॥ बजेका सामूहिक कताओका वक्त हो गया।

२॥ से ३॥ तक सबने मौन-कताओ की।

४॥ बजे कैदियोंको मिठाओ, चिवड़ा और सेव-गांठिये दिये। यह सब कैदियोंकी सहायतासे घर पर ही बनाया गया था।

मीराबहन अपनी नयी धुनमें चार बजेसे ही बैठी थीं। वे अेक मिट्टीका मंदिर बना रही थीं जिसमें मंदिर, मस्जिद और गिरजेका आकार दिख सके। छः बजे अुन्होंने यह काम पूरा किया। छः बजे जब बापूजी घूमने गये तो अुसी कमरेमें मीराबहनने फूलोंके पौधोंके गमले रखकर चमनका दृश्य बनाया। पत्थर रखकर पहाड़ बनाया और अुसमें यह मंदिर रखा। सरावियोंमें छोटे दिये जलाये। मंदिरके भीतर शिवलिंगके रूपमें अेक चमकदार पत्थर रखा, जो रास्तेमें मिला था।

बापूजी घूमकर आये जितनेमें तो अुस कमरेका दृश्य मंगल जैसा बन गया। मैं अिस काममें मीराबहनकी सहायिका थी। सब बत्तियां बुझा दी गयीं। अिन दियोंका प्रकाश सुन्दर मालूम हो रहा था। यह दृश्य अैसा अनुपम था मानो वनमें मंगल हो रहा हो।

बा तो बहुत ही आस्था और श्रद्धावाली थीं। अुन्होंने अुस पत्थरको शिवलिंग ही मानकर अुसे अपने तुलसीके गमलेमें रखवाया। वहां वे रोज प्रातः काल पूजा करतीं और दीपक किया जलातीं। यह अुनका शान्ति प्राप्त करनेका स्थान था।

(बोधरूपा और सौभाग्यवती मीराबहनका बनाया हुआ यह मिट्टीका मंदिर और यह पत्थर जिसकी बा शिवलिंग मानकर पूजा करती, दोनों प्रसादिया मेरे पास अुस पवित्र चरखा-जयंतीके प्रतीक-स्वरूप मौजूद हैं।)

शामकी प्रार्थनामें बाका प्रिय भजन 'हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जतां नथी जाणी रे' गाया। यह भजन आश्रम भजनावलिमें है।

प्रार्थनाके बाद बापूजीने सोमवारका मौन लिया। अिस पर्व और अुमंगके दृश्यको देखकर किसीका भी जी नहीं भर रहा था।

आगाखाँ महल पूना
२२-१-’४४

आज डॉ॰ गिल्डरका बासठवाँ जन्म-दिवस था। अिसलिये सवेरे जरा धूमधाम रही। डॉक्टर साहब बापूजीको प्रणाम करने आये तब बापूजीने अपने हाथके सूतकी बासठ तारका हार अुन्हें पहनाया। बा और हम सबने तिलक करके डॉक्टर साहबको हार पहनाये। बाने तो शक्कर देकर सबका मुंह भी मीठा किया।

कटेली साहबने खानेकी मेज पर अच्छी तरह पैक किये हुये और अूपर पतेके लेबल चिपके हुये छोटे बड़े पार्सल अिस तरह जमा किये थे मानो डॉक्टर साहबके जन्मदिनके निमित्त बाहरसे भेंट आयी हों। अेक पार्सल पर स्मोकलेस सिगार लिखा हुआ था। अुस पार्सलमें दूध कोको गुड़ और मूंगफलीका भूसा मिलाकर चुरुट जैसा ही रंग और आकार बनाकर अूपर सच्चे चुरुटका ही सुनहरा कागज लपेटकर चुरुटके लकड़ीके डब्बेमें (जिस कंपनीकी तरफसे ये बने हों अुसका निशान कायम रखकर) भर दिया। डॉक्टर साहबके चुरुट काममें लेनेके बाद जो डब्बे खाली होते अुन्हें हममें से जिसे आवश्यकता होती वह ले लेता। वैसे डब्बेका अुपयोग किया गया। चुरुट जैसी यह चाकलेट बनानेका परिश्रम प्यारेलालजीने किया था।

दूसरे पार्सलमें अेक कसीदा किया हुआ मेजपोश था। अुसे सुशीलाबहनने तैयार किया था।

अेक पार्सलमें मिट्टीके खिलौने — बकरी बैल सांप अित्यादि थे। ये मीराबहनके बनाये हुये थे।

ये सब पार्सल डॉक्टर साहब सुबहकी चाय पीने मेज पर आये तब कटेली साहबने गंभीर चेहरा बनाकर अुन्हें दिये और वहीं पर खोले। अिस प्रकार आनन्द-विनोदमें प्रातःकालका समय कहां चला गया अिसका पता ही नहीं चला। अिसलिये सुबह बैडमिंटन खेलनेके लिये हमें मुश्किलसे पन्द्रह मिनट मिले।

हम खेलने नीचे अुतरे। सबकी समझ यह थी कि आज तो डॉक्टर साहबको ही जीतना चाहिये। अिसलिये हमारे पक्ष बनाये

गये। अेक दलमें कटली साहब डॉक्टर साहब और प्यारेलालजी और दूसरेमें मीराबहन सुशीलाबहन और मैं। हमारा दल हारा और डॉक्टर साहबका दल जीता। अिससे बापूको खूब आनंद हुआ।

आगाखाँ महल पूना
२९-१ -'४१

दीवालीका त्यौहार हमारे यहाँ खूब धूमधामसे मनाया जाता है। परंतु बापूजीके लिये तो ये सब दिन अेक प्रकारसे समान ही थे। क्योंकि सब जेलमें थे और भारतमें गुलामी थी अिसलिये आनंद तो होता ही कैसे? परन्तु बा शकुन रखे बिना कैसे मानतीं? लगभग नौ बजे मैं रोज अुनके सिरमें मालिश करने जाती थी। मुझसे कहने लगीं 'आज दीवाली है न? अिसलिये तू मेरी मालिश करके तुअरकी दाल चढ़ा देना और पूरनपोली बनाना।' बादमें शायद बच्चोंकी बात करते हुअे बोलीं "बापूजीको पूरनपोली अितनी अधिक प्रिय थी कि हर रविवारको जरूर बनवाते थे।"

मैंने कहा 'यदि हम शक्करके बजाय गुड़की बनायें और बकरीका घी काममें लें तो बापूजीको खानेमें क्या अेतराज हो सकता है?'

बा बोलीं "तू बापूजीसे पूछ लेना।"

मैंने बापूजीसे पूछा। बापूजी जरा मुस्कराकर बोले 'यदि बा चखे तक नहीं तो मैं अुसके बदले खा लूँगा।' मेरी समझमें नहीं आया कि बापूजी यह शर्त क्यों लगा रहे हैं अिसलिये मैंने पूछा। सुशीलाबहनने समझाया 'बाको दाल भारी पड़ती और हृदयकी धड़कन बढ़ जायगी अिसीलिये बापूजीने अैसा कहा होगा।'

यह समझ लेनेके बाद जो शब्द बापूजीने कहे थे वही मैंने बासे कह दिये।

अुन्होंने तो अेक क्षणका भी विचार किये बिना कह डाला 'यदि बापूजी खायें तो मुझे पूरनपोली चखनी तक नहीं।' बापूजी और हम सबको अुन्होंने आनंदपूर्वक पूरनपोली खिलायी।

सबेरे वे बापूजीको प्रणाम करने आयीं, तब बापूजीने अपने काते हुअे सूतकी अठारह तारकी माला मुझसे मांगी।

मीराबहन बापूजीके पास ही थीं, जिसलिअे मुझे आश्चर्य हुआ कि सिर्फ अठारह तार क्यों? परन्तु अुस समय यह बात पूछनेका मौका नहीं था। मैंने तुरन्त अठारह तारकी माला दे दी। मीराबहनको गाय, बकरी आदि पशु-पक्षियों पर खूब ही प्रेम है। जिसलिअे रुईकी साहबने मिट्टीकी गाय, चिड़िया आदि खिलौनोंका पार्सल बनाकर बापूजीके द्वारा उन्हें दिया।

जिस मांगलिक विधिके बाद जब मीराबहन मेज पर दूध पीने बैठीं तब मैंने पूछा : "आपको आज बापूजीने सिर्फ अठारह तारकी माला किस लिअे पहनायी? आम तौर पर नियम यह है कि जिसका जो साल शुरू हुआ हो अुसे अुतने ही तारकी माला पहनायी जाय।"

मीराबहनने मुझसे कहा : "मैं अपना जन्म अुस समयसे मानती हूं जबसे मैं बापूजीके चरणोंमें आयी हूं। बापूजी जैसे दुनियामें जीना बड़े सौभाग्यकी बात है। परन्तु बापूके चरणमें रहना तो अुससे भी अधिक है। जबसे मैं बापूजीके पवित्र चरणोंमें आयी तबसे अपना सच्चा जन्म हुआ मानती हूं। ७ नवम्बर १९२५ को अर्थात् आजसे अठारह वर्ष पहले मैंने बापूजीके चरणोंमें सिर रखा। जिसलिअे आज मुझे अठारह वर्ष पूरे होकर १९ वां वर्ष लग रहा है। भले ही तुम्हें दीखनेमें मैं बड़ी लगती हूं परन्तु अपने मनमें मैं बापूजीके सामने अठारह वर्षकी बालिका ही हूं।"

* * *

प्रबोधिनी अेकादशी

–११–'४३

प्रबोधिनी अेकादशीके दिन तुलसीका ब्याह होता है। और बाकी तुलसी पर असीम श्रद्धा थी। सुबह-शाम तुलसीके गमलेमें दीया किया करतीं। प्रार्थना या पाठ भी वहीं बैठकर करतीं और अेक तुलसीका गमला बरामदेमें रहता।

पू॰ बाके पास पत्तोंका सुन्दर मंडप बनवाया। सुशीलाबहनने रंगोलीका अक रंगीन बड़ा चौक बना दिया। अुस पर पलंग रखवाया। सामने अक दिया और तुलसीको फूलोंसे खूब सजाया गया। मूंग-घीके मेवाका प्रसाद रखा। शामके समय बापूजी भी देखने आये। आरती अुतारी और रोजके समय प्रार्थना हुआी। जब तक नियमके अनुसार रामायणकी चौपाअियां गायी गयीं तब तक धूप-दीप बत्ती ही रखे गये। प्रार्थनाके समय रोशनी बंद कर दी जाती थी। रोशनी बन्द हो जानेके बाद अगरबत्ती और घीके दियेका तेज और तुलसीका बढ़िया शृंगार देखते ही बनता था। साथ ही प्रार्थना, रामधुन, भजन, रामायणकी चौपाअियां सुशीलाबहनके मंजीरे और मीराबहनके तंबूरेकी झंकारके साथ गाये जा रहे थे। रोजकी प्रार्थनाकी अपेक्षा आज कुछ अनोखा ही वातावरण बन गया था।

सप्ताहमें दो बार भजन गानेकी मेरी बारी रहती थी सोमवार और शुक्रवार। आज सोमवार था। बाने नीचेका भजन गानेकी सूचना की

दिलमां दीवो करो रे दीवो करो
कूडा काम क्रोधने परहरो रे दिलमां

दया दिवेल प्रेम परणायु लावो
मांही सुरतानी दिवेट बनावो
मांही ब्रह्म अग्निने चेतावो रे दिलमां

साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे
त्यारे अंधार मटी जाशे
पछी ब्रह्मलोक तो ओळखाशे दिलमां

दीवा मांये प्रगटे अेवो
टाळे तिमिरना जेवो
मंन मंथे तो नीरखीने लेवो दिलमां

दास रणछोड़ घर संभाळ्युं,
जडी कूंची ने ऊघड्युं ताळुं,
थयुं भोमंडळमां अजवाळुं दिलमां

[अर्थ — दिलमें दिया जलाओ। काम-क्रोधकी गुलामीको छोड़ो। दयाका तेल और प्रेमका दीपक लाओ। अन्दर ध्यानकी बत्ती बनाओ और अुसमें ब्रह्मकी अग्नि प्रगटाओ। जब सच्चे हृदयका दिया जलेगा तब अंधेरा मिट जायगा। बादमें ब्रह्मलोकका ज्ञान होगा। दिया हृदयरूपी आकाशमें अैसा जले जिससे सारा अंधकार नष्ट हो जाय। अुसि आकाशमें अच्छी तरह देख लिया जाय। दास रणछोड़ कहते हैं कि ज्ञानकी कुंजी मिल गयी, ताला खुल गया और हमें आत्मज्ञान हो गया। जिससे भूमण्डलमें अुजाला हो गया।]

अिस प्रकार आजका भजन भी बापूने अिस वातावरणके अनुरूप ही ढूंढ निकाला।

२९-११-'४२

डॉ॰ सुशीलाबहनकी भाभीके अेक दिनकी छोटी बच्ची छोड़कर गुजर जानेका तार मृत्युके दस दिन बाद सुशीलाबहनके हाथमें आया। अिस संबंधमें गृहविभागको तो पत्र लिखा गया था, परंतु साथ ही बापूजीने अिस प्रकारका पत्र भेजनेका भी आग्रह किया था कि सुशीलाबहनको अुनकी माताजीके पास दिल्ली भेजा जाय। लेकिन यह असंभव बात थी क्योंकि सरकार बापूजीके पास रहनेवालोंमें से किसीको बाहर नहीं भेजना चाहती थी। तब बापूने यह आग्रह किया कि सुशीलाबहन अब तक अपने किसी भी संबंधीको पत्र नहीं लिखतीं। लेकिन यह टेक अभी समय छोड़ देनी चाहिये। सुशीलाबहनने कहा कि सरकारको जब अेक बार कहा चुकी कि मैं पत्र नहीं लिखूंगी तो अब कैसे लिख सकती हूं? तब बा बापूजीके पास गयीं और कहा कि सुशीलाबहन तथा प्यारेलालजी दोनोंको भाभी-बहनको पत्र लिखना ही चाहिये। बापूजीके समझानेसे दोनों भाई-बहनने पत्र लिखा। परंतु

मुझे मध्यप्रान्तकी सरकारने छोड़ा था और देवदास काकाके पत्रमें अुसका अुल्लेख किया गया था जिससे कुछ गलतफहमी हुआी। सुशीला बहनकी माताजी दिल्लीमें रहती थी जिसलिये समय समय पर देवदास काका अुनसे मिलते रहते थे। अुनकी स्थिति देखकर देवदास काकाने बाके नाम पत्र लिखा कि सुशीलाबहनने छूटनेसे अिन्कार कर दिया परन्तु अुन्हें अैसा नहीं करना चाहिये था। अुनकी माताजीको अुनकी सहायताकी बड़ी आवश्यकता है।

बड़ी गलतफहमी होनेके कारण बाने थोड़ा अुलहना मुझे भी दिया क्योंकि बाके पत्र मैं ही लिखती थी। पत्र यद्यपि मैं लिखती परन्तु बा दस्तखत तभी करती जब खुद पढ़ लेती कि क्या लिखा है। बाको जिससे बड़ा दुःख हुआ। अुन्होंने सोचा सुशीलाबहनकी माको कहीं अैसा न लगे कि मेरी बिमारीके समय भी मेरी पुत्री काम नहीं आती। जिसलिये अुन्होंने बापूजीसे कहकर अेक तार दिलवाया कि सरकार सुशीलाको नहीं परन्तु मनुको छोड़ रही थी।

सुशीलाबहनने तार देनेके लिये बहुत मना किया, परन्तु बाका हृदय मातृहृदय था। और बच्चोंको माताके प्रति कैसा बर्ताव करना चाहिये अथवा लड़का या लड़की अपने माता-पिता या बड़ोंके प्रति जब अनको अप्रिय लगनेवाला व्यवहार करता है तब अुन्हें कष्ट या मनकाला व्यवहार कितना दुःख पहुँचाता है जिसका बाको अच्छी तरह अनुभव था। जिसलिये अुन्होंने सुशीलाबहनकी बात न मानी और तार दिलवाकर ही चैन लिया।

२५

जेलमें मुलाकातें

आगाखाँ महल, पूना
२७-११-'४३

बापूजीने (भारत-सरकारको) जिस आशयका अेक पत्र लिखा था कि कार्य-समितिके सदस्योंसे मिलनेके बारेमें नये सिरेसे विचार किया जाय तो आज बंगालमें जो भुखमरी फैली हुअी है, जिसमें हजारों आदमी मर रहे हैं और सेवा करनेवाले जेलोंमें सड़ रहे हैं, उसका कोअी हल निकल सकता है। अस पत्रका भारत सरकारके मंत्री रिचार्ड टॉटनहामकी तरफसे जवाब आया कि

> ८ अगस्त १९४२के प्रस्तावके विषयमें आपके विचारोंमें कुछ भी परिवर्तन हुआ नहीं दीखता। किसी तरह जिस बातका कोअी चिह्न दिखाअी नहीं देता कि कार्य-समितिके सदस्योंमें से भी किसीका मन आपसे भिन्न हो गया हो। और यह तो दोनोंको अच्छी तरह मालूम है कि किन शर्तों पर सहानुभूतिपूर्ण विचार हो सकता है।

जिसके अलावा बापूजीने अेक और पत्र लिखा। डॉ. गिल्डरकी पत्नी बीमार थीं। परन्तु नियम था कि बापूजीके साथ रहनेवाले कैदियोंको बापूजीके साथ होनेके कारण साधारण कैदियोंको हकके तौर पर जो मुलाकातें मिलती हैं वे भी नहीं मिलती थीं। जिसलिअे बापूजीने लिखा कि

> मेरे साथ रहनेवालोंमें जिस डॉ. सुशीला नय्यरको ही तार देकर मिलना हो अथवा असे अवसर पर भी कठिनाअी भुगतनी पड़ी हो सो बात नहीं है। डॉ. गिल्डर भी मेरे साथ रहनेके कारण अपनी पत्नीसे भी नहीं मिल

ये सभी बातें कर ही रहे थे कि जितनेमें अुनका नागपुरसे टेलीफोन आया कि निर्मला काकी (रामदास गांधीकी पत्नी) को भेजा है। कर्नल भंडारीने कहा कि यदि आज बा चाहती हों तो आज ही मुलाकात कर सकेंगी जिससे मुलाकातियोंका समय भी खराब न हो और मुलाकातके दरमियान बा और बापूजी ही मौजूद रह सकेंगे दूसरा कोओी नहीं।

आगाखाँ महल पूना
४-१२-'४३

शामको चार बजे निर्मला काकी नागपुरसे मिलने आयीं। मैंने केवल अुन्हें प्रणाम किया बात तो हो ही नहीं सकती थी।

निर्मला काकी लगभग दो घंटे रहीं। बाने परिवारके सभी लोगोंसे कुशल-समाचार पूछे। मुझे ऐसा लगा कि आश्रमकी छोटीसे छोटी बातें और आश्रमवासियोंके स्वास्थ्य अेवं शिक्षाके कार्यक्रमके बारेमें सब कुछ जानकर बाने मनमें शान्ति महसूस की। आज वे खुश दिखायी देती थीं।

रातको समाचार आया कि एक वैद्यराज कल आनेवाले हैं। रात अच्छी बीती अैसा कहा जा सकता है। एक बजे सांस चढ़ी हुई थी। बाके बदन पर बाम मल लगाया। गरम पानी और शहद दिया। मैंने [illegible] हाथ फेरा। तुरन्त सो गयीं। पिछले तीन दिनोंकी अपेक्षा आज रात अच्छी नींद ली।

आगाखाँ महल, पूना
५-१२-'४३

[illegible] मौन [illegible] था [illegible] सब कुछ शान्त लगता था। [illegible] बिना [illegible] बापूजी जिससे लगभग [illegible] दिनसे [illegible] भूमितिकी पुस्तक (Plane Geometry) [illegible] आज वह पूरी हो गयी तो बापूजीने [illegible] बार मैंने मेरी भूमितिकी पुस्तक पर

शामको हम घूमने निकले कि अेकाअेक बाकी तबीयत बिगड़ी। अिसलिअे तुरत सब अूपर आये। सुशीलाबहन और डॉ॰ गिल्डरने अुनकी परीक्षा की। जरा ठीक लगने पर प्रार्थना की।

सुशीलाबहन तो दस बजे तक बाके पैरों ही रहीं। मैं शरीर दबाने या कुछ जरूरी चीज ला देनेमें ही मदद कर सकती थी। परंतु डॉक्टरके नाते वे तो तीन-चार घंटे तक लगभग लगातार बैठी रहीं। दस बजे बापूजी थोड़ी देर बैठे। सुशीलाबहनको और मुझे बापूजीने आराम करनेके लिअे कहा। मैंने अिन्कार किया तो बापूजी बोले — मैं कहूं वैसा करती रहेगी तो ही पार अुतरेगी। अिसे बाकी सेवाका काम लेना हो अुससे पहले अपनेको समझना होगा।

मैं चुपचाप अपने पलंग पर चली गयी। मेरे जानेके थोड़े घंटे बाद ही बाने बापूजीको भी आग्रह करके सोनेको भेज दिया। बापूजी सोनेको अुठे और प्यारेलालजी बाके पास बैठे। प्यारेलालजी दो बजे तक रहे। बीचमें अेक दो बार सुशीलाबहन और डॉक्टर साहबने बाकी परीक्षा की। ३॥ बजे बापू आकर मुझे अुठा गये। खांसी और सांसका बड़ा जोर था। शरीर दुख रहा था। ३॥ से ७॥ के बीच अेक बार ३ मिनट और अेक बार २ मिनटके लिअे बाको अच्छी नींद आयी। सीधा नहीं सोया जाता था।

सवेरे दातुन करके गरम पानी और शहद पीकर ८ से ९॥ तक अच्छी नींद ली।

आगाखां महल पूना
८-१२-४३

पू॰ बाको मालिश करनेसे सुशीलाबहनने मना कर दिया। नहानेकी भी मनाही कर दी परन्तु स्पंज करवाया। दस बजे बाने अेक रकाबी भाजी लिया। कुछ भाता नहीं। दूधमें आधा पानी डालकर अंजीर अनार और दोपहरको ओवलटीन लिये। कमजोरी बहुत ज्यादा लगती है।

आज दोपहरकी मुलाकातमें हरिलाल काकाकी दोनों लड़कियां थीं। रामीबहन कहती थीं कि माधवदास मामाको मुलाकातकी अनुमति नहीं दी गयी (माधवदास मामा बाके भाओी हैं।)

छोटीसी अुमिने बढ़िया नाच करके दिखाया। बा अपने बेटेकी सात वर्षकी बेटी अुमिकी कला हसते हसते आनन्दसे देख रही थीं। दादा-दादियोंको अपने पुत्रों पौत्रों या पौत्रियोंके पराक्रम देखकर आनन्द होना स्वाभाविक है।

दिन ढलनेके बाद माधवदास मामाकी बारी आयी। भाओीकी बहन अेक थी और बहनके भाओी अेक थे। अैसे भाओी-बहनकी जेलके भीतर मुलाकात होना अेक अनोखा दृश्य था। बाकी भाभी गुजर गयी थी। अिसलिअे माधवदास मामा मनसे कुछ अस्वस्थ और दुबले लगते थे। पहले तो मामाके प्रवेश करने पर दुःखके आवेशमें अेकदम कोओी बोल नहीं सका। दो मिनिट नीरव शान्ति छा गयी। मैंने मामाको बहुत वर्षों बाद देखा। प्रणाम किया।

बा अेकदम बोल अुठीं "कितने दुबले क्यों हो गये हो? रामका नाम लो। सारी चिन्ता छोड़ दो। अब क्यों व्यर्थकी चिन्ता की जाय?

बाने अुन्हें चाय देनेको कहा। चाय दी। निर्मला काकी नागपुरसे बाजरेके सिवा मेथीपाक बनाकर लायी थीं वह सब अुन्हें दे दिया और कहा "यह मिनू बनाकर लायी थी तुम्हें वापस दे रही हूं। बाकी फिक्र और बेकारकी चिन्ता मत करना। अब अीश्वर-भजनमें जिन्दगी बितानेका समय है। जितना हो सके रामनाम लो।"

अन्तमें बिदाअीके समय दोनों गद्‌गद हो गये।

तीसरी बारी देवदास काकाकी आयी। देवदास काकाने खबर दी कि नागपुर जेलमें किशोरलाल काकाका स्वास्थ्य बहुत ही खराब है। वजन ७९ पौण्ड हो गया और दम घुटनेकी बात नहीं। अुन्हें

पैरोल पर छूटनेकी बात की। बापूजीने मना करते हुये कहा — किशोरलालको तो मैं जो पूछा। तुम्हें मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वे बीमारीके कारण पैरोल पर छूटनेको राजी होनेके बजाय जेलमें मरना पसन्द करेंगे। नागपुर जेलमें हां महादेवकी तरह उनके मरनेकी खबर सुनूं तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। कौन जाने ऐसे लोगोंके बलिदान ही शायद स्वराज्यकी कुंजी साबित हों।

२६

सरकारका बरताव

आगाखां महल पूना
२६-१२-'४२

पू. बापूका स्वास्थ्य कभी अच्छा कभी बुरा चलता रहता है। आज शामलदास काका अपने परिवारके साथ देवदास काका परिवारके साथ और जमनादास काका भी विशेषत मिलने आनेके कारण बापूजीको तीन बज गये। यह समाचार कर्नल भण्डारी दे गये।

सबको बारी बारीके साथ ग्रुप आनी। और सब परिवार बच्चोंके साथ होनेके कारण बहुत शोर हो रहा था। बापूने बच्चोंको खूब मेवा दिया। शामलदास काकासे कहने लगे कि तू भी तो बच्चोंमें ही गिना जायगा न? मेरी दृष्टिमें तो तू बालक ही है। यों कहकर उन्हें भी बापूने प्रसादी दी।

इस बारी देवदास काकाकी थी। लक्ष्मी काकी तारा मोहन और राम सभी आये थे। बापूने सबको ही मेवेकी प्रसादी दी। मुझे उन सबके साथ खेलनेका आनन्द मिल गया। मैं तारा और मोहन दूसरे कमरेमें खेलने बैठ गये। जिसमें मैं अपना काम भूल गयी। परन्तु बापूजीको पढ़ानेका समय न मिलनेके कारण अभ्यास बच गयी।

२७

बाके अंतिम दिन

आगाखाँ महल पूना
१४-१-४४

आजकल बापूकी मुलाकातियोंके आनेके कारण बा रोज चार बजे गुजराती वाल्मीकि रामायण पूरी करनेके बाद भागवत सुनतीं। अेक बार तो सारी भागवतका पारायण हो गया था। परंतु कुछ गूढ़ भाग मैं सादी भाषामें बाको समझा नहीं सकती थी इसलिए सुशीलाबहन पढ़ने लगीं।

पिछले चार-पांच दिनसे अुपरोक्त कारणसे पारायण बन्द था। यह बाको खटकता था। आज अुन्होंने मुझसे कहा, "सुशीलासे कह दे कि वह मुझे दो बजे आकर पारायण सुना जाय।" परंतु दो बजे सुशीलाबहन रात्रिके जागरणके मारे सो रही थीं इसलिये फिर मैंने ही पढ़ना शुरू किया। यद्यपि सुशीलाबहनसे सुननेमें अुन्हें अधिक रस आता था फिर भी मुझसे यह काम चल जाता था। इसलिये अुन्होंने मुझसे कहा, "तू कोअी नर्स, वैद्य वगैरा या डॉक्टरका काम थोड़े ही कर सकेगी? परंतु भागवत तो पढ़ ही सकती है। इसलिये मुझसे या प्रभासे जो काम हो सकता हो वह काम सुशीलाको सौंपना दूसरा बोझा बढ़ाना है।"

यद्यपि सुशीलाबहनको इस बातका दुःख रहा कि मैंने अुन्हें सोतेसे नहीं जगाया, जिसलिये बाकी जिस सेवासे वे वंचित रहीं; परन्तु अेक [illegible] ज्यादा भार अुतर जानेका बाको सन्तोष हुआ।

मैं आजकल [illegible] कभी तो बात पूछा [illegible] आज तो मकर संक्रान्ति है न [illegible] यह त्योहार मैंने याद नहीं रखा, जिसके [illegible] परन्तु [illegible] बाने [illegible] [illegible] तीन पर [illegible]

"अैसे त्यौहार मुझे याद दिलानेका तेरा कर्तव्य था न? आज तो गायोंको घास डालना चाहिये। काठियावाड़में आजके पुण्यदानकी महिमा मानी जाती है। अिधर महाराष्ट्रीयोंमें भी तिलगुड़का रिवाज होता है। यह तू कब सीखेगी? जा जल्दी सीखो जाकर तिलके लड्डू बना डाल (तिल मंगवा रखे थे)।"

मैं सीधी जाकर तिलके लड्डू बनाने लगी। बापूजी कहते थे कि अैसा खर्च हमें नहीं करना चाहिये परंतु बाको दुःखी न करनेके खयालसे चलने दिया।

शामको प्रत्येक कैदी और सिपाहीको बाने अपने हाथोंसे अेक-अेक तिलका लड्डू दिया। "जो अगली संक्रान्तिको मैं कहां जीती रहूंगी? यह आखिरी है।"

बाका स्वास्थ्य बहुत ही नाजुक हो गया है। बिस्तरके पास दो जनोंकी अुपस्थिति लगभग हमेशा ही चाहिये।

आजसे ही बापूजीने रातको जागनेकी बारियां बांध दीं। अेक रात ९ से २ बजे तक सुशीलाबहन और २ से ७ तक मैं और अेक रात ९ से २ तक प्यारेलालजी और २ से ७ तक प्रभावतीबहन ताकि किसी पर जरूरतसे ज्यादा बोझ न पड़े।

आगाखां महल पूना
२६-१-४४

बाके स्वास्थ्यमें कोअी खास फर्क नहीं है। अब मुलाकाती अपनी अपनी बारीके अनुसार आते रहते हैं। रोजकी तरह काम चल रहा है।

आज स्वातन्त्र्य-दिवस होनेके कारण हम सबने अुपवास किया और नियमानुसार अपना खाना कैदियोंको दिया।

शामको ध्वजवंदन हुआ। डॉ. गिल्डरने ध्वजवंदन कराया। झंडा अूंचा रहे हमारा, सारे जहांसे अच्छा हिन्दोस्तां हमारा और वन्देमातरम् के तीन गीत गाये गये। जिसके बाद बापूजीने जो प्रतिज्ञा (हिन्दीमें) फिरसे की अुसे लिखित रूपमें डॉ. गिल्डरने पढ़ा। वह अिस प्रकार है

हिन्दुस्तान सत्य और अहिंसाके रास्तेसे सभीकी सच्ची और हर मानीमें पूरी आजादी ले यह मेरा जिन्दगीका मकसद है और मरते दम तक रहेगा। मेरे अिस मकसदको पूरा करनेके लिअे मैं स्वतंत्रता-दिनकी चौदहवीं बरसी पर आज फिरसे अिकरार करता हूं कि यह न मिले तब तक मैं न तो खुद चैन लूंगा और न जिन पर मेरा कुछ भी असर है अुन्हें चैन लेने दूंगा। मैं अुस महान अीश्वरी शक्तिसे जिसे आंखोंसे किसीने नहीं देखा और जिसे हम गॉड, अल्लाह, परमात्मा जैसे परिचित नामोंसे पुकारते हैं प्रार्थना करता हूं कि मेरे अिस अिकरारको पार अुतारनेमें वह मुझे मदद दे।

रातको मेरा २ से ६ बजे तक जागरण हुआ था जिसलिअे ६ बजे बापूजीने मुझे फिर सोनेको कहा। ६ से ८ तक मैं सोयी। बापूजीने कहा जो जागनेवाले हैं अुन्हें किसी भी तरह समय निकाल कर आगे-पीछे नींद ले ही लेनी चाहिये तभी वे सेवा कर सकेंगे।

आगाखां महल पूना
१०—१—'४४

आज तो बाकी तबीयत बहुत ही खराब रही। दमेका बहुत जोर था। मुझ पर बापूजीका मौन भी था।

दोपहरको कनुभाअी आये। ७ बजे तक रहे। मेरी और सुशीला बहनकी जागनेकी रात थी। हम दोनोंने अपने-अपने समयमें बाको भजन सुनाये। सारी रात भजन, धुन और गीताजीके बारहवें अध्यायके श्लोक सुननेकी ही मांग बा बार बार करती रहीं। बाकी-सी खराब रात तो अभी तक अेक भी नहीं गयी होगी। बापूजीका भी रक्तचाप अूंचा रहता है।

अैसी स्थिति होनेके कारण बापूजीने बा द्वारा की जानेवाली डॉ. दिनशा मेहताकी मांगके बारेमें अेक पत्र सरकारको लिखा था। परन्तु अभी तक अुसका अुत्तर न मिलनेके कारण दूसरा पत्र लिखा कि

बीमारकी हालत बहुत खराब है और अुनकी सेवा करनेवाले केवल चार ही आदमी हैं। रातको हर तीसरे दिन अेक साथ दो जनोंको काम करना पड़ता है और दिनमें तो चारोंको काम करना पड़ता है। अब बीमारका भी धीरज टूट गया है। यह पूछती ही रहती हैं कि डॉ. दिनशा कब आयेंगे?

१. अिसीके लिये डॉ. दिनशा मेहताकी सेवायें मिल सकेंगी?

२. मुलाकातके समय सेवाके लिये मौजूद रहनेवालोंकी संख्याका प्रतिबंध दूर हो सकेगा?

मैं अितना ही चाहता हूं कि यह कहनेका मौका न आवे कि राहत देरसे मिली। और यह चाहता हूं कि अुपरोक्त स्पष्टीकरण जल्दी मिलें।

अिन दिनों किसीको अेक मिनिटकी भी फुर्सत नहीं रहती। सब मशीनकी तरह काम करते रहते हैं। बाकी बीमारीके कारण वातावरण खूब गंभीर बन गया है।

आगाखां महल, पूना
१-२-'४४

आज कनुभाअीको पू. बाकी सेवाके लिये आनेकी मंजूरी मिल गयी। वे रातको ही आ गये और डॉ. गिल्डर और सुशीला बहनने सबकी बाकायदा ड्यूटी लगा दी। मेरी रातको जागनेकी ड्यूटी बिलकुल हटा दी क्योंकि मुझे बा और बापूजी दोनोंका जुटकर काम करना होता है। परन्तु यह नया फेरबदल मुख्यतः मेरी आंखोंको बचानेके लिये था, यद्यपि मुझे यह कारण बताया गया कि "तुम्ही यदि रातको जागनेका आग्रह रखो तो हमें खिलायेगा कौन?" यों कहकर डॉ. गिल्डरने अपने स्वभावके अनुसार मुझे बनाकर समझा दिया।

अिस प्रकार मेरी ड्यूटी अब सुबह ५ से ९, दोपहरको १ से ३ और शामको ६ से । रातको अेक दिन सुशीलाबहन तथा कनुभाअी

बाने तुरंत गीताजीके १२ वें अध्यायके श्लोक सुननेकी अिच्छा प्रगट की। बापूजीने १२ वां अध्याय सुनाया। बादमें अुन्हें खटका कि बापूजीकी नींद बिगड़ेगी। अिसलिये अुन्होंने बापूजीसे सो जानेको कहा। मुझे अपने पास ही रहनेको कहा। डॉ. गिल्डर और सुशीलाबहन अिस अुधेड़बुनमें थे कि किस तरह बाको राहत पहुंचाअी जाय। कनुभाअीने गीताका ११ वां और   वां अध्याय और भजन सुननेके बाद बाने अुन्हें सोनेको कहा।

अेक बार रिकार्ड पर मीराके बहुत प्रिय भजन सुने। बादमें अुन्हें लगा कि रिकार्ड बजनेसे तो बापूजीकी नींदमें खलल पड़ेगा अिसलिये ग्रामोफोन बंद करवा दिया। और धीमे स्वरसे ४ भजन सुबह तक सुने

बापू कहां तक चरन तिहारे
जिनका नाम पतित पावन है
जिसे दीन अति प्यारे बापू०
तन है तेरा मन है तेरा
है तेरा धन दुख का मारा बापू
दिन परमपदका अिसे सहारा
यह है तू ही सदा हमारा बापू

* * *

आया द्वार तुम्हारे, रामा
आया द्वार तुम्हारे
अब अब और परी मझधार पर,
तुमने ही दुख टारे रामा
तुमने ही दुख टारे। आया०
मनमें छाया गहन अंधेरा
दीपक कौन अुजारे? रामा
दीपक कौन अुजारे? आया०

ही चाहिये। *अिस प्रकार आज तीसरा दिन है।* बेचारे वैद्यजी रातको ठंडमें दरवाजे पर सो रहते हैं और दिनमें यहीं रहते हैं। किसी दवाकी जरूरत होने पर ही शहरमें जाते हैं। बाहर ठंडमें सोनेसे अुन्हें भी कुछ जुकाम-सा हो गया है।

आज मुझसे बाहर सोनेकी तीसरी रात थी। शिवशर्माजीको बुलानेमें भी दूसरे चार जनोंकी नींद बिगड़ती। पहले अेक सिपाही जागता, यह दफादारको जगाता, जमादार कटेली साहबको जगाकर कुंजी लेता, दरवाजे पर रातको पहरेके लिये रहनेवाले सार्जेन्ट अूंघ रहे हों तो वे भी जागते, तब कहीं शिवशर्माजीको खबर दिया जाता। रोजकी तरह आज रातको साढ़े बारह बजे बापूके स्वास्थ्यमें परिवर्तन मालूम हुआ और अुपरोक्त विधिसे वैद्यजीको बुलाना पड़ा।

वैद्यजीने साढ़े बारह बजे अन्दर आकर बापूको गोली दी। अुन्हें जरा आराम मालूम हुआ तो डेढ़ेक बजे सोनेके लिये दरवाजेके बाहर लौट गये। अुनके दरवाजेके बाहर चले जानेके बाद तुरन्त सिपाहीने फिर ताला लगा दिया। और जमादारने कुंजी कटेली साहबको सुपुर्द की तब वे अूपर सोने जा सके।

बापूजीको अिस बेचैनीमें नींद नहीं आयी। दो बजे अुठे। प्यारेलालको बुलाया। बापूजीके आवश्यक कागजात देकर अुन्होंने कहा — मुझे आप लेटे लेटे लिखाअियेगा न? बापूजीने अिनकार कर दिया। स्वयं ही अेक कड़ा पत्र लिखा। अुसमें अुपरोक्त स्थितिका वर्णन किया और अुसको कितना कष्ट होता है यह बताकर लिखा कि

> मैं जानता हूं कि अिस स्थितिको दूर करनेका अुपाय कठिन है। तब मेरी पत्नीके लिये सारी रात व्यर्थ कितने लोगोंको जागते रहना पड़े और यह भी अेक रातके लिये नहीं बल्कि अनिश्चित कालके लिये यह मुझे असह्य लगता है। सुशीला-बहन और डॉ. गिल्डर डॉक्टर हैं। परन्तु ये दोनों विभाग दूसरी ही तरहके होते हैं अिसलिये ये लोग अिसमें सहायक

नहीं हो सकते। जिससे बीमार और जिसका जिलाज हो रहा हो अुसके साथ कदाचित् अनजाने अन्याय हो सकता है। जिस कारण बीमारके मनके मिले जब तक वैद्यकी दवा हो रही है तब तक अुन्हें रात-दिन नहीं रहने दिया जाय। यदि सरकार ऐसा न कर सके तो बीमारको पैरोल पर छोड़ दिया जाय। और सरकार ऐसा भी न कर सकती हो और बीमारके पतिकी हैसियतसे मैं सरकारसे अुसकी जिच्छानुसार सार-सम्भाल तथा जिलाजकी सुविधा प्राप्त न कर सकूं तो मेरी यह मांग है कि सरकार अपनी पसन्दके किसी और स्थान पर मुझे भेज दे। बीमार जो वेदना अनुभव कर रही है अुसका मुझे अेक निःसहाय साक्षी नहीं बनाना चाहिये।

यह पत्र रातके २ बजे कस्तूरबाके बिछौनेके पास बैठकर लिख रहा हूं। परंतु यह तो अब जीवन और मृत्युके बीच झूल रही है और यदि कल (१७ फरवरीको) रात तक वैद्यजीके बारेमें आप सन्तोषजनक अुत्तर नहीं देंगे तो मैं जिलाज बन्द करा दूंगा।

रातको ११॥ बजे प्यारेलालजीने जिसे दाखिल किया। बादमें प्रार्थना हुई। बापूजी लगभग सारी रात जागे हैं। बाकी जीवन नौका मझधारमें है। मैं प्रभुसे अेक ही प्रार्थना करती हूं कि प्रभु यह असह्य वेदना देखी नहीं जाती। मुझे जो भी करना हो जल्दी कर। सब कुछ तेरे हाथमें है।

आगाखान महल पूना
१७–२–'४४

सरकारके पत्रका अुत्तर सन्तोषजनक आया और आजसे जब तक जरूरत हो तब तक वैद्यजीको भीतर रहनेकी जिजाजत दे दी गयी।

वैद्यकी दवाके असरसे बा दिनमें शान्तिसे लेटी ही रहीं। आज अुपर नहीं अुठा सकती थीं जितना आया था। अेक बार तो सुशीलाबहनने जबरदस्ती अुठाकर सुराहीके नीचे पर मुश्किलसे पानी

मुन्दे दिया। मुश्किलसे थी ही चम्मच पिये और बोली "मुझे शान्तिसे सोने दे । परंतु हालत अच्छी मालूम नहीं होती। पैरों पर सूजन दिखाओ देती है। शरीरमें शक्ति ही नहीं तब बेचारी खांसी क्या जोर मारे? परन्तु ये लक्षण चिन्ह अच्छे नहीं मालूम होते अैसी बात डॉ. गिल्डर, सुशीलाबहन और वैद्यराजकी बातचीतसे मेरे कानों पर पड़ी। मेरे जाने पर अुन लोगोंने बातें बंद कर दीं।

डॉ. गिल्डरसे मैंने पूछा "मुझे कहिये तो सही कि बाकी तबीयत कैसी है?"

प्रेमसे मेरे सिर पर हाथ रखकर डॉक्टर साहब कहने लगे "तू देखती है न कि बा पहले सो ही नहीं सकती थी लेकिन अब शान्तिसे सो रही है? जिसमें भी कोओी रोनेकी बात है?" अैसा कहकर मुझे बाहर भेज दिया।

लेकिन मुझसे कुछ छिपाया जा रहा है अैसी गन्ध मुझे आती ही रहती थी। फिर भी डाक्टर साहबकी बातसे आश्वासन पाकर मैंने मान लिया कि बात सच्ची है, बीमार आदमी जितना सोये अुतना ही अच्छा है। जिसलिये अब बा अच्छी हो जायेंगी। मुझे आघात न पहुंचे और काममें विघ्न न आये जिसलिये वे प्रेमपूर्वक अलग अलग रीतिसे कहते रहे "बेटी, बा ठीक है, अथवा थोड़ी ठीक नहीं है। अच्छी हो जायगी।" मेरे जैसा अनुभव बहुतोंको हुआ होगा। जिसीलिये लोग कहते हैं कि "डॉक्टर तो जब तक मनुष्य मर नहीं जाता तब तक कहते नहीं हैं।"

आगाखां महल, पूना
१८-२-'४४

हमारे वैद्यराज आज पूनाके बाजारमें स्वयं ढूंढकर कोरामिन दवा लाये। परन्तु अुन्होंने निराशा अनुभव की। बापूजीसे कहा कि जितना हो सका किया परन्तु कोओी फर्क नहीं पड़ा। अब यदि डॉ. सुशीलाबहन या गिल्डर साहबको कोओी नया अुपाय सूझे तो करें।

सब काम काज बन्द करके बाकी सेवा करनेमें ही लीन हो गये हैं। अधिकांश समय अुनके पास बैठनेमें ही बिताती हूं। बाको साफ करनेमें बार बार छोटे रूमाल खराब होते थे, जिन्हें हममें से कोअी मौजूद न हो तो बापूजी स्वयं धोते थे।

२८

बाका अवसान

महाशिवरात्रि
महानिर्वाण दिवस
२२-२-'४४

कल देवदास काका आ गये। परन्तु बाका दिन भयंकर है अिसकी आशंका सबके मनमें थी। सब रातभर जागे थे। प्रातः बा सुशीलाबहनकी गोदमें थी। बापूजी अपने दैनिक भोजनकी कैलरीज लिख रहे थे। मैं बाके पैर दबा रही थी। वे सुशीलाबहनसे कहने लगीं, मुझे बापूजीके कमरेमें ले चलो। अिस पर सुशीलाबहनने मुझे अिशारेसे समझाया कि बा घूमनेकी तैयारी कर रही है, स्वेटर और चादर वगैरा दे।

बापूजी कैलरीज लगभग लिख ही चुके थे। कटेली साहब कोअी कागज लेकर आये (मुझे याद नहीं वह कागज किस बारेमें था)। परन्तु बापूजीने कहा, अंग्रेज मुझे अपना सबसे बड़ा शत्रु मानता है। मुझ पर जितना जनताका विश्वास है मुझे जेलमें बन्द करके वह बेचारा हजम नहीं कर सकता। यदि जनताने सच्चे दिलसे विश्वास प्रगट किया होगा तो मैं यहां मर जाअूंगा तो भी अपना काम पूरा हुआ समझूंगा। परन्तु मुझे स्वराज्य लेनेके लिअे जीना तो है ही। मैं जीनेका प्रयत्न भी कर रहा हूं। यह कैलरीजका हिसाब लिखना भी मेरे जीनेके प्रयत्नका अेक भाग है। अिसलिअे बाकी बीमारीमें और सब कुछ छोड़ दिया परन्तु यह काम नहीं छोड़ा।

गअी। हम दोनों थोड़ी देर रो लीं। मैं अुनके पास सो गअी। कोअी दो बजे फिर वैसा ही हुआ। अुस वक्त बापूजी जाग रहे थे। अुन्होंने मुझे रामनाम लेकर सो जानेको कहा।

प्रातः चार बजे प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद बापूजी भी नहीं सोये। मैंने बहुत दिनों बाद घंटे भर काता।

बापूजी रामदास काका और देवदास काका बातें कर रहे थे। अुनमें बीमारोंके समय सरकारका व्यवहार और देशकी दूसरी राजनैतिक बातें थीं। मैं तो सुबह ही नहा धोकर निपट गअी थी। सब साथ टहलने गये। आज किसके लिये रुकना था?

टहलते टहलते बापूजी कहने लगे — यदि काका मुझे साथ न मिलता तो मैं अितना हरगिज नहीं कर सकता था। मेरी प्रबल अिच्छा थी कि बा मेरे हाथोंमें हो। आज मुझसे पहले ही चली गअी। बा मेरे हाथोंमें ही गअी। अिससे अेक प्रकारसे मेरा बोझ आज हल्का हो गया। अनन्तरता ममता कभी तो कभी पूरी नहीं होगी। जाने-अनजाने मेरे पीछे पीछे चलना ही अुसने अपना धर्म माना था। अिस प्रकार बाके सम्स्मरणोंकी बातें हुअी।

भारतमें सतियोंके सतीत्वकी परीक्षाके अनेक अुदाहरण हैं। अुनमें से अेक यह था। अनका सारा जीवन सती सीताकी तरह अग्नि परीक्षामें ही बीता। और अुनके सौभाग्य-चिह्न चूड़ियोंको अग्निदेवने अविच्छिन्न रूपमें लौटा दिया।

अस्थियां और भस्म लेकर मैं अूपर आयी। मैंने जो चूड़ियां दी थीं अभी रंगकी और अन्हींमें [illegible] अेक चूड़ी मने अंगीठीमें डाली। तुरंत अुसके टुकड़े टुकड़े हो गये।

दोपहरको पू. बाकी तमाम चीजोंकी सूची बनायी और देवदास काकाको सौंपी। वे किस समय क्या काममें लेती थीं कौनसी चीज बिलकुल काममें नहीं ली गयी आदि सब कुछ रातके बारह बजे तक लिखकर देवदास काकाको दिया। बापूजीने मुझे सौंपी हुई प्रसादीमें से चूड़ी मुझे हू दे दी। प्रभावहनको मिली हुई चूड़ियां अुन्हें दी और सुशीलाबहनको मिली हुई अुन्हें सौंपी। बापूजीने वर्षों पुराने सोनकी पट्टू वाली जो चूड़िया मुझे प्रसादीके तौर पर दी थी अुनमें शिव पवित्र चूड़ीने अनोखी शोभा पैदा कर दी। कहावतके अनुसार सोनेमें सुगन्ध मिली और आज मैं अैसी समान पवित्र पादुका कुंकुम और अुन चूड़ियोंकी प्रसादी प्राप्त होनेके लिये अीश्वरका मुझे अन्त करणसे आभार मानती हूं।

अब तो कोअी बस्ती ना जानेकी नहीं कहता और आज यह डायरी रातको साढे बारह बजे लिखकर पूरी की।

आगाखां महल पूना
२१-२-'४४

आश्वासनके ढेरों तार देश-विदेशसे आ रहे [illegible] पत्र भी बहुत आ रहे हैं। पंडित मालवीयजी महाराजका तार पू. बाके अस्थि-पुष्प प्रयाग ले जानेके लिये आया है।

सुबह पुरोहितजीने विधिपूर्वक अंतिम पूजा करायी। अस्थियोंका पात्र लेकर देवदास काका और रामदास काकाने बापूजीसे विदा ली। बापूजी दोनों भाअियोंको द्वार तक छोड़ने गये।

क्योंकि बापूजीके विनोदमें बहुत बड़ी गूढ़ता थी। मेरी अुन्हें कितनी चिन्ता हो रही थी, यह जिस पत्रने साबित कर दिया। और मेरी यह धारणा सच निकली कि बापूजीने मेरी खाटके पास आकर पांचेक मिनिट मेरे सिर पर हाथ रख कर जो विनोद किया, अुसमें मेरे लिअे अुनके मनकी तीव्र वेदना छिपी थी।

यह सम्पूर्ण पत्र 'बापू—मेरी मां' (पृष्ठ ७) में प्रकाशित हो चुका है, फिर भी जिसका सिलसिला बनाये रखनेके लिअे अुसे दुबारा दे दूं तो अनुचित नहीं होगा। क्योंकि परम पूज्य बापूजीके मेरे पवित्र संस्मरणोंमें यह पत्र अद्वितीय है। मेरे नाम पू० बापूजीका अपने हाथसे लिखा यह पहला ही पवित्र पत्र है।

चि० मनुडी,

तू अच्छी तरह सोयी न? तुझे और प्रभावतीको रखनेके बारेमें कल लंबा पत्र लिखा। परन्तु रातको विचारमें नींद नहीं आयी। अन्तमें प्रकाश दिखायी दिया। अैसी माया नहीं की जा सकती। करें तो खेल कैसे? हमें अेक-दूसरेका वियोग सहन करना ही होगा। तू तो समझदार है। दुःखको भूल जा। तुझे बड़े बड़े काम करने हैं। रोना छोड़ दे। चुप हो जा। बाहर जाकर जो सीखना था सब सीखना। जितनी दवाके बाद तेरा हर हालतमें कल्याण ही होगा। मुझे तेरी बड़ी चिन्ता रहती है। तू अपने जैसी अेक ही है। भोली, सरल और परोपकारी है। अैसा तेरा धर्म ही बना है, परन्तु तू अभी अपढ़ है। मूर्ख भी है। तू अपढ़ रह जाय तो तू भी पछतायेगी और अैसा रहा तो मैं भी पछताअूंगा। तेरे बिना मुझे अच्छा नहीं लगेगा, फिर भी तुझे अपने पास रखना मुझे पसन्द नहीं। क्योंकि यह दोष और मोह होगा। मैं निश्चित रूपसे मानता हूं कि अभी तुझे राजकोट जाना चाहिये। वहां तुझे नारायणदासका सत्संग मिलेगा। वहां तू अुपयोगी कला सीखेगी और संगीत तो सीखनी ही। जितने अभ्यास जो भी सीखनेको मिले सीखना। वर्धामें हम अेक

आगाखां महल पूना
१–३–'४४

चौबीस घंटेके अखंड चरखेकी आज शामको ७–१५ पर बापूजीने पूर्णाहुति की।

आगाखां महल पूना
२–३–'४४

गीतापाठ, प्रार्थना वगैरा रोज होते हैं। यद्यपि बापूजी खूब आनंदमें रहते हैं, परन्तु मुझे अैसा लगता है कि शायद अुनके मनमें थोड़ी व्यथा बनी रहती है। कभी-कभी यह खयाल होता है कि वे विचारोंमें मशगूल रहते हैं। बाके चितास्थान पर मिट्टीकी कच्ची समाधि बना दी गयी है और अुस पर 'हे राम!' लिख दिया गया है, जिसकी बा रातदिन रटन किया करती थी। हम दोनों वक्त अिस समाधिकी यात्रा करने जाते हैं। बापूजी स्वयं फूलोंसे क्रॉस बनाते हैं और हम सब मिलकर गीताका अध्याय बोलते हैं।

आगाखां महल पूना
५–३–'४४

मुझे बुखार आता है। आज शामको बढ़ गया है। बापूजी अिस समय (शामके ७ बजे) टहलने गये हैं। मैं अकेली ही बैठी यह लिख रही हूं। बापूजी अब सोचते हैं कि अुनके लिये होनेवाला आगाखां महलका खर्च बहुत अधिक है, अुसे हो सके तो किसी तरह कम किया जाय। मेरी भी चर्चा होती है कि सरकार अब मुझे क्यों रखे? प्रभावतीबहन अभी तक सरकारकी कैदी है। अिसलिये अुन्हें जैसे अन्यत्र रखेगी वैसे यहां रख सकती है, परन्तु मुझे क्यों रखे? असलमें अिसमें मेरी श्रद्धाकी परीक्षा है। यदि बापूजीके प्रति मैं हार्दिक श्रद्धा रखती हूं तो जब बापूजी छूटेंगे तभी मैं छूटूंगी, यही अीश्वरसे मेरी प्रार्थना है।

आगाखां महल पूना
६-३-'४४

२ मार्चको असेम्बलीकी लोकसभामें पू॰ बाकी सेवा-शुश्रूषा और बीमारीके दरमियान सरकारी व्यवहारके प्रश्नोंकी चर्चा हुअी। असमें सरकारने बिलकुल गप चलाअी। अिसके सिवाय अंत्येष्टि क्रियाके बारेमें भी अैसी ही झूठ बात पत्रोंमें आअी है कि बापूजीकी पसन्दसे ही आगाखां महलमें अंतिम क्रिया की गअी।

बापूजी कहने लगे : यदि मेरी ही पसन्दकी बात होती तब तो मैं स्मशानभूमि ही पसन्द करता। परन्तु यह सब बातें नामसे हो रहा है यह शोभास्पद नहीं। अिसीलिअे बापूजी दुःखित हो गये हैं। अन्होंने सरकारको अेक पत्र भी लिखा। अुसमें लिखा कि सरकारकी तरफसे जो सुविधायें दी गअी वे बहुत देरसे मिलीं। और वे भी तभी दी गअीं जब बापूजीने सरकारको बतला दिया कि मुझे बीमारका मूक साक्षी न बनाकर सरकार या तो बाको दूर कर दे अथवा अिलाजकी पूरी सुविधा दे। डॉ॰ दिनशाकी देखरेखके लिअे भी अितना ही विलम्ब किया गया। क्योंकि डॉ॰ दिनशाकी माँग जनवरीमें की गअी थी और अुसकी मंजूरी मिली फरवरीमें। डॉ॰ विधान रॉयकी माँग पर तो कोअी ध्यान ही नहीं दिया गया।

अिसके सिवाय बतलाया गया है कि बाको पैरोल पर छोड़नेकी तो बात ही नहीं हुअी परन्तु अुन्हें न छोड़नेमें सरकारने समझदारी

साक्षी है। परंतु अिस मामलेका राजनैतिक अुपयोग करनेकी बापूजीकी अिच्छा नहीं है।

बापूजीने लिखा है कि

> मेरी जीवन-संगिनी कस्तूरबाका जीवनदीप तो अब बुझ गया है। मगर अब अितनी आशा तो जरूर रखता हूं कि अुनकी पवित्र स्मृतिमें मेरे मनके संतोष और शान्तिके लिये और सत्यके नाम पर सरकार अपनी ही चुनी मुनीम और अमरीकाके भारतीय प्रतिनिधिने जो आश्चर्यजनक बयान कस्तूरबाके संबंधमें दिया है अुसमें अुचित सुधार करेगी यदि मेरी शिकायत सही हो। अथवा अखबारोंमें प्रकाशित बयान और अटकलके दिये हुये बयानमें फर्क हो तो सरकार सच्चा बयान प्रकाशित करे।

बापूजीका दुःख अिसी बातका है कि जब बा जैसीके लिये अितना झूठ चलता है तब बेचारे मामूली कैदियोंका क्या हाल होता होगा?

प्यारेलालजीने दोपहरका सारा समय यह पत्र समझानेमें लगाया।

मुझे प्यारेलालजी कहते थे कि, बहुत संभव है तुम्हें सरकार छोड देगी। अिसलिये आजकल बापूजी सरकारको जो कुछ लिखें अथवा बोलें वह सब तुम्हें ध्यानमें रखना है। क्योंकि वह बाहरके लोगोंके लिये बड़ा अुपयोगी होगा। अिसलिये डायरीमें लिखकर तो रखा ही जाय परन्तु शायद सरकार कदाचित् बाहर न जाने दे, अिसलिये सब दिमागमें ही रखा जाय।

यह पढ़ाई अनोखी थी। जैसे अंग्रेजी अितिहास भूगोल गणित अित्यादिके पाठोंमें कभी कभी भूल हो जाय तो याद रहनेके लिये मास्टर चार पांच बार लिखनेको कहते हैं वैसे ही यह नया राजनैतिक अध्ययन क्रम प्रारंभ हुआ। लेकिन अिसे मन याद रखना मेरे लिये कठिन होनेके कारण बापूजीको मुझ पर यह बोझ डालना पसन्द नहीं था। अिसके बजाय वे चाहते थे कि मेरी पाठ्यक्रममें होनेवाली पढ़ाई ही करूं। परन्तु बापूजी बापू थे और प्यारेलालजी मंत्री! अतः मेरे याद रखनेके लिये वे जैसे पत्रोंका अंग्रेजीसे गुजराती

मुक्त हो जायें। हम कुछ दूसरी ही तरहके दंपती थे। १९०६ में हमने अेक दूसरेकी स्वीकृतिसे आत्मसंयमका नियम पालनेका निश्चय किया। अुससे हम अेक-दूसरेके ज्यादा और ज्यादा निकट आये।

यद्यपि वे अत्यन्त दृढ़ अिच्छाशक्तिवाली थीं फिर भी अुन्होंने मुझमें ही समा जाना पसन्द किया। जब सन् १९०६ में मैंने पहली बार राजनैतिक प्रवृत्तिमें अुनका प्रवेश कराया तब दक्षिण अफ्रीकामें जेल जानेवाले भारतीयोंकी सूचीमें कस्तूरबाका नाम सबसे पहला था और शारीरिक कष्ट अुन्होंने मुझसे अधिक भोगा। कअी बार जेल हो जाने पर भी अिस महल जैसी जगहमें जहां सभी सुविधायें मौजूद हैं अुन्हें अच्छा नहीं लगता था। दूसरे मंवाभाकी और अुसके तुरन्त बाद मेरी और कस्तूरबाकी गिरफ्तारीसे अुन्हें बहुत दुःख हुआ क्योंकि मैंने बहुत बार अुन्हें यह आश्वासन दिया था कि सरकार मुझे हरगिज नहीं पकड़ेगी। अिसलिअे अिस बारकी गिरफ्तारीका अुनके मन पर अितना भारी आघात पहुंचा कि अुन्हें दस्त लग गये। परन्तु सौभाग्यसे डॉक्टर सुशीला नय्यर साथ थी। अुन्होंने तुरन्त अिलाज किया। अिससे वे बच गयीं नहीं तो मुझसे मिलनेके पहले ही मृत्युको प्राप्त हो जातीं। परन्तु मुझे देखनेके बाद तो दवादारूके बिना ही अुनके दस्त बिलकुल बन्द हो गये। फिर भी मानसिक वेदनासे अुनके मन पर जो आघात लगा था और दिल खट्टा हो गया था वह मिटा ही नहीं। परिणामस्वरूप पीड़ा भोगते भोगते वे चल बसीं।

अैसी कस्तूरबाके लिअे अखबारोंमें सरकारकी तरफसे जो झूठ बयान छपते हैं अुनसे मुझे कितना दुःख होता होगा यह आप आसानीसे समझ सकेंगे। वे मेरा अनमोल रत्न थीं। अुनके बारेमें असत्य बात लिखी जाय अिससे दुःखद वस्तु और क्या हो सकती है? मैंने अिस बातकी शिकायत गृह-विभागको भेजी है। अुसे पढ़नेका आपसे अनुरोध करता हूं।

अितना भाग पूज्य बाके बारेमें था और अुसके बादका लॉर्ड वेवलके भाषण और मीराबहनके बारेमें था — मीराबहनको जेलसे छोड़नेके विषयमें। अुन्हें जेलमें बंद करनेका कारण अितना ही था कि वे बापूजीकी भक्त हैं। परन्तु अुन्हें छोड़ दिया जायगा तो वे गरीब लोगोंकी सेवा ही करेंगी।

बापूजीने वेवेल साहबको यहां आनेका भी निमंत्रण दिया है

> हवाअी जहाजसे बंगाल और वहांके दुखी लोगोंके पास जाते हैं तो अेकाध बार अहमदनगर और यहां (आगाखां महल) भी आअिये। आप अपने कैदियोंके मनकी बात कर सकेंगे। हम आपकी आलोचना करते हैं परन्तु अितना विश्वास रखिये कि हम आपके मित्र ही हैं।"

अिस प्रकारका पत्र वेवेल साहबको लिखा। पूज्य बाके बारेमें जो कुछ लिखा है वह तो लगभग बापूजीने अंग्रेजीमें जो पत्र लिखा अुसका अनुवाद ही है। परन्तु बाकीका सारांश तो जिस तरह मैं समझा अुस तरह अपनी डायरीमें लिखा हुआ ही अूपर अुद्धृत कर दिया है।

बापूका आजकल सवेरेका समय सुशीला बहनसे संस्कृत रामायणका अनुवाद [illegible] जाता है और प्रभावती बहनको गीता और पुरुषोंकी पढ़ाने [illegible] सभा [illegible] सुशीलाका पाठ भी लेते हैं। शामको मीरा बहन [illegible] पर अखबार [illegible] बांचकर सुनाती हैं। अभी तक डाक तो बहुत आती [illegible] अिसलिये [illegible] सभी [illegible] बाकी बातोंमें से लिखनी [illegible] लगभग रोज ही आते हैं। [illegible] रुपये होता [illegible] यथार्थ पत्र बापूका केवल [illegible] बापूजीका यह [illegible] सुन्दर [illegible] है

परंतु सरकार अुसके वेतनका रुपया तो गरीब लोगों पर कर लगा कर ही पैदा करती है न? यदि बापूजीको साधारण जेलमें रखा जाय तो खर्चमें जरूर फर्क पड़ेगा। यह बात मुझे समझाते हुए बापूजी कहने लगे कि हम भाजी हों और मैं साथ ही रहूं तो कम खर्च होगा और अलग रहूं तो दुगना खर्च होगा। फिर भले ही दोनों भाजी अकेला भोजन बनायें और अकेला ही खायें। मैंने तो जैसे बहुत प्रयोग किये हैं। मेरा सारा जीवन ही प्रयोग है।

आगाखां महल पूना
१५-२-'४४

अुपरोक्त खर्चेके बारेमें बापूजीने अेक पत्र सरकारको लिखा था। वह पत्र लिखा तो गया ४ मार्चको परन्तु बहुतसे पत्रोंके अनुवाद करने थे। अुनमें यह छोटासा पत्र रह गया था सो आज ही मिला। साथ ही कांग्रेस पर लगाये गये सरकारी आरोपोंका जवाब बापूजीने पूज्य बाकी बीमारीके दिनोंमें १९४३ में दिया था अुसका भी थोड़ा थोड़ा अनुवाद करती हूं। परन्तु वह मेरी समझमें नहीं आता। जिस लिये बापूजीने कहा — यह तेरे लिये अत्यन्त कठिन है। जिसमें समय गंवाना व्यर्थ है। तू आजकलके पत्र समझ लेगी और पचा लेगी तो भी मैं समझूंगा कि तूने बहुत कर लिया। जिसलिये आज ४ मार्चको लिखा गया पत्र पढ़ा। अुसमें बापूजीने लिखा है

> धारासभामें पूछे गये अेक प्रश्नके अुत्तरमें गृह-विभागकी ओरसे यह अुत्तर दिया गया है कि हमारा मासिक खर्च लगभग ५५ रुपया होता है।
>
> मैंने तो अगस्त १९४२ में ही लिख दिया था कि मुझे जितने बड़े आलीशान बंगलेमें रखा जा रहा है अुससे मुझे लगता है कि मैं हिन्दुस्तानकी गरीब जनताके पैसेका दुरुपयोग ही कर रहा हूं। मुझे किसी भी जेलमें रख दिया जाय वहां मैं अपने दिन आनन्दसे बिताअूंगा। परन्तु जिसके बजाय धारासभामें

पूछे गये प्रश्नका अुत्तर शायद मुझे यह सत्य मार्ग सिखाता है कि मुझे अपनी बात पर डटे रहना चाहिये था। परंतु जब जागे तभी सवेरा —भूल तो किसी भी क्षण सुधारी जा सकती है। अिसलिये मैं ही अब अिस प्रश्नको छेड़ता हूं। मेरा और मेरे साथ रहनेवाले लोगोंका खर्च केवल ५५ रुपया ही नहीं है। परंतु अिस आलीशान बंगलेका किराया—जिसका बड़ा भाग बंद ही रहता है केवल छोटासा भाग हमारे लिये खुला है—और पहरेदारों तथा सुपरिन्टेन्डेन्ट जमादार और दूसरे सिपाहियोंका खर्च भी अिसमें शामिल करना चाहिये। यहांके जमीनकी देखरेख और बंगलेकी सफाईके लिये यरवडा जेलसे कैदियोंको लाना पड़ता है। यह सारा खर्च मुझे तो अनावश्यक ही प्रतीत होता है। और अिसमें भी जब आज देशमें जैसा (बंगाल जैसा) अकाल पड़ा हो तब तो मेरे जैसा प्रत्येक भारतवासी आम जनताका अपराधी माना जायगा। मेरी मांग है कि सरकार मुझे और मेरे साथियोंको किसी भी साधारण जेलमें रख दे। अन्तमें अितना ही कहूंगा कि यह सारा खर्च भारतके करोड़ों मूक और गरीब लोगोंसे लिया जाता है यह कष्टमय विचार मेरे मनमें सदा खटकता ही रहता है।

अिस पत्रके बाद तो मालूम होता है अब मुझे जरूर छोड़ देंगे और प्रभावती बहनको भी यहांसे वे अभी ही वहां ले जायंगे। क्योंकि जैसे खर्चके प्रश्नोंके लिये तो बापू जिद करके भी स्वयं साधारण जेलमें ही जायंगे। बापूजी कौन कम हठीले हैं?

७–१५ बजे अर्थात् जिस क्षण बाकी आत्माने जिस मानवदेहसे और सरकारी बन्धनसे सदाके लिये मुक्ति प्राप्त की थी ठीक अुसी क्षण अुनकी पसन्दकी प्रार्थना भजन और गीतापाठ शुरू किये गये। अुस वक्त अैसा लग रहा था मानो आंखोंके सामने बाका हंसता चेहरा तैर रहा हो। सारा कमरा प्रार्थनाके पवित्र अुच्चारणोंसे गूंज अुठा था और अैसा लगता था जैसे बा फिर अेक बार हम लोगोंके बीच आ गयी हैं। और कुछ समयके लिये हम भूल गये कि यह प्रार्थना बाकी मृत्युके निमित्तसे हो रही है। वे हमारे साथ प्रार्थनामें भाग भी अवश्य ले रही होंगी, शायद हम अपने अज्ञानके कारण अुन्हें प्रत्यक्ष न देख पाते हों। कुछ भी हो लेकिन आजकी प्रार्थनामें कुछ दूसरा ही वातावरण था।

बाके बारेमें चलाये गये सरकारके झूठके सिलसिलेमें पत्रव्यवहार अभी तक जारी है। परन्तु मुझे तो विनाशकाले विपरीत बुद्धिवाली बात लगती है। सरकार अितनी अधिक गिर गयी है कि पार्लमेन्टमें पूछे गये सारे प्रश्नोंके अुत्तर अुसने बिलकुल झूठ दिये हैं। अेक जिम्मेदार सरकार कितना अधिक झूठ बोल सकती है! और किस व्यक्तिके बारेमें झूठे जवाब दिये जा रहे हैं यह देखनेकी भी अिस समय ब्रिटिश सरकारको चिन्ता नहीं रही। जो बा सीधी-सादी नारी

बोल रहे हैं। अिसलिअे तुम्हारी तरह गुस्सा करनेके बजाय मुझे सरकार पर दया आती है। जैसे किसी मनुष्यको चोट लग जाने पर मनमें दयाकी भावना पैदा होती है कि अरे, बेचारेके चोट लग गअी! वैसे ही मुझे खयाल होता है कि अिन बेचारोंको झूठ बोलना पड़ रहा है। गुनाह गरीब होता है। मेरे लिअे अैसे लोग क्रोधके पात्र नहीं बल्कि दयाके पात्र हो जाते हैं। यह बात वाअिसरॉयकी समझमें आने लायक नहीं है। मनमें किसीके लिअे लेशमात्र भी क्रोध करना मेरी दृष्टिसे तो हिंसा ही है। जब यह अुत्तेजनाकी भावना ही मनुष्यमें न रहे, तब वह सच्चा अहिंसक कहलाता है।

आगाखाँ महल, पूना
११-१-'४४

आगे संबंध रखनेवाले कागजमें सरकारने कर्नल भंडारी और डॉ॰ गिल्डरका भी हवाला दिया है। कर्नल भण्डारीने सरकारसे कहा था कि डॉ॰ गिल्डरका यह मत है कि बापूकी बीमारीमें डॉ॰ दिनशा मेहता कोअी खास मदद नहीं कर सकते। यह बात बिलकुल गलत है। परंतु बापूको डॉक्टर साहबसे पहले ऐसे मुझे यह सब अच्छा लगता है। अिसके स्पष्टीकरणके रूपमें डॉक्टर साहबने पत्र लिखा है कि

> दिसम्बर १९४३ में जब आप जो कर्नल भंडारीके छुट्टी पर जानेसे अनकी जगह काम करते थे मुझसे मिलने आये थे। मैंने आपसे पूछा कि डॉ॰ दिनशा मेहताका कुछ अुपयोग हो सकेगा? मैंने गांधीजी या डॉ॰ सुशीला नय्यरके साथ कोअी बात नहीं की थी अिसलिअे अुस समय कोअी पक्की राय नहीं थी। परन्तु दूसरे दिन मैंने कह दिया था कि डॉ॰ मेहता बहुत ही अुपयोगी साबित होंगे।
>
> फिर भी ११ जनवरी, १९४४ तक डॉ॰ मेहताके लिअे मांगी गअी अिजाजतके बारेमें कुछ भी नहीं हुआ। तब हमने दूसरी बार लिखित याददिहानी करायी। अिसके सिवाय

डॉ. विधानचंद्र रॉयके बारेमें भी लिखा था और बार बार कहा था। लेकिन अुसका तो कोअी जवाब ही नहीं मिला था।

और तालीम पाअी हुअी दाअीके बारेमें सरकारने जो मूर्खभरी बात कही है अुसका स्पष्टीकरण करनेकी जिआयत ऐसे हुअे न पहुंचा कि तालीम पाअी हुअी अेक भी दाअी कभी यहां नहीं आअी। पारसीके अस्पतालमें काम कर चुकी अेक दाअी दी गअी थी। अुसने आठ दिन बाद ही मुक्त कर देनेके लिअे कर्नेली साहबसे कहा और वह चली गअी।

अिस प्रकारका पत्र लिखकर विस्टर साहबने दोपहरको रवाना किया।

यह पत्र रवाना हो ही रहा था कि शिमलेमें निवासके लगभग अेक घंटे बाद अखबारोंमें आया कि नअी दिल्लीकी राज्यपरिषद्में श्री रामसरनशरण अेक प्रश्न पूछा कि अेक विशेषज्ञसे बाका अिलाज करनेकी अनुमति कब दी गअी थी? अुसके अुत्तरमें कहा गया कि हमसे ९ फरवरीको मंजूरी मांगी गअी थी। १ फरवरीको अिसने मंजूरी दी थी और अेक-दो दिनमें बीमारकी चिकित्सा शुरू हो गअी थी। समाचारमें आया है कि यह जवाब गृह-विभागके मंत्री कोनरान स्मिथने दिया है।

परन्तु सही बात यह है कि ३१ जनवरी (१९४४) के दिन ही शामको बापूजीने कर्नल साहबको लिखित पत्र दिया था। अुस समय मैं वहीं बैठी थी क्योंकि बापूजी मुझे मार्गोपदेशिका का पाठ समझा रहे थे।

अखबारी समाचार में आअी हुअी यह रिपोर्ट मैंने काट ली। बापूजी भी अिस तरहकी बात जो अखबारोंमें आती है अुनकी कतरन कभी तो स्वयं ही काट लेते हैं या काटनेकी सूचना दे देते हैं और अैसी कतरनोंकी फाअिल रखते हैं। अिसलिअे मैंने गुजराती अखबारोंकी कतरनोंकी फाअिल बना ली है। गुजराती अखबार —— देखना था और अब मैं अकेली हूं।

दुःख तो रही थी परन्तु किसी पर प्रगट नहीं होने दे रही थीं। वे हँसते मुँह सब सामान बाँध रही थीं क्योंकि बापूके आध्यात्मिक जीवनका रस वे यथेष्ट पी रही थीं। वैसे आध्यात्मिक जीवनके दर्शनोंका लाभ तो बहुतोंको मिला होगा परन्तु प्रभाबहनने असे अपने जीवनमें अुतार लिया है। अिसलिअे अुनके लिअे यह अवसर कठिन होने पर भी वे शान्तिपूर्वक अुसका सामना कर रही थीं। परन्तु यदि अुनके स्थान पर मैं होती तो मुझे नम्रतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये कि हुक्म मिलते ही शायद मैं रोना शुरू कर देती।

शामको घूमने जाते समय बापूजी बोले — देख प्रभा कितनी बहादुरीसे साथ तैयार हो रही है? यही दिन यदि तेरे लिये आ जाय तो अब तुझे हरगिज आश्चर्य नहीं होना चाहिये। प्रभाको तो फिर भागलपुर जेलमें ही जाना है जब कि तुझे अपने संबंधियोंके पास जाना होगा। दोनों स्थितियोंमें कितना अंतर है! यद्यपि प्रभा तुझसे बहुत बड़ी है और यह भी सच है कि अुसने बहुत कुछ देखा है। परन्तु मेरी दृष्टिमें तो यह वैसी ही बारह-तेरह वर्षकी लड़की है जैसी यह पहले-पहल मेरे पास आयी थी। अुसके बजाय तेरी रिहाईका हुक्म आया होता तो?

मेरे जवाब देनेसे पहले ही हममें से कोअी बोल अुठा — पानी का नल ही खुल जाता!

मैं बालक थी अिसलिअे मैंने कहा — आप सब भले कुछ भी कहें परन्तु मेरा तो भगवान है। देख लेना बापूजीको लिये बिना नहीं जाअूँगी। अिस प्रकार कह तो रही थी परन्तु मनमें डर रहा था कि छुटकारेका हुक्म आयगा तब पता चलेगा।

आगाखाँ महल पूना
१२-४-'४४

आज प्रभाबहनके बाहर जानेका दिन था। बारह बजे खा-पीकर सब बैठे थे कि अितनेमें अेक पुलिस ट्रक आयी। वह चारों ओर जालीसे बन्द की हुई थी। और सार्जेन्ट चार-पाँच पुलिस और अेक

मदद थी। पुलिसवालोंके सब लोग बंदूकें लिये हुअे थे। मैंने कहा "ये दुबली-पतली प्रभावतीबहन कहाँ भागकर जानेवाली हैं जो जितने पुलिस लेने आये हैं?"

बापूजी हँसते हँसते बोले — यह तो भागनेवाली नहीं है परंतु जिसका पति (जयप्रकाशजी) भागता है न?

बापूजी और हम सब प्रभाबहनको बस तक छोड़ने गये। अस समयका दृश्य बड़ा करुण था। बाकी सबके लिये छोड़कर बापूजीसे जुदा होकर जा रही थी। उनकी आँखोंमें पानी आ गया था।

बापूजीकी तबीयत कुछ खराब हो गयी है। रातको शरीरमें जरा बुखार-सा लगनेके कारण आज उन्होंने खाना छोड़ दिया।

३५

बापूजीकी बीमारी

आगाखाँ महल पूना
१७-४-'४४

पू. बापूजी मलेरियासे पीड़ित हैं। बुखार बहुत रहता है। आजसे चारों डॉक्टरोंने अनके पास दिनरात रहनेकी तैयारी की है। कुनैन लेनेसे अिनकार करते हैं। अिस बीमारीमें काफी कमी अवश्य महसूस होती है। अीश्वरसे प्रार्थना करती हूँ कि बापूजीको जल्दी तन्दुरुस्त बना दे।

शामको हम समाधिकी यात्राको जा रहे थे। बापूजी बोले कि मुझे भी चलना है। लेकिन डॉ. गिल्डर साहबने समझाया तो मान गये। रातको लगभग १०४ डिग्री बुखार था। डॉक्टर साहब कह रहे थे कि आज यदि हालत ऐसी ही रही तो कल कुनैन देनी ही पड़ेगी। आज मालिश और स्नान नहीं कराया गया।

जिससे मुझे अपार आनन्द हुआ। मैं कुदकती-फुदकती डॉक्टर साहब, कटेली साहब प्यारेलालजीके पास गयी और सबको छोटे बच्चोंकी तरह अंगूठा दिखाते हुये कहा "क्यों देखा बापूजीको लेकर ही बाहर आयी न? भगवान किसका? आपका या मेरा?

शामको बापूजी थोड़े थककर हमारे आंगनमें आये। सब अच्छी तरह पैक करना वगैरा बातें कहीं। और अंतमें बोले "न जाने क्यों मुझे छूटनेका कोई उत्साह नहीं है। उल्टे मुझे अपने हृदयके भीतर अंधेरा लग रहा है। सोचता हूं बाहर जाकर क्या कर सकूंगा। मेरा तो खयाल है कि सरकार अधिक समय मुझे बाहर नहीं रहने देगी। दिमाग पर खूब बोझा लगता है।

प्रार्थनाके बाद पू. बापूजीके पैर दबाकर हम सब सामान बांधने में जुट गये।

पुस्तकें स्टेशनरी और दूसरा भी जितना सामान पैक करना था कि मीराबहनके सिवाय रातभर हममें से किसीने पलक तक नहीं मारी। एकाएक रिहाईका हुक्म! हमने तो आजन्म घरकी तरह सब इंतजाम कर लिया था। प्यारेलालजी और सुशीलाबहन तो अपने कागजोंमें से ही सिर न उठा सके। डॉ. गिल्डरने अपना पैकिंग रातको अढाई बजे पूरा किया।

६-५-'४४

मैं सुबह ४ बजे निपटकर नहाने-धोने गयी। साढ़े चार बजे प्रार्थना हुई। बापूजीको गरम पानी और शहद दिया। कटेली साहबने गद्गद हृदयसे ७५ रुपयकी थैली बापूजीको अर्पित की। वे प्रेमी सज्जन थे। साढ़े सात बजे समाधि पर गये। वहां फिर समाधिमें लीन हुयी दो महान आत्माओंसे सच्ची बिदा तो आज लेनी थी। अब तक रोज फूल चढ़ानेके बहाने भी मानो साक्षात् मिलन हो जाता था। अब पता नहीं बापूजी कब आयेंगे? खूब सजावट और धूपदीप किया। पूरी प्रार्थना और बारहवां अध्याय बोलते बोलते सभी गद्गद हो गये। इक्कीस महीनोंमें दो दो प्रियजनोंने यहां कठोर बिदा ली थी। पत्थर जैसे हृदयको

भीड़ होनेके कारण लोग पेड़ों पर चढ़ गये। प्रार्थनाके बाद बापूजी थोड़ा घूमे और खूब थक जानेके कारण थोड़ा आराम करके दूध पिया। डॉक्टरोंने जांच की।

रातको जब मैं बापूजीके सिरमें तेल मल रही थी तब मुझे उन्होंने इतना ही कहा : देख लिया, मनुष्य जैसी श्रद्धा रखता है वैसा ही फल मिलता है। हृदयसे की गयी निःस्वार्थ प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती, जितना तूने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया। मैं और दूसरे सब आज तक विनोद करते थे। परन्तु यह मैं तुझे विनोदमें नहीं कह रहा हूं। जितना ज्ञानपूर्वक समझ लियी तो बहुत है। श्रद्धा ज्ञानपूर्वक हो तभी वह महत्त्वपूर्ण काम करती है। यह हृदयमें अंकित कर लेना।

३७
पर्णकुटीमें

पर्णकुटी पूना
७-५-'४४

पू० बाका स्थूल शरीर हमारे बीचसे उठ गया था फिर भी उनकी समाधिके दर्शनोंसे ऐसा खयाल होता था कि वे हमारे बीचमें [illegible] हैं। परन्तु आज पहला दिन ऐसा लगा जब मेरे मनमें और हमारा सहवास था — यद्यपि [illegible] आदमी नहीं रहे थे — कुछ न [illegible] मालूम हुआ और वह थी पू० बाकी शीतल छाया थी। [illegible] परिवर्तन हो जानेका भान पहले-पहल आज हुआ। [illegible] मुझे [illegible] आठ बज तकके समयमें [illegible] बिलकुल भान नहीं था।

जब [illegible] बापूजी [illegible] मुझसे बोले [illegible] कि समाधि पर जा [illegible] जायगा। परन्तु यह विचार आते ही भान

हुआ कि आज हम बा और महादेवको सचमुच भूला पड़ गये हैं। क्योंकि कल सवेरे तो दर्शन करके चले ही थे। यदि तुझे या दूसरे किसीको जाना हो और समय मिले तो हो आना। सुशीलाबहन तो काममें इतनी डूबी हुई हैं कि उसे बिलकुल वक्त नहीं मिलेगा। परंतु वह वहां जाना पसन्द करेगी। इसलिये उसे पूछ लेना। मुझे आकर खाना देगी तो चलेगा।"

वहां जानेवालोंमें तो हम बहुतसे हो गये। सब वहां गये और दर्शन करके वापस आये।

आकर साढ़े ग्यारह बजे बापूजीको खाना दिया। बीमारीके बाद आज यह पहला भोजन था — अेक कटोरा पतली रोटी (खाखरा) जितना मक्खन, ८ औंस दूध और उबला हुआ साग। बापूजीको अभी तक कमजोरी तो है ही। मुलाकातियोंका पार नहीं है। जिससे बापूजीको थकान भी महसूस होती है। शामकी प्रार्थनामें कोई जगह न होनेसे पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। शामको कर्नल भंडारी आये थे। कटली साहब अभी तक आगाखां महलमें ही हैं। कहते थे कि वहां उन्हें सब कुछ समेटनेमें अेक दो दिन लग जायेंगे।

पर्णकुटी पूना
१ -५-'४४

पू॰ बापूजीको कहां रहनेसे आराम मिलेगा इसकी डॉक्टरों और बापूजीके बीच खूब चर्चा हो रही है। बापूजी तो सेवाग्राम ही जाना चाहते हैं। परन्तु वहां सख्त गरमी होनेके कारण सभी मना करते हैं। खास तौर पर हवा खानेको ही कहीं जाना हो तो बापूजी हर्गिज नहीं चाहते। परन्तु हवा खाते खाते शरीरके सुधरते हुओ बापूजी कुछ महत्त्वपूर्ण काम कर सकें अैसा स्थान तो अेक जुहू ही है। अंतमें तय हुआ कि जुहू पर जाकर रहें। यह अनुनय विनयके बाद बापूजीने शान्तिकुमार मोरारजीका मेहमान बनना स्वीकार किया। अिसलिअे आज शान्तिकुमार भाओके बंगले पर [illegible] हमारा जाना तय हुआ है।

लोगोंको पता न चलने देनेके लिये ड्राअिवर बड़ी होशियारीसे मोटरको तेज़ीसे ले जा रहा था। परन्तु कितनी ही जगह जनताके प्रेमके आगे अुसकी होशियारी नहीं चल पाती थी और लोग मोटरके पास आकर गांधीजी जिन्दाबाद के नारे लगाते थे।

मोटरमें अेक तरफ मैं अेक तरफ सुशीलाबहन और बीचमें बापूजी बैठे थे। बापूजीका विचार था कि जुहू पहुंचनेमें अेक घंटा लग जायगा अिसलिअे मैं सो लूंगा। परंतु सो न सके।

ग्यारह बजे घर पहुंचे। सुमतिबहन (श्री शान्तिकुमार भाअीकी पत्नी) ने बापूको तिलक लगाकर माला पहनाअी। अम्माजान (श्री सरोजिनी देवी) वहीं थीं अुन्होंने बापूजीका आलिंगन किया।

मने अुन्हें प्रणाम किया कि तुरन्त अुनके मुहसे ये शब्द निकले

क्यों बच्ची बा तो हम सबको छोड़कर चली गयीं न? आज बाके बिना बापूको अकेला देखकर हृदयको चोट लगती है। बाने मरकर तीन ही महीनोंमें बापूके लिये जेलके द्वार खोल दिये। मुझे बाकी आखिरी बातें सुननेकी अिच्छा है। तुम तो बड़ी भाग्यवान हो कि आखिर तक वहीं रहीं। लेकिन मैं अुनकी आखिरकी बात सुनकर ही अपनेको पवित्र कर लूं।

मेरे मनमें अम्माजानके लिये पूज्यभाव तो था ही परंतु अुनके अैसे प्रेममय शब्द सुनकर अुनके स्नेहशील स्वभावसे मैं अधिक परिचित हुअी।

बा और सरोजिनी देवीके बीच कैसा घनिष्ठ संबंध था अुसका यहां वर्णन करना अप्रस्तुत होगा। यद्यपि मैंने सामान भी ठीकसे जमाकर नहीं रखा था लेकिन अिस खयालसे कि अुनके ये शब्द कहीं भूल न जाअूं अुसी क्षण अपनी डायरीमें नोट कर लिया।

बापूजी आज प म नवने बिल्कुल मालिश करवाने गये। मैं बापूजीके सामानकी व्यवस्थामें लगी।

लगभग साढ़े ग्यारह बजे बापूजी सब कामसे निपटकर आराम करनेके लिये लेटे। मैं पैरोंमें घी मल रही थी। मुझे बहुत कम

आज मुझे तेरे बारेमें अच्छी चिन्ता हो रही है। मुझे सरकार कितने दिन बाहर रखेगी यह मैं नहीं जानता और अब मुझे पकड़े तो सरकार तुझ या सुशीलाको मेरे साथ नहीं रहने देगी। लेकिन सुशीलाबहन तो डॉक्टर है अिसलिअे शायद अुसे मेरे साथ रखे। अिसलिअे जैसे सुनारके पास सोना या सुन्दर होता है परन्तु अुसे आकार कैसा देना अिसकी अुसे चिन्ता रहती है, अुसी तरह मुझे आज तेरे विषयमें चिन्ता हो रही है। तेरी पढ़ाओी ठीकसे होनी चाहिये लेकिन अब मैं जबसे बाहर हूं तो भी तुझे अच्छी तरह पढ़ाना मेरे लिअे कठिन हुआ। जेलमें दूसरा कुछ काम नहीं होता था। लेकिन यहां तो अितना काम डाक और मुलाकातें रहती कि मैं अेक मिनिटकी भी फुरसत नहीं निकाल सकूंगा। अिससे तुझे जरा भी घबराना नहीं चाहिये। परन्तु अब मेरे दिमागसे तुझको जुदा होना ही पड़ेगा। अिस तरह तू तैयार रह सके अिसीलिअे अितना मैंने समझाया। अिसका

अितनी चिन्ता होगी जिसकी कल्पना मुझे तभी हुअी जब अुन्होंने गरम पानी पीनेमें दस मिनिट देर की।

दिनभर दर्शनार्थियोंकी भीड़ फाटक पर जमी रही। परंतु प्रार्थनाके समय ही सबको भीतर आने देना तय हुआ।

शामको सूर्यास्तके समय जुहूके तट पर बापूजीकी हाजिरीमें गर्जन करते हुअे सागरके साथ मानव सागरके मिलने पर भव्य प्रार्थना हुअी। जनताने २१ महीने बाद बापूजीके दर्शन किये। प्रार्थनाके बाद बापूजीने भेंटमें आये हुअे फल बालकोंको बांट दिये, हरिजन फंड अिकट्ठा किया और घर आकर थोड़ा घूमे। नौ बजे दूध पिया और घरके लोगोंसे बात करके सो गये।

अिस प्रकार जुहूका पहला दिन बीता।

जुहू
१५-५-'४४

बापूजीको जितना आराम चाहिये अुतना नहीं मिल पाता। मुलाकातियोंकी बंबअीमें बड़ी-सी भीड़ रहती है और बापूजी बातें किये बिना रह नहीं सकते। अिसलिअे डॉक्टरोंने सोचा कि कोअी अैसा चौकीदार होना चाहिये जो बापूजीको भी हदसे बाहर जाने पर कह सके और मुलाकातियोंको भी काबूमें रख सके। बापूजीको आराम कराना और प्रजाका अपयश लेना — यह बहुत कठोर हृदयके चौकीदारके बिना नहीं हो सकता था। सबकी नजर अम्तुस्सलाम पर थी। अुन्होंने यह जिम्मेदारी हर्षसे स्वीकार की।

शामको मैं कुछ पत्र बापूजीको पढ़कर सुना रही थी। अुसी समय अम्तुस्सलाम आअी। अपने स्वाभाविक ढंगसे चेहरे पर हास्य लाकर कहने लगी — अब मैं कोअी अिस नौकरीकी अम्तुस्सलाम ही नहीं हूं आपकी चौकीदार भी बनी हूं। कोअी भी अैसा काम किया तो फिर देखिये मजा!! बापूजी खिलखिलाकर हंस पड़े।

अुन्होंने सबको जितना काबूमें रखा और अपने कर्तव्यका अिस हद तक पालन किया कि यहां ठहरी हुअी पंडित विजयालक्ष्मीको भा

खुद प्रभावतीबहनको भी जाना हो तो अम्माजानकी इजाजतके बिना बापूजीके पास नहीं जा सकती थी। वे खुद भी बिना कामके नहीं जाती थीं। जिन्हें अम्माजानकी चिट्ठी मिले वे ही अन्दर जा सकते थे।

सारे दिनमें बापूजीने क्या क्या काम किया क्या खुराक ली वगैरा सारे दिनकी डायरी देने मैं रातको उनके पास जाती। और रातको वहां जाती तब मुझे खिलाये बिना वे कभी वापस नहीं आने देतीं। खिलानेका उन्हें बड़ा शौक था। वात्सल्य भाव भी वैसा ही था। रोजकी तरह जब आज रातको मैं वहां गयी तो मैंने कहा: "मैं यहां कुछ न कुछ खा लेती हूं। पर बापूजी कभी मुझे खूब फटकारेंगे।"

अम्माजान बोलीं: "बुड्ढेजी यदि तुझे डांटे तो तू साफ कह देना कि आपको श्रम पड़ता। और जब तक नया श्रम करनेकी लिखित अनुमति अम्माजान न दें तब तक श्रम न करनेका आपका वचन है। इसलिए मुझे डांटना हो तो पहले अम्माजानसे इजाजत ले आइये।"

जाये जिसका मैं प्रबंध करा दूंगा। जिसके सिवा किसी लड़कीसे कह दूंगा। वह आपको अच्छी तरह तैयार करके देगी। (मेरी तरफ देखकर) जिस लड़कीको चोरबा बनाना नहीं आता परन्तु अेक बंगाली लड़की है असे कहूंगा। म आपकी अेक भी बात नहीं सुनूंगा। (विनोदमें) मैं हुक्म दो दे रहा हूं। मैं भी कुशल डॉक्टर हूं और आपको मेरी देखभालमें रहना है। देखिये तो सही आपकी तबीयतमें कितना फर्क पड़ जाता है!

जिस तरह डॉ. महमूदके यहीं रहनेका और जरूरी खुराक देनेका जिन्तजाम बापूजीने कर दिया।

मुझे यह बात सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ और मैंने अेक नया ही पाठ सीखा। कहां अुबाला हुआ सात्त्विक भोजन और कहां आश्रममें चिकन-सूप ' बापूजीसे पूछा तो हंसते हंसते कहने लगे आश्रम यही तो सीखना है।

[बिहारके दंगोंके सिलसिलेमें बापूजी पटनामें डॉ. महमूदके मेहमान बने थे। वे बार बार मुझे अपनी पुत्रीके समान जानकर मेरी खबर लेते रहते हैं। अुन्होंने मुझे अपने पत्रमें अुपरोक्त घटनाकी याद दिलायी थी। वह जिस प्रसंगके सिलसिलेमें होनेके कारण अुन्हींके शब्दोंमें यहां अुद्धृत करती हूं

I need hardly tell you how much I love everything connected with Bapu, much more his flesh d blood. You also know well how much he loved me. H was not only a friend but a father to me I feel I am left alone in this world after he ha gon

I wonder f you will emember that while I was i the Ash m and was ill, doctors prescribed to give me chicken so p and Bapu ordered that I may be pplied chicken soup. It was perhaps entirely a new th ng fo Sevagram Ashram and naturally there was a flutter in the Ashram I protested strongly

with Bapu that I should not have it, but he refused to listen to me and said that when doctor prescribes you must have it and the Ashram people may not themselves have meat but they must learn how *to feed others if and when it was absolutely essential.* I considered it as a great privilege. He simply captivated my heart *]

अध्ययन ८ बजे काठियावाड़के कार्यकर्ता आये। भावनगरकी हालत बयान कर रहे थे। वहाँ तो मारपीटकी बात हो रही थी। अेक भाओीने कहा — महाराजा साहब तो बहुत अच्छे हैं। सुनते सब कुछ हैं परन्तु कुछ हो नहीं सकता। तब हम क्या करें?

बापू — जब आप कहते हैं यह सब सच ही है तो सत्याग्रही पद्धतिसे विरोध कीजिये।

---

* मेरे लिअे तुमसे यह कहना शायद ही जरूरी हो कि बापूसे सम्बन्ध रखनेवाली हर चीजसे मैं कितना प्यार करता हूँ। तब अनुके पत्रोंसे तो कितना अधिक नहीं करूँगा? तुम यह भी जानती हो कि बापू मुझे कितना ज्यादा प्यार करते थे। वे मेरे दोस्त ही नहीं थे बल्कि पिता भी थे। मुझे लगता है कि अनुकी मृत्युके बाद मैं अिस दुनियामें अकेला पड़ गया हूँ।

शायद तुम्हें याद होगा कि जब मैं आश्रममें बीमार था तब डॉक्टरोंने मुझे चिकन-सूप पीनेकी सलाह दी थी। और बापूने मुझे चिकन-सूप पिलानेका हुक्म दे दिया था। यह सेवाग्राम आश्रमके लिअे शायद बिलकुल नयी बात थी। अिससे स्वभावतः आश्रममें थोड़ी सनसनी मची थी। मैंने अिसका जोरदार विरोध करके बापूसे कहा था कि मैं चिकन-सूप नहीं लूँगा। लेकिन अन्होंने मेरी बात सुननेसे अिनकार कर दिया और कहा कि जब डॉक्टर कहते हैं तो तुम्हें लेना ही चाहिये। आश्रमके लोग खुद भले मांस न खायें, लेकिन अन्हें यह सोचना चाहिये कि निहायत जरूरी होने पर दूसरोंको कैसे खिलाया जाय। अिसे मैं अपना बड़ा सौभाग्य मानता हूँ। अपने अिस व्यवहारसे अन्होंने मेरे दिलको बिलकुल मोह लिया था।

४३

बापूजीके कुछ पत्र

सेवाग्राम २९-१-'४५

अेक भीमसेन मोतीझिरेसे पीड़ित थे। जिसलिये बुसकी माताको बापूजीने पत्र लिखा

चि

बसंतके चले जानेका कोअी भी कारण नहीं है। मोतीझिरा भयंकर रोग नहीं है। सेवा-शुश्रूषासे बीमार जरूर अच्छा हो जाता है। तुम हिम्मत रखना और बसंतको भी सिखाना।

बापूके आशीर्वाद

यह पत्र बीमारके हाथमें पहुँचनेसे पहले ही बुसकी मृत्यु हो गयी। जिसलिये बापूजीने बुसकी माताको दूसरा पत्र लिखा। मृत्यु या जन्मके बारेमें बापूजी कैसे विचार रखते थे यह निम्नलिखित पत्र बतायगा।

१-२-'४५

चि

तुम्हारा तार मिला। बसंत चला गया यह तो सपना ही है न? फिर भी मन पर जिसका कुछ असर नहीं होता। मैंने बहुत मौतें देखी हैं, अनेक जन्म देखे हैं। ये अेक सिक्केके दो पहलू हैं। अेक तरफ मौत है तो दूसरी तरफ जन्म। दोनों पहलू अेकसे मूल्यवान हैं। जिस प्रकार जन्मका दूसरा पहलू मृत्यु और मृत्युका दूसरा पहलू जन्म है। जिसमें हर्ष-शोक क्या? और फिर ये सभीके मिले हैं। जीवनभर हम निबाह करते हैं जानते

हैं छूटते हैं। ये सब खेल हैं। तुम फिरसे ये खेल खेलती रहो। क्या विवाह रुक जायगा? मेरा बस चले तो मैं विवाह न रोकूं, धर्मविधि होने दूं। शृंगार मात्र छोड़ दूं। परन्तु अिस हालकी जानकारी तुम्हें ज्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम १५-२-'४५

चि

तुम्हारा पत्र मिला। हम यदि औश्वरको याद करें तो अच्छा बुरा, दुःख-सुख सब भूलना ही पड़ेगा। और जिस आम रास्ते पर देर अबेर हम सभीको जाना है। अंग्रेजी कहावतके अनुसार बहुमत तो वहीं है। यहां तो चार दिनकी चांदनी है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिल जाना है।

बापूके आशीर्वाद

अेक बहनने दूसरी जातिमें विवाह कर लिया, जिसलिओ अुसने पत्र द्वारा बापूजीका आशीर्वाद मांगा। बापूजीने पत्र दिया। बादमें पता चला कि जिस बहनने दूसरी जातिमें शादी की अुसके पतिकी अेक पत्नी मौजूद है। परन्तु बालविवाह होनेके कारण और पत्नी बहुत आधुनिक युवती न होनेके कारण अथवा किसी भी कारणसे पतिने अुसे छोड़ दिया और यह नया विवाह कर लिया। यह बात आशीर्वाद मांगनेवाली बहनने किसी कारणसे लिखी नहीं थी। सभी जगतमें यह अेक पहेली है। अैसे सांसारिक प्रश्नोंके समय बापूजीका मानस किस तरह काम करता था यह नीचेके पत्रोंसे मालूम हो जायेगा।

चि

तुम्हारा पत्र मिला। का भी मिला। मुझे अलग नहीं लिख रहा हूं। अुन्हें बीमार नहीं पड़ना चाहिये। तुम्हारी बात समझ गया। तुम दोनों विवाह कर लो। मेरे आशीर्वाद [illegible] ही।

सेवाग्राम आश्रम वर्धा
२५-१२-'४४

आज ओसाअियोंका त्यौहार होनेके कारण बापूजीने ओक सुन्दर सन्देश हिन्दीमें लिखा। बापूजीका मौन होनेके कारण वह संदेश पढ़कर सुनाया गया

"मेरी उम्मीद थी कि मैं आज दो शब्द बोल सकूंगा लेकिन ओश्वरेच्छा कुछ और ही थी। आजका दिन क्रिस्मसका है। हम जो सब धर्मोंको समान मानते हैं अुनके लिये ओेसे अवसर मनन करने लायक हैं आत्म-निरीक्षणके लिये हैं। ओेसे मौके पर हम अपने दिलके भीतरसे और सब मैल निकाल दें। हम जानें कि ओश्वर या खुदा ओक ही है। अुनके असली हुक्म भी ओक हैं। जिसको हम सत्य या हक मानें अुसके लिये दूसरोंको मारें नहीं। हम अुस सत्यके लिये मरनेकी तैयारी रखें और मौका आने पर मरें और अपने खूनकी मुहर अपने सत्य पर लगायें। यही मेरी दृष्टिमें निगाहमें सब मजहबोंका निचोड़ है। हम जिस अवसर पर विचार कर याद रखें कि ओसा मसीह, जिसे वह धर्म मानते थे अुसके लिये सूली पर चढ़े।

पूज्य बापूजी रोज अपने दैनिक विचार लिखते थे। जैसे कृष्ण भगवान्ने गीताके श्लोक हमें मनन करनेके लिये दिये वैसे ही ये सुवाक्य मनन करने योग्य हैं। मूल लिखावटकी नकल मेरे पास होनेके कारण यहां दे रही हूं *

* ये सुवाक्य अलग पुस्तकके रूपमें 'नित्य मनन' के नामसे नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी तरफसे प्रकाशित हो गये हैं। (कीमत १—— डाकखर्च —५—०) जिसलिये यहां संग्रह नहीं किया गया है।

४६

बापूजीके कुछ पत्र

सेवाग्राम २१-१-'४५

अेक नौजवान मोतीझिरेसे पीड़ित थे। अिसलिअे अुनकी माताको बापूजीने पत्र लिखा

चि०

बसंतके बारेमें घबरानेका कोअी भी कारण नहीं है। मोतीझिरा भयंकर रोग नहीं है। सेवा-शुश्रूषासे बीमार जरूर अच्छा हो जाता है। तुम हिम्मत रखना और बसंतको भी दिलाना।

बापूके आशीर्वाद

यह पत्र बीमारके हाथमें पहुंचनेसे पहले ही अुसकी मृत्यु हो गयी। अिसलिअे बापूजीने अुसकी माताको दूसरा पत्र लिखा। मृत्यु या जन्मके बारेमें बापूजी कैसे विचार रखते थे यह निम्नलिखित पत्र बतायेगा।

१-२-'४५

चि०

तुम्हारा तार मिला। बसंत चला गया, यह तो सपना ही है न? फिर भी मुझ पर अिसका कुछ असर नहीं होता। मैंने बहुत मौत देखी है, अितना जन्म देखा है। ये अेक सिक्केके दो पहलू हैं। अेक तरफ मौत है तो दूसरी तरफ जन्म। दोनों पहलू अेक-से सच्चे हैं। जिस प्रकार जन्मका दूसरा पहलू मृत्यु और मृत्युका दूसरा पहलू जन्म है। अिसमें हर्ष-शोक क्या? तो फिर भी मनाते रहते हैं। आखिर हम विचार करते हैं मानते

हैं, छूटते हैं। ये सब खेल हैं। तुम फिरसे ये खेल खेलती रहो। क्या विवाह रुक जायगा? मेरा बस चले तो मैं विवाह न रोकूं, धर्मविधि होने दूं। शृंगार मात्र छोड़ दूं। परन्तु ब्याह अिसकी जानकारी तुम्हें ज्यादा होगी। हिम्मत रखना।

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम १५-२-'४५

चि०

तुम्हारा पत्र मिला। तुम यदि ओश्वरको याद कर तो अच्छा-बुरा दुःख-सुख सब भूलना ही पड़ेगा। और जिस आम रास्ते पर देर सबेर हम सभीको जाना है। अंग्रेजी कहावतके अनुसार बहुमत तो वहीं है। यहां तो चार दिनकी चांदनी है। अन्तमें तो सबको मिट्टीमें ही मिल जाना है।

बापूके आशीर्वाद

अेक बहनने दूसरी जातिमें विवाह कर लिया जिसलिये अुसने पत्र द्वारा बापूजीका आशीर्वाद मांगा। बापूजीने भेज दिया। बादमें पता चला कि जिस बहनने दूसरी जातिम शादी की अुसके पतिकी अेक पत्नी मौजूद है। परन्तु बालविवाह होनेके कारण और पत्नी बहुत आधुनिक युवती न होनेके कारण अथवा किसी भी कारणसे पतिने अुसे छोड़ दिया और यह नया विवाह कर लिया। यह बात आशीर्वाद मांगनेवाली बहनने किसी कारणसे लिखी नहीं थी। स्त्री-जगतमें यह अेक पहेली है। अैसे सांसारिक झगड़ोंके समय बापूजीका मानस किस तरह काम करता था यह नीचेके पत्रोंसे मालूम हो जायेगा।

चि०

तुम्हारा पत्र मिला। का भी मिला। मुझे समय नहीं मिल रहा है। तुम्हें बीमार नहीं पड़ना चाहिये। तुम्हारी बात समझ गया। तुम दोनों विवाह कर लो। मेरे आशीर्वाद हैं ही।

तबीयत बिगड़ जानेके कारण बापूजीने हुक्म दिया कि मुझे अपना रहना सोना खाना पीना सब कुछ बापूजीके ही पास करना है।

बापूजीने डॉक्टरोंके अति आग्रह पर अपने स्वास्थ्यके लिये महाबलेश्वर जानेका निश्चय किया। उस समय मेरा स्वास्थ्य और भी बिगड़ गया था। इस कारण मुझे भी साथ ले गये। बहुत काम होनेके कारण पिछले कुछ समयसे उन्होंने मेरे पिताजीको पत्र नहीं लिखा था, परन्तु महाबलेश्वर पहुंचते ही मेरे विषयमें पत्र लिखा :

महाबलेश्वर,
२१-४-'४५

चि॰ जयसुखलाल,

तुम्हें यहां आकर ही लिख सकता हूं। चि॰ मनुको दुःख तो काफी भुगतना पड़ा। दिनमें नकसीर छूटती ही रहती थी। बुखार भी आता रहा। अब जान पड़ता है कि नकसीर नहीं छूटेगी और ज्वर भी नहीं आयगा। मनुको यहां ले आया हूं। दवा और परिश्रम सुशीलाबहनके थे। मैं कभी कभी कमर झुकाकर नैसर्गिक उपचार कराता। और दो दिन तक एक होमियोपैथिक मामा था, उसका इलाज किया। चिन्ताकी कोई बात नहीं। देखना है अब इस ठंडसे उसकी तबीयतमें क्या फर्क पड़ता है।

[illegible] रहनेकी आशा है।

तो मनु मेरे लिअे जो जितनी तकलीफ अुठानी पड़ती है अुससे शायद अुसे कुछ राहत मिल जायगी। अिसलिअे अन्तमें यह तय किया कि मैं बम्बअी जाअूं। सबकी राय होनेसे मैं वहांसे कराची चली गयी। मैं पहुंची अुसी दिन मुझे तथा मेरे पिताजीको बापूजीके पत्र मिले।

महाबलेश्वर,
२२-५-'४५

चि० जयसुखलाल

अन्तमें मनुडी अच्छी होकर यहां नहीं आयी, परंतु हार कर — मनसे और शरीरसे। अिसका असर परस्पर है। दोनोंके लिअे वही जिम्मेदार है। वातावरण भी हो सकता है। परंतु वातावरण पर काबू पाना ही मनुष्यकी मनुष्यता है। मनुको यह बात मैं पूरी तरह नहीं सिखा सका। अुसका भय अुसे आ जाता है। भयका कारण वह स्वयं ही है। दूसरोंकी बातें सुनकर अुनसे चिढ़ना, घबराना और रोना। यही आजकल अुसका काम है। जिससे अवकाश मिले तब पढ़ती है। सेवाभाव अुसमें अुत्तम है। सीखनेका अुसे बहुत ही शौक है। बड़ी प्रेमल है। अुसे अेनीमा और हुकवर्मकी शिकायत है, जो मुझ भी है। मैं अिन्हें काबूमें रखता हूं। मनु नहीं रखती। अब कुछ सूझ तो अुसके लिअे करना। मेरे पास तो वह है ही। मैं अुसे नहीं छोड़ूंगा। वह खूब टूट गयी है। तुम अच्छे होगे। चि० मनुडीका पत्र सामने है।

बापूके आशीर्वाद

महाबलेश्वर,
२२-५-'४५

चि० मनुडी

तू कराची गयी अच्छा किया। अेनीमा और हुकवर्म निकाल ही देने चाहिये। यदि तू ४ तारीखको लौट आयगी तो यहां मुझे

तबीयत बताने तो गयी। अुनको मुझ पर पिताकी-सी ममता थी। खूब प्रेमसे अुन्होंने मेरी तबीयतकी जांच की और वचन भी दिया कि "मैं कहूं वैसा करे तो तेरा साफ खराब होने पर भी मैं तुझे दूसरी लड़कियोंके साथ कर दूंगा।" सुशीलाबहनने भी वचन दिया — लेकिन शर्त यह थी कि नागपुर जानेका विचार मैं समझपूर्वक छोड़ दूं। वे जानती थी कि मेरी पसन्दकी बात नहीं होगी तो मैं मनमें कुढूंगी। किसीसे कहूंगी तो नहीं परंतु स्वास्थ्य पर अुसका प्रभाव पड़ेगा। अुसी दिन बुखार बढ़ा इसलिये अुन्होंने तो मेरे लिये अपना निश्चित मत दे दिया कि मुझे पहाड़की हवामें ही रहना चाहिये। बापूजीको यह मालूम होने पर अुन्होंने मुझे पत्र लिखा

महाबळेश्वर,
१-६-'४५

चि. मनुडी

तू फिर बीमार हो गयी? अब तो चेत! तू धीरज रखेगी तो बढ़िया नर्स हो जायगी। बुखार अुतरते ही भागी न जाना। सुशीलाबहन कहती है कि तुझे दिनशाजीके आरोग्य-मंदिरमें रहना चाहिये। तुझे बार बार बुखार आये यह मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। तू अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना सीख लेगी और लोहे जैसी मजबूत बन जायगी तो सब ठीक हो जायगा। जल्दी करनेसे कुछ नहीं होता। यहां आना हो तो आ जा। नागपुर जानेका मोह छोड़ दे।

बापूके आशीर्वाद

दिन दिन मेरा स्वास्थ्य अुलटा ज्यादा बिगड़ने लगा। बापूजीको मालूम हुआ तो अुनका हुक्म देनेवाला पत्र मुझे तारकी तरह पहुंचाया गया:

सकते हैं यह मेरे लिओ आश्चर्यकी बात थी। परंतु अपार प्रेमके सामने या पूर्वजन्मके ऋण-अनुबंधके कारण सब कुछ संभव हो जाता है, यह अिन पत्रों परसे समझमें आया।

मनोर विला
सिमला
२५-६-'४५

चि॰ जयसुखलाल

ट्रस्टका दस्तावेज मैंने बनाया है सो भेजता हूं। यहां गुजराती जानती है अिसलिओ गुजराती बनाया है। गुजराती दस्तावेजकी रजिस्ट्री न होती हो तो अिसका हिंदी या हिन्दुस्तानी बनवा लेना। अंग्रेजीकी कोअी जरूरत नहीं। शर्तोंमें फेरबदल कर सकते हो। मैंने तो तुम्हारे विचारोंको जिस प्रकार समझा है अुस प्रकार रख दिया है।

जब तक मनुका रोग मिट न जाय तब तक मुझे चिन्ता रहेगी। अब तो वह सिंधानीके आरोग्य-भवनमें चली गयी होगी। यह आशा रखें कि वहां अच्छी हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

यहां मैं लम्बे समय तक रहना नहीं चाहता। जितना रहना पड़ेगा वह शायद जाय कम हो जायगा।

मूल दस्तावेजकी नकल जो पू॰ बापूजीने अपने हाथसे लिखा है नीचे दी जाती है

१. मैं जयसुखलाल अमृतलाल गांधी मूल निवासी पोरबन्दरका हाल निवासी कराची बन्दरका यह दस्तावेज नीचेकी शर्तोंके अनुसार लिखता हूं।

२. अिस दस्तावेजकी तारीखको मुझ पर किसीका कर्ज नहीं है।

न होवूं तो मनुबहन अुक्त रकमका अुपयोग अपनी अिच्छानुसार कर सकेगी और सेवाग्राम आश्रमके संरक्षकोंकी तरफसे जो ट्रस्टी नियुक्त होंगे अुनको अगर मनुबहन चाहे तो मूल रकम ब्याज सहित अुसे सौंप देनेका होगा। यदि मनुबहन विवाह करे तो अुस समय बची हुअी रकम चारों बहनोंमें समान रूपसे बांट दी जायगी।

चि. जयसुखलाल

अिसमें कोअी फेरबदल करना चाहो या जिनके नाम दिये गये हैं अुनके बदले दूसरे नियुक्त करना चाहो तो कर देना। मेरी सलाह है कि ये नाम मेरे और तुम्हारे बाद कायम हों तो अच्छा।

बापूके आशीर्वाद

मुझे बापूजीने दिनशाजीके आरोग्य-भवनमें रख तो दिया परंतु वहां मुझे कुछ प्रवाही पदार्थों पर रखा गया। प्राकृतिक चिकित्सामें यह माना जाता है कि अिस प्रकार रहनेसे शरीर पर प्रतिक्रिया (reaction) होती है और अन्तमें रोग जड़से चला जाता है। मुझ पर भी प्रतिक्रिया हुअी और हमेशा अेक नया रोग शुरू हो गया। जिससे मैं कुछ घबरायी। मेरे बारेमें डॉक्टरोंको साप्ताहिक समाचार भी बापूजीके पास भेजने ही पड़ते थे। अुस सिलसिलेमें बापूजीने मुझे लिखा:

सेवाग्राम
२०-३-४५

चि. मनुडी

तेरी अच्छी कसौटी हो रही है। डॉ. दिनशा पर मेरा बड़ा विश्वास है। अिसलिअे मैं तेरी चिन्ता नहीं करता। अिस समय तुझे अच्छी जगह तथा विश्राम मिल रहा है। और तेरे लिखने परसे देख सकता हूं कि तुम दोनों बहनें वहां पर कुछ

भी मुन्हें अैसा तो लगा कि अिस प्रश्नके साथ न्याय हो सके तो अच्छा। और जहां तक मैं जानती हूं वे अिस प्रश्नको हल करनेकी कोशिशमें ही थे। परंतु राजनैतिक परिवर्तन अितनी तेजीसे हुअे कि महुवाकी मजदूर जमीनका सवाल अेक तरफ रह गया और आज तक वह अैसा ही पड़ा हुआ है। आज तो हमारे अिस छोटेसे शहरमें वादों के अैसे नारे लग रहे हैं कि अिस महुवाके लिअे पूज्य बापूजीने अितने असंख्य कामोंके बीच भी सतत चिंता रखी थी अुसके लिअे आज यह अेक बड़ा प्रश्न हो गया है कि वादों के नारोंको छोड़कर शहरकी यह शर्म मिटाओ जायगी या नहीं?

हमारे हिन्दी प्रकाशन

बापूके पत्र – १ आश्रमकी बहनोंको	१–४–०
बापूके पत्र – २ सरदार वल्लभभाईके नाम	१–८–०
बापूके पत्र मीराके नाम	४– –
सच्ची शिक्षा	२–८–०
बुनियादी शिक्षा	१–८–०
शिक्षाकी समस्या	३–०–०
विद्यार्थियोंसे	२–०–०
हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण	१–८–०
गोसेवा	१–८–०
दिल्ली-डायरी	३–०–
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	१–८–
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१–८–
वर्णव्यवस्था	१–८–०
सत्याग्रह आश्रमका इतिहास	१–४–
रचनात्मक कार्यक्रम	०–६–०
बालपोथी	०–३–०
रामनाम	०–१ –०
आरोग्यकी कुंजी	–७–०
खुराककी कमी और खेती	२–८–०
भाषावार प्रान्त	–४–०
शिक्षाका माध्यम	०–४–०
राष्ट्रभाषाका सवाल	–६–०
विवेक और साधना	४–०–
एक धर्मयुद्ध	०–१२–०
महादेवभाईकी डायरी – १	५–०–०
महादेवभाईकी डायरी – २	५–०–०
महादेवभाईकी डायरी – ३	६–०–
सरदार वल्लभभाई – १	६– –
सरदार पटेलके भाषण	५–०–०

है। भक्त मेहताने कहा है “सुतर आवे तेम तुं रहे, जेम तेम करीने हरिने लहे।”* अिसलिओ वहां बैठकर भी तुम सत्य और अहिंसा सीखकर अुसे अमलमें ला सकोगी तो मेरे पास या मेरे अधीन सीखनेसे अधिक सीखी हुअी मानी जाओगी।

तुम दोनोंको बापूके आशीर्वाद

जिस दिन जिस लड़केको पीटा था अुसी दिन वह लड़का रातको साढ़े ग्यारह बजे घर आकर यह कहते हुअे मेरे पैरोंमें पड़ा कि मुझसे बहुत बड़ा काम हो गया। और अुसने फिर बापूको विश्वास दिलाया कि अब वह कभी अिस प्रकारकी शरारत नहीं करेगा। अुसके बाद तो बापूजीका अुपरोक्त पत्र तो आ ही गया था फिर भी मैंने क्षमा और स्पष्टीकरण मांगा था। अुसके अुत्तरमें बापूजीने लिखा

दिल्ली
२९-९-'४६

चि. मनुडी,

तेरा १५ तारीखका पत्र कोअी तीन दिन पहले मिला था। आज जवाब ही लिख पा रहा हूं। तूने जो साहस दिखाया अुसकी चर्चा करके तूने पूछा कि अिसे मैं हिंसा मानूं या अहिंसा? लेकिन तेरा अिस विचारमें न पड़ना ही अच्छा है।

अहिंसाका मनन करनेसे समय आने पर हमारे हाथों अहिंसक कार्य ही होंगे। दूसरे लोग अुसे कैसा समझें या न समझें अिसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अुसके अन्दरका आधार अिस बात पर नहीं होता कि दूसरे क्या समझते, परंतु हमारे मन पर होता है। मनको तो हम भी नहीं जान सकते। परंतु मन जो कि जान सकते हैं तो यदि किसीका मन कहे कि चांटा देना या थप्पड़ मारना अहिंसक कार्य है तो अुसके लिए तो वह अहिंसक ही रहेगा। वह वास्तवमें अहिंसक है या नहीं

* तू कैसा भी सरल जीवन बिता लेकिन हरिको प्राप्त कर।

यह तो भगवान् ही जाने। सामनेवाले मनुष्य पर अुसका जो असर पड़ा हो अुस परसे वह खुद और प्रेक्षक निर्णय कर सकते हैं। अिस सारी झंझटमें मैं तुझे क्यों डालूं? तू लगनसे यह प्रयत्न करती रहेगी तो अुसे मैं तेरी शिक्षा ही समझूंगा।

तुम दोनोंको बापूके आशीर्वाद

महुवाकी मंडली तो मशहूर है। शुरूमें मैंने बहनोंसे यहांका वातावरण जान लिया। अब तकका मेरा वास पश्चिम-भोपाल पोरबन्दर, बम्बई और कराची जैसे शहरोंमें हुआ था। अतः अितनी अधिक बड़ी मक्खियां देखकर मुझे आश्चर्य ही होता था। जगह जगह कूड़ेके ढेर पड़े हुअे थे। परंतु बादमें मुझे मालूम हुआ कि काठियावाड़में यह सब स्वाभाविक है। यहां तहां स्त्रियां घूंघट निकालकर सवेरे-सवेरे या सन्ध्याके समय पाखाने बैठ जाती हैं। यह ढंग तो मैंने पहले पहल यहीं देखा। महुवा निवासियोंके लिअे और खास तौर पर स्त्रियोंके लिअे यह अत्यंत लज्जाजनक बात है। शायद पूज्य बापूजीके प्रयत्नसे म्युनिसिपैलिटी द्वारा ही कुछ हो सकता है क्योंकि शहर छोटा है। साथ ही दिन-दहाड़े और भर बाजारमें जब बहनोंके साथ छेड़खानी की जाती हो तो जिन बहनोंके घर पाखाने न हों वे देर-सबेर पाखानेके बाहर कैसे जा सकती हैं? यह समस्या म्युनिसिपैलिटी ही हल कर सकती है। अिसलिअे मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा   मैंने महुवा देखा है। परंतु तेरा वर्णन तो मुझे और भी खराब बताता है। तुम वहां अब ही दिन रहनेकी बात है। मेरा पत्र श्रीमान् दीवान साहबके पास भेजा गया। अुसके बाद जब सितम्बरमें मेरा बापूजीके पास दिल्ली जाना हुआ तब और अुसके बाद जब जब श्रीमान दीवान साहबसे मिलना होता तब मेरा यह प्रश्न अुनके सामने खड़ा ही रहता था। बापूजीने अुनसे कहा था कि   महुवामें रहनेवाली बहनों ही अहमियतकी बात सुनकर मुझे संतुष्ट कीजिये। और आज मुझे अितना स्वीकार करना चाहिये कि यद्यपि महुवाकी म्युनिसिपैलिटी यहांके नागरिकोंके हाथमें होनेसे मैं कहती थी कि   अब तो नागरिकोंके हाथमें गया है। फिर

भी मुझे अैसा तो लगा कि जिस प्रश्नके साथ न्याय हो सके तो अच्छा। और जहां तक मैं जानती हूं वे जिस प्रश्नको हल करनेकी कोशिशमें ही थे। परंतु राजनीतिक परिवर्तन जितनी तेजीसे हुओ कि महुआकी मशहूर मच्छीमारीका सवाल अेक तरफ रह गया और आज तक वह वैसा ही पड़ा हुआ है। आज तो हमारे जिस छोटेसे शहरमें बाघों के जैसे मारे जम रहे हैं कि जिस महुआके लिये पूज्य बापूजीने जितने असंख्य कामोंके बीच भी सतत चिंता रखी थी उसके लिये आज यह अेक बड़ा प्रश्न हो गया है कि बाघों के मारोंको छोड़कर शहरकी यह शर्म मिटायी जायगी या नहीं?